जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

अंक 9 मार्च 2018

युद्धपोत
पेज...07

पनडुब्बी
पेज...17

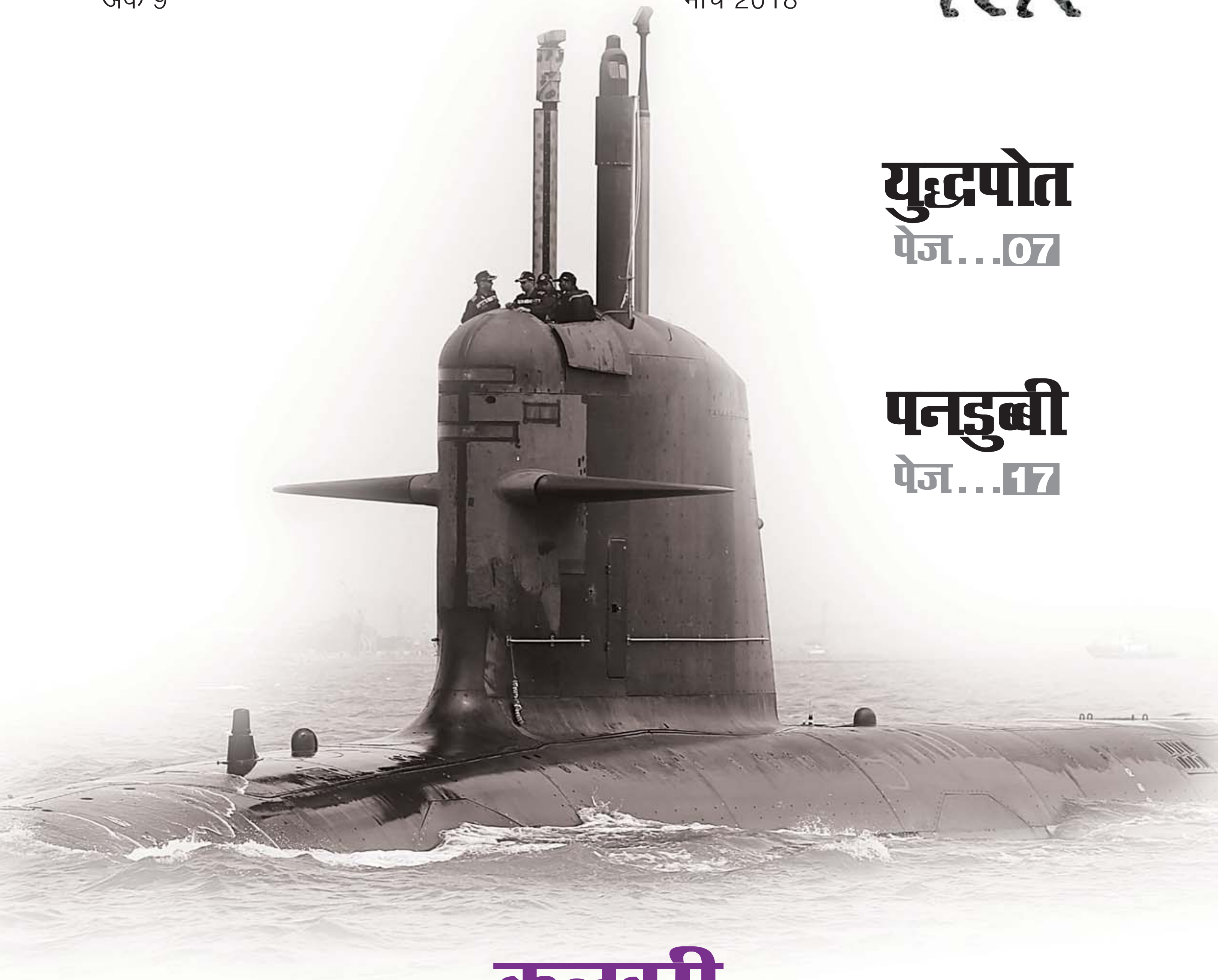

कलवरी

एमडीएल द्वारा निर्मित राष्ट्र की सर्वश्रेष्ठ पनडुब्बी

आईएनएस कलवरी की कमीशनिंग करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री श्री देवेंद्र फडनविस, नौसेना प्रमुख (पश्चिम) एडमिरल सुनील लांबा, माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कमोडोर राकेश आनन्द

7 दिसंबर '17 को आयोजित (SCOPE) कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य अतिथि कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर, युवा एवं खेल और सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री से एमडीएल की राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' को 'सर्वश्रेष्ठ गृहपत्रिका' के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संतोष कुमार मल्लिक, मप्र (मासं), श्री श्रीनिवास सिन्हा, उमप्र (मासं एवं राभा) तथा पीडी सिद्दीकी, सप्र (राजभाषा)

जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

संरक्षक

कमोडोर राकेश आनन्द, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

मुख्य परामर्शदाता

श्री संतोष कुमार मल्लिक, महाप्रबंधक/विभाग प्रमुख (मानव संसाधन)

संपादक मण्डल

श्री सोपान एस काबले, महाप्रबंधक (मा सं एवं क सं)
श्री श्रीनिवास सिन्हा, उप महाप्रबंधक (मा.सं - राभा)
श्री रामप्रीत यादव, सहायक प्रबंधक, राजभाषा
श्री पी डी सिद्दीकी, सहायक प्रबंधक, राजभाषा
सुश्री जयंतिका मुखर्जी, वरिष्ठ राजभाषा अनुवादक

मुद्रक

न्यू जैक प्रिंटिंग प्रेस प्रा. लि.

बी-5/130, मित्तल इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल नाका,
अंधेरी-कुर्ला रोड, मुंबई - 400 059
फोन नं. +91-22-67721000

प्रकाशक

राजभाषा अनुभाग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड
माझडॉक हाउस, दूसरी मंजिल, डॉकयार्ड रोड, मुंबई - 400 010
फोन नं. +91-22-23710456

विषय-सूची

प्रस्तावना... 06

स्टील्थ युद्धपोत (पी17ए) - *रामप्रीत एच यादव*... 07

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना - *राजेश हि आंबवाड*.................................... 10

पी15 ब्रावो - *सौमित्र मिश्रा*... 12

कोशिश - *सत्यनारायण प्रधान*.. 16

पनडुब्बी - *पी डी सिद्दीकी*.. 17

करुणा का कर्ज - *श्रीमती दिव्या डी वैती*... 21

एमडीएल में बुनियादी सुविधाओं का विकास - *रामाश्रय यादव*............................ 22

तेनालीराम की चतुराई - *नीलेश बैकर*.. 26

समाज सेवा में भी आगे - माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड - *रोहित पंड्या*............ 27

कौशल विकास योजना- *वी एस मोरे*.. 30

झलकियाँ.. 33

कंपनी में संरक्षा के उपाय - *ए के बडालिया*.. 41

मेक इन इंडिया - *श्री जगदीश पाणिग्रही*... 44

स्वच्छता - *नीतिन घाटगे*.. 50

एसक्यूसी विभाग की एनडीटी प्रक्रिया - *विरेश पांचाल*................................... 51

पब्लिक इंटरेस्ट डिस्क्लोजर एंड प्रोटेक्शन ऑफ इनफोरमर्स रिजोलुशन एवं व्हिसिल ब्लोअर 54

हश्र गाँधी की अहिंसा का - *मंताज अंसारी*.. 55

स्वच्छ गंगा - *सिमनलाल आर्य*... 56

पंडित दीनदयाल उपाध्याय - *एस के दलाल*... 58

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ - *मंजीत सिंह*... 62

निंदक नियरे राखिए - *जसबिंदर सिंह*.. 63

विश्व की कुछ रोचक जानकारियाँ - *सुधीर दिवेकर*.. 64

पहेलियाँ- *रिज़वान बसरी*.. 65

शंकरदास केसरीलाल 'शैलेंद्र' - *तपन मंडल*.. 66

भूटान की अनुपम यात्रा - *जयंतिका मुखर्जी*.. 69

स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं पर्यावरण (एचएससी) - *डॉ साधना कोली*............................ 71

इस पत्रिका में दिये गये लेखकों के विचार से सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...

प्रिय मान्यवर,

राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' के 9वें अंक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हमारी पत्रिका को कई वर्षो से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई (TOLIC) द्वारा श्रेष्ठ गृहपत्रिका का प्रथम पुरस्कार देकर सम्मानित किया जा रहा है। मुझे इस बात का गर्व है, कि यह पत्रिका हर कसौटी पर खरी उतरती है। इस पत्रिका को इतना आकर्षक, मनोरम एवं पठनीय बनाने के लिए इसमें सम्मिलित सभी कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।

राजभाषा पत्रिका का 8वां अंक विषयवस्तु पर आधारित था जिसमें हमने स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और उनकी देशभक्ति का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया था। यह स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि थी जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था।

इस अंक में एमडीएल के मुख्य उत्पाद युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माण के साथ स्वच्छता, स्वास्थ्य, सीएसआर तथा सरकार की अनेक योजनाओं/कार्यक्रमों एवं ज्ञानवर्धक सूचनाओं को समाहित करने का प्रयास किया गया है।

एमडीएल राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' के 9वें अंक को पठनीय एवं रुचिकर बनाने के लिए मैं राजभाषा अनुभाग की सराहना करता हूँ।

शुभ कामनाओं सहित...

कमोडोर राकेश आनन्द, भानौ (नि.)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश

निदेशक के रूप में पदभार संभालने के पश्चात, एमडीएल गृह पत्रिका 'जलतरंग' में यह मेरा पहला प्रकाशन है। हिन्दी और हिन्दी से जुड़े कार्यक्रमों से मेरा साथ कई वर्षों का है परन्तु पत्रिका प्रकाशन से मैं पहली बार रु-ब-रु हो रहा हूँ। वैसे तो माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका कई बुलंदियों को छू चुकी है जिसमें 2015 का राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार और 2016 में राजभाषा कीर्ति द्वितीय पुरस्कार प्राप्त होने का गौरव प्राप्त है।

हमारी कंपनी के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी मिलजुल कर कार्य करते हैं। यह कार्य जलतरंग में प्रकाशित विविध लेखों के जरिए भी देखा जा सकता है। यह राजभाषा अनुभाग के कठोर परिश्रम का ही फल है कि माझगांव डॉक के राजभाषा गृहपत्रिका 'जलतरंग' को मुंबई टॉलिक का प्रथम पुरस्कार 2014 से 2017 तक निरंतर मिलता रहा है और मेरी कामना है कि इसके आगे भी पुरस्कार इसी तरह से मिलते रहें।

पत्रिका में कंपनी से संबंधित उत्पाद लेख के अलावा कई तरह की मनोरंजक सामग्री ने भी पत्रिका को पठनीय और जानकारी से सम्पन्न बनाया है। हर बार की तरह इस बार भी कंपनी के अधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग से पत्रिका का आवरण आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक है।

आशा करता हूँ कि कंपनी के सभी कर्मचारियों का प्रयास सफल होगा और 'जलतरंग' की गुणवत्ता में निरंतर प्रगति होती रहेगी।

कमोडोर टी वी थॉमस भानौ (नि.)
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक)

महाप्रबंधक (मानव संसाधन) का संदेश

माझगांव डॉक राजभाषा गृहपत्रिका 'जलतरंग' का प्रकाशन अर्धवार्षिक रूप में होता है। इसका एक अंक विषयवस्तु परक होता है तथा दूसरा अंक कंपनी के उत्पाद से जुड़ा होता है। हमारी हमेशा से यह कोशिश रही है कि जलतरंग को और अधिक उन्नत बनाए और पाठकों के रुचि और तत्कालीन गतिविधियों से जुड़े लेख प्रस्तुत करते रहें। मेरे एमडीएल से जुड़ने के बाद यह जलतरंग का दूसरा प्रकाशन है और मुझे इस बात की खुशी है कि मैं भी इस पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हूँ। इसकी प्रगति और प्रचार में कंपनी के सभी कर्मचारियों का योगदान सराहनीय है।

पत्र एवं पत्रिकाएं हिंदी के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम हैं तथा हिंदी भाषा हमारी भारतीय संस्कृति से जुड़ी है। भारत के अधिकतम लोगों द्वारा बोली एवं समझी जानी वाली भाषा हिंदी अब विश्व की भाषा बनने की प्रगति पर है।

जलतरंग के 9वें अंक में कंपनी से जुड़े सुंदर लेख और रोचक जानकारियों के अलावा केंद्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न योजनाओं को भी यथोचित स्थान दिया गया है जिसमें कौशल भारत, मेक इन इण्डिया, बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ, सीएसआर आदि शामिल हैं।

मुझे आशा है कि हर बार की तरह इस बार भी पत्रिका को आप सभी का प्यार और सराहना मिलेगी।

संतोष कुमार मल्लिक
महाप्रबंधक/विभाग प्रमुख (मानव संसाधन)

प्रस्तावना

विगत 244 वर्षों से माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड विभिन्न स्वामियों के अधीन विकास करते हुए तथा राजनीतिक, आर्थिक हालातों से जूझते हुए आज इस मुकाम पर पहुंचा है और राष्ट्र के पोत निर्माता होने का गौरव प्राप्त किया है। राजभाषा के विकास पथ पर भी कंपनी ने अपना मुकाम बनाया है जिसके कारण राष्ट्रीय स्तर के दो पुरस्कार राजभाषा विभाग से प्राप्त हुए हैं तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने पत्रिका तथा कार्यान्वयन के मामले में टालिक सदस्यों के बीच सफल प्रतियोगी के रूप में सम्मानित किया है।

राजभाषा देश की संस्कृति, सभ्यता तथा सार्वभौमिकता, बंधुत्व और संचार का माध्यम है। सभी के सहयोग से राजभाषा का निरंतर विकास हो रहा है।

कंपनी का उद्देश्य है कि देश और समाज से जुड़ी सामाजिक साहित्यिक विषयों से संबद्ध सूचनाओं को पत्रिका के माध्यम से अपने कर्मचारियों के अलावा आम जनता तक पहुँचने का प्रयास करें और कर्मचारियों की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करें।

9वें अंक से पहले के प्रत्येक अंक को सामयिक, अर्थपूर्ण सूचनापरक और कंपनी की मुख्य गतिविधियों पर केन्द्रित किया गया है।

माझगांव डॉक देश की समुद्री सीमाओं की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। यह अंक कंपनी के मुख्य उत्पादों, राष्ट्रीय योगदान तथा आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते पहल का परिचायक है।

एस एस कांबले
मप्र(मा सं एवं क सं)

स्टील्थ युद्धपोत (पी17ए)

रामप्रीत एच यादव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

यह परियोजना उन्नत 'स्टील्थ युद्धपोत' निर्माण करने के लिए है। इसके पहले परियोजना-17 के अंतर्गत शिवालिक श्रेणी के स्टील्थ युद्धपोत निर्मित हुए हैं। यह परियोजना उसकी अनुवर्ती है। इसके लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर 20 फरवरी 2015 को किया गया। इस परियोजना के अंतर्गत 07 युद्धपोतों का निर्माण करना है जिसमें से 04 का निर्माण माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड द्वारा तथा 03 युद्धपोतों का निर्माण गार्डनरीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स कोलकाता में एमडीएल के मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

एकीकृत निर्माण परिकल्पना

परियोजना 17-ए की निर्माण प्रक्रिया अग्रणी युद्धपोत निर्माण की पुरानी परिकल्पना से बिलकुल अलग है। इसमें एकीकृत निर्माण की आधुनिक प्रौद्योगिकी को पहली बार अपनाया गया है।

पहले के पी-17 (शिवालिक श्रेणी पोतों) का निर्माण पारंपरिक निर्माण संकल्पना पर आधारित था जिसमें पोत का हल और संरचना का निर्माण कर स्लिप-वे पर खड़ा किया जाता था और उसके पश्चात उपकरणों, प्रणालियों, पाइपिंग, केबिलिंग इत्यादि की बाह्यसज्जा की जाती थी और जलावतरण से पहले बर्थ पर तैरने की स्थिति में लाया जाता था। यह क्रमिक ढंग से पूरी की जाती थी।

एकीकृत निर्माण परिकल्पना परिवर्तनकारी निर्माण रणनीति पर आधारित है। जो प्रत्येक पोत से संबन्धित निर्माण योजना के लिए है और इसका मुख्य लक्ष्य पैरालिजम कांसेप्ट के माध्यम से सम्पूर्ण निर्माण अवधि को कम करना है।

एकीकृत निर्माण परिकल्पना में प्री- आउटफिटेड माडुल्स अथवा ब्लॉक उपकरण सहित, सिस्टम, पाइपिंग, वेंट ट्रकिंग इत्यादि शामिल होती है जो फैब्रिकेटेड हल और स्ट्रकचरल ब्लॉकस के अंदर निश्चित स्थान पर कार्यशालाओं में प्रतिष्ठापित होता है। और इसके पश्चात एकीकरण/ बटनिग स्लिप-वे अथवा ड्राई डॉक पर किया जाता है। एमडीएल ने पहले ही अपनी बुनियादी सुविधाओं का संवर्धन किया है जैसे माडुलर वर्कशॉप सहित रिट्रैक्टेबल रूफ और गोलीएथ क्रेन स्थापित की गई है जो आईसी कन्सेप्ट के लिए उपयुक्त है।

आईसी कन्सेप्ट विभिन्न माडुलर/ब्लाक्स समानान्तर संरचना और निर्माण की आउटसोर्सिंग करने में भी सुविधा प्रदान करता है चाहे वह एक इकाई के रूप में कहीं और या इस शिपबिल्डिंग यार्ड में निर्मित हो रहा हो।

नो हाउ प्रोवाइडर

एमडीएल ने इस संबंध में एक अनुबंध पर इटली की कंपनी मेसर्स फिन्कैटीयरी के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किया है। जो (केएचपी) के माध्यम से एमडीएल की वर्तमान उत्पादन प्रक्रिया और प्रणालियों का अध्ययन करेगी और परिवर्तन के लिए सुझाव देगी जो पी-17ए पोतों के लिए आईसी कंसेप्ट हेतु उचित होगी।

पीडीएम/पीएलएम आईसी परिकल्पना इसकी आवश्यकता के कारण परियोजना प्रबंधन रणनीति और उत्पाद डाटा प्रबंधन प्रोजेक्ट लाइफ साइकल मैनेजमेंट सालुशन के साथ युक्त समायोजन पर विचार करती है। जिससे कि यार्ड के विभिन्न आईटी सुविधाओं और 3डी सीएडी एसएपी और परियोजना प्रबंधन टूल्स जैसे प्राइमवेरा अथवा एमएस परियोजना के साथ एकीकृत जहाज निर्माण कार्यक्रम विचार पर किया जा सके।

कील लेईंग समारोह में मुख्य अतिथि वाईस एडमिरल डीएम देशपांडे, एवीएसएम, वीएसएम, सीडबल्यूपी एवं ए

उपरोक्त सभी युक्तियों से परियोजना पी- 17ए निष्पादन में अति नवीनतम प्रौद्योगिकी का उपयोग होगा जिसके कारण समय पर सुपुर्दगी करना संभव होगा साथ ही निर्माण अवधि में कमी आएगी जो अभी विश्व के कुछ उन्नत शिपयार्डों में ही होता है।

वर्तमान स्थिति

इस श्रेणी के पहले पोत यार्ड- 12651 का उत्पादन 16 फरवरी 2017 से रियर एडमिरल ए. के. सक्सेना, एनएम, डीजीएनडी के संरक्षण में, रक्षा मंत्रालय (नौसेना) के, समेकित मुख्यालय नई दिल्ली से आरंभ हुआ। उत्पादन आरंभ होने के 10 माह के अंदर ही एक अन्य पोत का महत्वपूर्ण पड़ाव पार हुआ जिसमें यार्ड -12651 की कील लेईंग इसके प्रथम ब्लॉक ए2के एक्सबी के साथ इसकी तीन इकाइयों, सेंटर, पोर्ट और स्टारबोर्ड, एकीकृत करके एक साथ प्री-आउटफिटटेड पाइपों, डेक फिटिंग और कुछ हल आउट फिट एलीमेंट को मोडुयल शॉप में दिनांक 28 दिसंबर 2017 में साउथ यार्ड के स्लिप-वे नंबर 2 में रखा गया। कील लेईंग का महत्वपूर्ण कार्य रक्षा मंत्रालय (नौसेना), के नई दिल्ली स्थित एकीकृत मुख्यालय के वाईस एडमिरल डीएम देशपांडे, एवीएसएम, वीएसएम, सीडबल्यूपी एवं ए के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

पहले पोत यार्ड 12651 का जलावतरण नवंबर 2019 में निर्धारित है और तत्पश्चात बर्थ में शेष बाह्यसज्जा, विभिन्न सिस्टम और उपकरण का निरीक्षण और परीक्षण, कंटैक्टर सी ट्राइल (सीएसटी) और अंतिम मशीनरी ट्राइल(एफ़एमटी) किया जाएगा और सभी परीक्षण पूर्ण होने पर; पोत की सुपुर्दगी अगस्त 2022 में भारतीय नौसेना में की जाएगी।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द (नि), के मार्गदर्शन में दिनांक 27 फरवरी 2018 को इसी श्रेणी के दूसरे पोत यार्ड 12652 का उत्पादन आरंभ किया गया।

दूसरे, तीसरे और चौथे पोत के उत्पादन की शुरुआत एक वर्ष के अंतराल पर किया जाएगा जैसे फरवरी 2018, फरवरी 2019 और फरवरी 2020। (प्रथम पोत का उत्पादन फरवरी 2017) से आरंभ हुआ है।

निर्माण अवधि के संबंध में विचार करते हुए, दूसरे पोत की योजनाबद्ध सुपुर्दगी पहले पोत की सुपुर्दगी (अगस्त 2022) के 6 महीने बाद यानि फरवरी 2023 में होगी और तीसरे और चौथे पोत की योजनाबद्ध सुपुर्दगी अलग-अलग फरवरी 2024 और फरवरी 2025 में होगी।

मुख्य विशेषताएँ

पी17-ए का गहन रूपांकन किया गया है जिसमें पोत की विस्थापन क्षमता 6670 टन है इसकी क्रूसिंग गति 16 से 18 नॉट और अधिकतम गति 28 नॉट प्राप्त करने की क्षमता है। परियोजना 17-ए का हल पूर्व परियोजना-17 के समकक्ष जियो-सिमीट्रि कल्ली (जीओसीम) से 4.54% बड़ा है। इसके अतिरिक्त बीमभी बड़ा है और इसमें परियोजना-17 की तरह हल माउउंटेड सोनार डोम के स्थान पर बो-माउउंटेड सोनार डोम फिट किया जाएगा। परियोजना 17ए श्रेणी के युद्धपोत में अत्याधुनिक आयुध और सेंसर सूट फिट किए जाऐगे जिसमें परियोजना-17 के मुकाबले में 'स्लीक और स्टील्थ' विशेषताएँ होंगी।

28 दिसंबर 2017 को पहले पोत यार्ड 12651 की कील लेईंग के अवसर पर पूजा करते हुए सीएमडी

कील लेईंग समारोह के उपरांत मुख्य अतिथि वाईस एडमिरल डीएम देशपांडे, के साथ सीएमडी, निदेशक (वित्त), सीवीओ और अन्य वरिष्ठ अधिकारी

मुख्य प्रोपल्शन

पोत के मुख्य प्रोपल्शन का विन्यास और क्रम अपने मूल श्रेणी के समान है इसमें टू कंबाइंड डीजल अथवा गैस मुख्य प्रोपल्शन संयंत्र लगाए गए हैं जिसमें प्रत्येक डीजल इंजिन और गैस टर्बाइन में एक कंट्रोलेबल पिच प्रोपेल्लार है। एक ट्विन इनपुट-सिंगल आउटपुट सीओडीओजी रिडक्शन गियर बॉक्स के माध्यम से चलाने के लिए स्थापित किया गया है। पी17ए श्रेणी के पोत में गैस टर्बाइन (एलएम 2500 आईईसी) रिडक्शन गियर बॉक्स, शाफ्टिंग और सीपीपी आइडेंटिकल होगा जो मूल श्रेणी पी17 के समान है। पी17-ए का मुख्य प्रोपल्शन डीजल इंजिन दूसरे कंपनी का होगा तथा पावर रेटिंग/ इंजिन की गति वर्तमान श्रेणी के समान होगी। इस श्रेणी के पोत में 01 एमडबल्यू रेटिंग के चार डीजल एल्टर्नेटर भी लगाए जाएंगे।

उन्नत प्रणलियां

परियोजना 17- ए में निम्न नवीनतम प्रौद्योगिकी प्रणालियाँ होगी:

- इंटीग्रेटेड प्लेटफ़ार्म मैनेजमेंट सिस्टम
- इंटीग्रेटेड ब्रिज सिस्टम (आईबीएस) ऑन एन इंडिपेंडेट नेटवर्क
- कॉमबैट मैनेजमेंट सिस्टम (सीएमएस) ऑन एनइंडिपेंडेट नेटवर्क
- एड्वान्स कम्पोजीट कम्यूनिकेशन् सूट(एसीसीएस)
- शिप्स डाटाबेस नेटवर्क(एसडीएन)

मुख्य आयुध एवं सेंसर

- एंटी एयर
- एंटी सरफेस
- सरफेस सर्विलेंस राडार (एसएसआर)
- सरफेस टु सरफेस मिसाइल कम्प्लेक्स (एसएसएम)
- 127 एमएम एमआर गन
- 12.7 एमएम फोर्स प्रोटेक्शन् गन(एफ़पीजी)
- मल्टी फंक्शन् राडार(एमएफ़एसटीएआर)
- एयर अर्लि वार्निंग (एईडबल्यू) रेडार
- लॉन्ग रेंज सरफेस टु एयर मिसाइल(एलआरएसएएम)
- क्लोज इन वेपन सिस्टम (सीआईडबल्यूएस)
- चैफ सिस्टम
- एंटी सबमैरिन वारफेयर(एएसडबल्यू)
- एयर लांचड टॉरपीडो
- डेप्थ चार्ज
- ट्रिपल ट्यूब टॉरपीडो लॉचर
- इंडिजिनियस रॉकेट लॉचर्स (आईआरएल)
- इंटीग्रेटेड एएसडबल्यू फायर कंट्रोल सिस्टम(आईएसीएस)
- सोनोबायस
- आईएडीएस कंपाइजिंग टोंड ऐरे सोनार सहित(आईएसीएस)
- बो-माउंडेड एचयूएमएसए एनजी सोनार सुविधा

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना

राजेश हिंदुराव आंबवाड
प्र.(भंडार-पूर्व खंड)

"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना", स्वास्थ्य मंत्रालय और परिवार कल्याण मंत्रालय एवं मानव संसाधन विकास की एक संयुक्त पहल के रूप में समन्वित और अभिसरित प्रयासों के अंतर्गत बालिकाओं को संरक्षण और सशक्त करने के लिए "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना" की शुरुआत 22 जनवरी, 2015 को की गई है।

भारतीय समाज में छोटी लड़कियों पर बहुत सारे प्रतिबंध किये जाते हैं जो उनकी वृद्धि और विकास में रोड़ा बने हुए हैं। यह योजना छोटी लड़कियों के खिलाफ होने वाले अत्याचार, असुरक्षा, लैंगिक भेदभाव आदि को रोकेगी। 18वीं सदी के लोगों की बजाय वर्तमान समय में महिलाओं के प्रति लोगों की मानसिकता ज्यादा घटिया होती जा रही है। इस कार्यक्रम की शुरुआत करते समय प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतीय लोगों की यह सामान्य धारणा है कि लड़कियाँ अपने माता-पिता के बजाय पराया धन होती हैं। अभिवावक सोचते है कि लड़के तो उनके अपने होते हैं जो बुढ़ापे में उनकी देखभाल करेंगे जबकि लड़कियाँ तो दूसरे घर जाकर अपने ससुराल वालों की सेवा करती हैं। छोटी लड़कियों की स्थिति 20वीं सदी के अंतिम दशक में बहुत खराब हो चुकी थी क्योंकि कन्या भ्रूण हत्या एक बड़े पैमाने पर अपना पैर पसार रही थी। उच्च तकनीक के द्वारा लिंग का पता लगाकर जन्म से पहले ही लड़कियों को माँ के गर्भ में ही मार दिया जाता था। लड़कियों की संख्या को कम करने के लिये यह प्रथा प्रचलन में थी। साथ ही साथ परिवार एक लड़की की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहता था।

जन्म के बाद भी लड़कियों को कई तरह के भेदभाव से गुजरना पड़ता है जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, खान-पान, लड़कों के समान अधिकार आदि। समाज में दूसरी जरुरतें हैं जो लड़कियों को भी प्राप्त होनी चाहिये। हम कह सकते हैं कि महिलाओं को सशक्त करने के बजाय अशक्त किया जा रहा है। महिलाओं को सशक्त बनाने और जन्म से ही अधिकार देने के लिये सरकार ने इस योजना की शुरुआत किया है। महिलाओं के सशक्तिकरण से हर जगह प्रगति होगी, खासतौर से परिवार और समाज में। लड़कियों के लिये मानव की नकारात्मक पूर्वाग्रह को सकारात्मक बदलाव में परिवर्तित करने के लिये यह योजना एक रास्ता है। यह संभव है कि इस योजना से लड़कों और लड़कियों के प्रति भेदभाव खत्म हो जाये तथा कन्या भ्रूण हत्या का अन्त करने में यह मुख्य कड़ी साबित हो। इस योजना की शुरुआत करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने चिकित्सक बिरादरी को यह याद दिलाया कि चिकित्सा का पेशा लोगों को जीवन देने के लिये बना है न कि उन्हें खत्म करने के लिये।

लड़कियों के प्रति लोगों की विचारधारा में सकारात्मक बदलाव लाने के साथ ही यह योजना भारतीय समाज में लड़कियों की महत्ता की ओर भी इंगित करती है। भारतीय समाज में लड़कियों के प्रति लोगों की मानसिकता बहुत क्रूर हो चुकी है। लोगों का ऐसा मानना है कि लड़कियाँ पहले परिवार के लिये बोझ होती हैं और फिर पति के लिये तथा यह सिर्फ लेने के लिये होती है देने के लिये नहीं। हालाँकि यह सच नहीं है। दुनिया की लगभग आधी जनसंख्या महिलाओं की है इसलिये वह धरती पर जीवन के अस्तित्व के लिये आधी जिम्मेदार होती हैं। लड़कियों या महिलाओं को कम महत्व देने से धरती पर मानव समाज खतरे में पड़ सकता है क्योंकि महिलाएँ ही केवल प्रकृति में एक नए जीवन को ला सकती हैं, मानव को जन्म दे सकती हैं। लगातार प्रति लड़कों पर गिरते लड़कियों का अनुपात इस मुद्दे की चिंता को साफतौर पर दिखाता है। इसलिये, उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कराने के साथ ही छोटी बच्चियों की सुरक्षा पक्का करना, लड़कियों को बचाना, कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिये इस योजना की शुरुआत की गयी है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना भले ही आज सरकार द्वारा चलाई जा रही है लेकिन इस योजना में व्यक्तिगत प्रयास भी कम महत्त्व पूर्ण नहीं है। इसी कड़ी में एच. एन. मीणा जो भारतीय राजस्व सेवा के 2004 बैच के अधिकारी हैं और उनकी पत्नी डॉ हेमलता मीणा पिछले 8 वर्षों से कन्या भ्रूण हत्या व महिलाओं के अधिकारों के लिए देश भर में आंदोलन चला रहे हैं।

इनके कार्यक्रम की एक झलक

हिंदुस्तान की आजादी के बाद पहली जनगणना सन् 1951 के आंकड़ो के अनुसार प्रति हज़ार पुरुषो पर 946 महिलाएं थीं। अफसोस है कि आजादी के दशकों बाद भी यह आंकड़ा प्रति हज़ार पुरुषों पर 940 महिलाओं पर ही सिमट के रह गया है। देश की कुल जनसंख्या 121 करोड़ में सेदेश में सन् 2011 की जनगणना के अनुसार 3.73 करोड़ महिलाएं कम हैं। देश में 0-6 आयुवर्ग में लिंगानुपात सन् 1991 की जनगणना के आकड़ों के अनुसार 945 था जो घटकर सन् 2001 की जनगणना में 927 पर आ गया और यह सन् 2011 की जनगणना के आकड़ों के अनुसार 918 पर आ गया। ये आंकड़े देश में लिंगानुपात की विषम होती चिंताजनक स्थिति को दर्शाते हैं। यदि हालात यही रहे तो आने वाले वर्षो में स्थिति और चिंताजनक हो सकती है। देश में स्त्री पुरुष जनसंख्या अभी भी बराबरी पर नहीं है। भारत सरकार और राज्य सरकारों ने अपने अपने स्तर पर इस स्थिति से निपटने के लिए कई प्रकार से प्रयास किये हैं। लेकिन पिछले 20 वर्षो का देश के लिंगानुपात में महिलाओं की संख्या कम होने के कारण और उनसे निपटने के अब तक के किये गए सम्मिलित प्रयासों का श्री एच एन मीणा का अध्ययन/अनुभव यह कहता है कि जब तक हम सब इस घृणित बुराई के खिलाफ खड़े नहीं होंगे इससे मुक्ति संभव प्रतीत नहीं होती है। इसके लिए हमें देश भर में आंदोलन चलाने की जरूरत है। देश की सरकार, बहुत सारे सरकारी, गैर सरकारी संगठन और लोगो के व्यक्तिगत प्रयास जारी है। कई वर्षो से अपनी क्षमतानुसार मीणा दम्पत्ति, किसी से कोई चंदा मांगे बिना सिर्फ अपने वेतन में से एक हिस्सा खर्च करके बेटियों को बचाने की दिशा में लोगो को जागरूक करने की कोशिश कर रहे हैं। विभिन्न रूपों में कई वर्षो में अब तक इन्होंने इस कार्यक्रम को बिना किसी से वित्तीय सहयोग के चलाया है। मीणा दंपति कहते हैं कि बेटियो को बचाने के लिए जब तक देश से यह लिंगानुपात की खाई मिट नहीं जाती उनका हर स्तर पर यह प्रयास सरकारी नौकरी की व्यस्तताओं के बीच भी रविवार आदि छुट्टी के दिनों में जारी रहेगा। आजादी के बाद भारत ने सभी क्षेत्रों में खूब विकास किया है। शिक्षा का क्षेत्र हो चाहे स्वास्थ्य का, चाहे विज्ञान का हो, अर्थव्यवस्था का हो, लेकिन दुर्भाग्य से स्त्री -पुरुष के लिंगानुपात को बराबरी पर नहीं ला पाये हैं। श्री एच एन मीणा को लगता है यह अंतर तब तक नहीं भरा जा सकता है जब तक कि स्त्रियों के प्रति लोगों की सोच में आमूल परिवर्तन नहीं आ जाता है। इसके लिए हमें एक ऐसे आंदोलन की जरूरत है जो लोगो की सोच में एक हद तक ऐसा परिवर्तन ला पाये जिससे आईने में हमें लड़का-लड़की में भेद नज़र नहीं आये। इसी सामाजिक सोच में परिवर्तन की दिशा में एक ईमानदार और अभिनव प्रयास बेटियों को बचाने की दिशा में कर रहे हैं। मीणा दंपति "पहियों पर मुहिम" चलाकर पहले चरण में 10000 हज़ार लंबी दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्गो के चलने वाले ट्रकों पर बेटी बचाने व बेटी पढ़ाने का सन्देश फैला रहे हैं। यह सब भी बिना किसी लोभ और लालच तथा बिना किसी संस्था के सहयोग से कर रहें है। देश की बेटियों के नाम, सिर्फ एक ही सच्चाई हो - कि हर बेटी का जीवन बचना चाहिए। उसे माँ के गर्भ में नहीं मारा जाना चाहियें।

जय हिंद!

पी15 ब्रावो

सौमित्र मिश्रा
प्र (पी15बी)

जहाज निर्माण परिचय - एमडीएल का राष्ट्रीयकरण 14 मई 1960 को किया गया। तत्पश्चात देश की समुद्री सीमाओं की सुरक्षा के लिए नौसेना का विकास आरंभ हुआ। एमडीएल ने रक्षा एवं वाणिज्यिक दोनों क्षेत्रों के लिए विभिन्न प्रकार के पोतों का निर्माण किया है। कम्पनी द्वारा निर्मित पहला युद्ध पोत लिएडर श्रेणी युद्धपोत आईएनएस नीलगिरी था इसका जलावतरण अक्टूबर 1968 में हुआ और वर्ष 1972 में सुपुर्दगी भारतीय नौसेना को की गई। अगले 9 वर्षों के दौरान माझगांव डॉक ने इस श्रेणी के 05 और युद्धपोत नीलगिरी, हिमगिरी, उदयगिरी, दूनागिरी, तारागिरी और विंध्यागिरी का निर्माण कर भारतीय नौसेना के मुख्य सम्बल 1970 और 1980 के दौरान बनाया।

जैसे ही लिएडर श्रेणी पोतों का निर्माण पूर्ण होने के करीब आया। भारतीय नौसेना ने नई पीढ़ी के युद्धपोत का रूपांकन विकसित किया। माझगांव डॉक नये युद्धपोतों के सम्बंध में सभी उत्पादन आरेखों को तैयार करने के लिए जिम्मेदार था। लिएडर श्रेणी से अलग, नया युद्धपोत संकल्पना रूपांकन और निष्पादन भारतीय था।

युद्धपोत लिएडर श्रेणी की तुलना में बड़ा था और इसकी विस्थापन क्षमता लगभग 25% अधिक थी। साथ ही इस पर दो बड़े हेलीकाप्टर खड़े किये जा सकते थे। इस नई श्रेणी का नाम गोदावरी श्रेणी रखा गया। इस श्रेणी के पहले पोत आईएनएस गोदावरी का जलावतरण मई 1980 में किया गया और सुपुर्दगी 1985 में की गई।

माझगांव डॉक ने दो कारवेट्स का निर्माण भी भारतीय नौसेना के लिए किया है। कारवेट्स छोटे युद्धपोत हैं इनकी विस्थापन क्षमता लगभग 1500टन होती है। इस श्रेणी के पहले पोत 'आईएनएस खुकरी' की कमीशनिग अगस्त 1989 में की गई और दूसरे 'आईएनएस कुठार' का जून 1990 में सम्पन हुई।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड भारत सरकार का अग्रणी डीपीएसयू शिपयार्ड है जो वर्तमान समय में भारतीय नौसेना तथा निर्यात बाजार दोनों के लिए प्रतिष्ठित परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है। एमडीएल भारतीय नौसेना के लिए स्टील्थ युद्धपोत विध्वंसक और पनडुब्बियों का निर्माण कर रहा है।

लिएंडर श्रेणी युद्धपोत आईएनएस नीलगिरी

आईएनएस गोदावरी

कारवेट खुकरी

नौसेना पोतों और वाणिज्यिक पोतों की निरंतर बढ़ती मांग को पूरा करने के साथ कठोर गुणवत्ता एवं सुपुर्दगी कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए एमडीएल ने बड़ी मात्रा में कार्य का आउटसोर्सिंग किया है।

एमडीएल के पास भरोसे मंद कार्यो की आउटसोर्सिंग के लिए स्पष्ट रूप से लिखित और पारदर्शी क्रय प्रक्रिया है जो स्थापित ठेकेदारों की सक्रिय सहायता से पूरा की जाती है। तथापि एमडीएल इसके आगे अपने विस्तृत विक्रेता आधार को विस्तारित एवं स्थापित करने की अपेक्षा करता है। विशेष रूप से संरक्षा पहलुओं पर एमडीएल अपने कार्मिकों को प्रशिक्षण देने की उचित व्यवस्था विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से करेगा।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) भारत का यह शिपयार्ड रक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत है। इसका मुख्य उद्देश्य युद्धपोत एवं पनडुब्बी का निर्माण है। एमडीएल भारत सरकार द्वारा संचालित स्टार्ट अप इंडिया पहल का एक अंग बनने के लिए प्रतिबद्ध है। जिससे उद्दमशीलता को प्रोत्साहित किया जाय और नवीनता को विकसित किया जाय।

पहले चरण के रूप में, एमडीएल ने मदों/सेवाओं की पहचान किया है जो स्टार्ट अप को गति दे सकते हैं जिसके माध्यम से कोई भी अपना व्यवसाय शुरू कर सकता है एवं एमडीएल के आपूर्ति चेन का अंग बन सकता है। इसके द्वारा, स्टार्ट-अप को पहले अनुभव के सम्बंध में निर्धारित मानकों को पूरा करने की आवश्यकता नहीं हैं पहले एमडीएल निविदा में भाग लेने के लिए टर्न ओवर की पूर्व शर्त थी जिसमे आंशिक मात्राएं उनके लिए आरक्षित रहती थीं यह मानते हुए कि अन्य वाणिज्यिक तकनीकी एवं गुणवत्ता पैरामीटर वे पूरा कर रहे हों।

माझगांव डॉक ने भारतीय नौसेना के लिए तेज और शक्तिशाली मिसाइल बोट का निर्माण भी किया है। तीन मिसाइल बोट आईएनएस विभूति, आईएनएस विपुल और आईएनएस नाशक की सुपुर्दगी भारतीय नौसेना में वर्ष 1991 एवं 1994 के बीच की गई। चौथे बोट आईएनएस प्रबल का जलावतरण शिपयार्ड में वर्ष 2000 में किया गया और सुपुर्दगी कार्य 2002 में पूरा हुआ।

माझगांव डॉक ने तीन शिवालिक श्रेणी युद्धपोतों की सुपुर्दगी भारतीय नौसेना में वर्ष 2010 से 2012 के दौरान किया है इनका नाम क्रमशः आईएनएस शिवालिक, सहयाद्रि और आईएनएस सतपुड़ा था। पी17 युद्धपोत बहुभूमिका वाले युद्धपोत हैं। भारत में पहली बार ऐसे पोतों का निर्माण किया गया है जिनमें स्टील्थ विशेषताए हैं। हालही में कम्पनी ने पी15ए श्रेणी के पोत का निर्माण और सुपुर्दगी भारतीय नौसेना में 2014 और 2016 के दौरान किया है। इनके नाम क्रमशः आईएनएस कोलकाता, आईएनएस कोची तथा आईएनएस चेन्नई रखा गया है। पी15ए विध्वंसकों की भूमिका बहु समुद्री खतरों की स्थिति में समुद्री नियंत्रण के लिए कार्यबल के साथ समन्वय करने का प्रयास करना है। पी15ए के विध्वंसक तट आधारित लक्ष्यों पर प्रहार करने में सक्षम हैं और दुश्मन के वायुयानों पनडुब्बियों और सतह के पोतों के विरुद्ध रक्षा प्रदान कर सकते हैं।

आजकल माझगांव डॉक पी15 विध्वंसक और पी17ए स्टील्थ युद्धपोत का निर्माण रक्षा मंत्रालय के माध्यम से भारतीय नौसेना के लिए कर रहा है। भारतीय नौसेना के लिए युद्धपोत के अलावा माझगांव डॉक ने तटरक्षक दल के लिए आफ़सोर पैट्रोल वेजल के एक श्रेणी का निर्माण भी किया है। इसके अंतर्गत 7 तटरक्षक पोतों का निर्माण किया गया। ये पोत आज तटरक्षक बेड़ा के मुख्य सम्बल हैं।

इनका निर्माण दिसम्बर 1983 से मार्च 1990 के दौरान पूरा किया गया। भारतीय तटरक्षक के अलावा सीमा सुरक्षा बल के लिए बार्डर आउट पोस्ट के निर्माण की ज़िम्मेदारी माझगांव डॉक ने पूरा किया है। बीओपी तैरते हुए पुलिस स्टेशन हैं। इसके प्रत्येक समूह में चार हाई स्पीड बोट शामिल हैं। एमडीएल ने ऐसे जलयानों का निर्माण और सुपुर्दगी किया है।

एमडीएल ने वाणिज्यिक क्षेत्रो के लिए बड़े स्तर पर उत्पाद विकसित किया है और विभिन्न पोतों का निर्माण किया है जिसमें बहुउद्देशीय सहायक जलयान, टग ड्रेजर, वाटर टैंकर, पैसेन्जर कम कार्गो वेजल, प्लोटिंग क्रेन्स के मोर्च पर दो बहुउद्देशीय सहायक जलयान का रूपांकन डीजल ईंधन, फ्रेश वाटर और टैंक कार्गो कैरीयर,

तटरक्षक पोत विक्रम

आरओवी आपरेशन और अजीमठ थ्रस्टर आपरेशन के लिए निर्मित कर विदेशी ग्राहकों के लिए सुपुर्दगी किया है।

एमडीएल गुणवत्तापूर्ण पोतों की समय पर सुपुर्दगी करने के लिए वचनबद्ध है। माझगांव डॉक 18वीं शताब्दी में एक लघु मरम्मत यार्ड से विकसित होते हुए आज देश का मुख्य रक्षा शिपयार्ड बना है जो भारतीय नौसेना की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है। इसके युद्धपोत निर्माण कार्यक्रम में पणडुब्बी शामिल है। एमडीएल की वर्तमान आर्डर बुक पोजीसन विश्व के सर्वोतम लोडेड शिपयार्ड की है।

पी15ए परियोजना के अंतर्गत तीन गाइडेड मिसाइल विध्वंसक का निर्माण किया गया है पहले पोत को आईएनएस कोलकाता नाम दिया गया है यह सबसे घातक युद्धपोत है जिसे भारतीय नौसेना में शामिल कर लिया गया है। आईएनएस चेन्नई पी15ए परियोजना के अंतर्गत तीसरा और आखिरी सबसे बड़ा पोत है।

आईएनएस कोलकाता की कमीशनिग 16 अगस्त 2014 को नौसेना में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया। आईएनएस कोची की कमीशनिग 30 सितंबर 2015 को माननीय रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रिकर द्वारा किया गया। आईएनएस चेन्नई की कमीशनिग

बीओपी

हर्षवर्धन

21 नवंबर 2016 को भारतीय नौसेना को की गई है। ये सभी विध्वंसक समुद्री सुरक्षा में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। आज तीनों 15ए श्रेणी विध्वंसक, भारतीय नौसेना के मुख्य संबल हैं।

आईएनएस कोलकाता, कोलकाता श्रेणी के तीन गाइडेड मिसाइल स्टील्थ विध्वंसक में प्रथम है। जहाज की लंबाई 163 मीटर तथा विस्थापन क्षमता 7500 टन है जो भारतीय नौसेना द्वारा संचालित सबसे बड़ा स्वदेशीकृत युद्धपोत और विध्वंसक है। यह भारत के पोत निर्माण प्रौद्योगिकी और क्षमता प्रदर्शन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह अपने पूर्ववर्ती विध्वंसकों से और अधिक वर्सेटाइल है।

कोलकाता श्रेणी जहाज आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण का जीता जागता उदाहरण है। 472 बड़े और लघु औद्योगिक सांझेदारों ने अपनी ओर से अनोखे ढंग से जहाज निर्माण में योगदान दिया है। यह स्वदेशीकृत प्रयास मूलतः भारतीय नौसेना और रक्षा उत्पादन विभाग के सक्रिय प्रयत्नों का ही सुफल है जिसके कारण यह कोशिश कामयाब हुई है।

परियोजना 15बी के अंतर्गत 04 विध्वंसकों के आदेश एमडीएल को प्राप्त हुए हैं और पहले दो पोतों का जलावतरण भी हो चुका है।

पी15बी परियोजना पी15ए रूपांकन का अनुवर्ती है। जिसके अंतर्गत चार युद्धपोतों का निर्माण हो रहा है। इस परियोजना के पहले युद्धपोत का जलावतरण 20 अप्रैल 2015 को किया गया जिसका नाम **आईएनएस विशाखापतनम** रखा गया है।

इस श्रेणी के दूसरे पोत **आईएनएस मोरमुगाओ** का जलावतरण सितंबर 17 सितंबर 2016 को किया गया। इनमें पी15ए में किए गए सभी प्रकार के परिष्करण को शामिल किया गया है।

इस श्रेणी के पोतों की भूमिका गहरे समुद्र में विविध प्रकार के खतरों को नियंत्रण करने के लिए कार्य दल के साथ समन्वय करना है।

दिल्ली श्रेणी विध्वंसक

ये स्टील्थ पोत वारफेयर आक्रमण करने में सक्षम होंगे जो किनारे पर स्थित लक्ष्यों को निशाना बना सकते हैं और दुश्मन के विमानों, पण्डुब्बियों और सतह पर स्थित पोतों के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं।

लक्ष्य

ये पोत 42 दिनों के लक्ष्य को पूरा करने में समर्थ हैं। इसमें प्रतिष्ठापित सभी मशीनरी, सेंसर और उपकरण अधिकतम निर्भरता और उक्त कथित दिनों के लक्ष्य को कायम रखने में सहायक होंगे। पोत का अंडर वाटर हल फार्म पी15ए के समान है। इसमें उपयोग स्टील डी40एस/डीएमआर-294ए श्रेणी का है।

पोत की विशेषताएँ

इस श्रेणी के पहले विध्वंसक पोत विशाखापत्तनम की लंबाई 163.2 मीटर, बीम 17.4 मीटर और विस्थापन क्षमता लगभग 7334 टन है। पोत की समुद्र में अधिकतम गति 30 नाट है। परिचालन के लिए पोत में 01 सीओ के साथ 51 अधिकारी तथा 260 नाविक कार्यरत रहेंगे। पोत का मुख्य प्रोपल्जन सिस्टम गैस और गैस टाईप (सीओजीएजी) के साथ 4 रिवर्सिबल आईपीएमस कोंपलाएण्ड से सुसज्जित है।

मोरमुगाओ की विशेषताएँ:

इस श्रेणी के दूसरे विध्वंसक पोत मोरमुगाओ की लंबाई 163.2 मीटर, बीम 17.4 मीटर और विस्थापन क्षमता लगभग 7330 टन है। पोत का समुद्र में अधिकतम गति 30 नाट है। इसकी चौड़ाई 17.4 मीटर की है और डिज़ाइन ड्रौट 5.05 मीटर (अधिकतम 6.5 मीटर) की है। परिचालन के लिए पोत में 01 सीओ के साथ 51 अधिकारी तथा 260 नाविक कार्यरत रहेंगे। पोत मुख्य प्रोपल्जन सिस्टम गैस और गैस टाईप(सीओजीएजी) के साथ 4 रिवर्सिबल आईपीएमस कोंपलाएण्ड से युक्त है।

अन्य मुख्य विशेषताएँ:

- हल के लिए स्वदेशीकृत स्टील (डीएमआर 249ए) का प्रयोग किया गया है।
- वर्चुअल रियालिटि पर लाईनआउट इंस्पेकशन हुआ है।
- चयनित क्षेत्रों में एलईडी लाइट की व्यवस्था की गई है।
- लॉबी और पैसेजों में 10/20 केवीए ट्रांसफारमर के स्थान पर 40 केवीए ट्रांसफारमर लगाया गया है।
- इंटीग्रेटेड ब्रीज सिस्टम, इंटीग्रेटेड कम्यूनिकेशन सूट एवं इंटीग्रेटेड प्लेटफॉर्म मैनेजमेंट सिस्टम को अपनाया गया है।
- हिट वेंटिलेशन और एयर कन्डीशनिंग के लिए टोटल एट्मोस्फियरिक कंट्रोल सिस्टम प्रारंभ किया गया है।

आईएनएस विशाखापत्तनम्

आईएनएस मोरमुगाओ का जलावतरण

कोशिश

सत्यनारायण प्रधान
उमप्र(मा स - अ)

(1)

तूफ़ान से जूझते चिड़िया आशियाना बनाने की कोशिश नहीं छोड़ती,
जिंदगी की तलाश में मछली अंडा देने नदी मुहाना को नहीं छोड़ती,
जीने की आस में चिड़िया मीलों दूर उड़ने की कोशिश नहीं छोड़ती,
मिलन की चाहत में नर मेंढक मादा को आवाज देने की कोशिश नहीं छोड़ता,
शिकारी शेर से बचते हिरण दूर भागने की कोशिश नहीं छोड़ता,
कोशिश करने वाले की कभी हार नहीं होती।

(2)

गिरते संभलते शिशु खड़े होने की कोशिश नहीं छोड़ता,
अपने प्यार को पाने की हर कोशिश प्रेमी नहीं छोड़ता,
घर को स्वर्ग बनाने की हर कोशिश स्त्री नहीं छोड़ती,
परिवार की हर ख्वाइशों को पूरा करने की कोशिश मां नहीं छोड़ती,
गुड़िया के आस में शिशु जिद करने की कोई कोशिश नहीं छोड़ती,
कोशिश करने वाले की कभी हार नहीं होती।

(3)

चालक यात्रियों को मंजिल तक पहुँचाने की कोशिश नहीं छोड़ता,
शिक्षक अपने छात्रों में निपुणता लाने की कोशिश नहीं छोड़ता,
विकलांग ऑलेम्पिक में विश्वविजेता होने की कोशिश नहीं छोड़ता,
नाविक आंधी में जहाज को समुंदर पार कराने की कोशिश नहीं छोड़ता,
मरीज बीमारियों से जूझते हुए जीने की कोई कोशिश नहीं छोड़ता,
कोशिश करने वाले की कभी हार नहीं होती।

(4)

चिकित्सक रोगी को निरोग बनाने की कोशिश नहीं छोड़ता,
किसान अच्छी फसल की चाहत में खेत जोतने की कोशिश नहीं छोड़ता,
मांझी नाव को तूफानी नदी से साहिल तक पहुंचाने की कोशिश नहीं छोड़ता
सिपाही देश की रक्षा के खातिर सीमा पार दुश्मन से लड़ने की कोशिश नहीं छोड़ता,
ईमानदार नागरिक लाख गलत कोशिशों के बावजूद अपने जमीर को नहीं छोड़ता,
कोशिश करने वाले की कभी हार नहीं होती।

पनडुब्बी

भारतीय नौसेना के परिपेक्ष्य में, अपने आप को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने की एक साकार पहल

पी डी सिद्दीकी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

अस्सी के दशक तक आते-आते भारतीय नौसेना को इस बात का एहसास होने लगा कि उस समय सैनिक संसाधनों में मौजूद कुल सबमैरीन सामरिक दृष्टि से पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए तत्कालीन भारत सरकार इस क्षेत्र में प्रयास करना आरंभ किया।

इसी कालावधि में अन्य विकसित देश जैसे- अमेरिका, रूस, जर्मनी, जापान एवं कोरिया आदि राष्ट्रों ने सबमैरीन निर्माण क्षेत्र में महारत ही नहीं हासिल कर लिया था अपितु दूसरे देशों को सबमैरीन निर्यात भी कर रहे थे। प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात एक दबाव बनने लगा था कि भारतीय सेनाओं को कैसे मजबूत किया जाए।

इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भारत सरकार ने जर्मनी के कील शहर में स्थित एच.डी.डबल्यू कंपनी को तकनीकी स्थानांतरण अनुबंध के अंतर्गत 4 सबमैरीन के निर्माण का ऑर्डर दिया। इस अनुबंध के अनुसार दो सबमैरीन के निर्माण का कार्य जर्मनी में एवं दो सबमैरीन का निर्माण भारत में किया जाना था और पूरी परियोजना का कार्यकाल सन 1986-91 के बीच रखा गया। जर्मनी ने प्रथम बोट एसएसके (हंटर किलर सबमैरिन) क्लास की शिशुमार श्रेणी की आई.एन.एस शिशुमार (S44) को 22 दिसम्बर 1986, को एवं 20 नवम्बर 1986 में द्वितीय बोट आई.एन.एस शंकुश (S45) को भारतीय नौसेना को सौंप दिया।

भारत में उस समय का सबसे उपयुक्त शिपयार्ड माझगांव डॉक लिमिटेड (अब माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड) था जो उस समय नौसेना के लिए युद्धपोत एवं विध्वंसक ऑफशोर प्लेटफार्म, टैंकर, बल्क कैरियर, सप्लाई वेसेल और पेट्रोल बोट बनाने में संलग्न था।

भारत में माझगांव डॉक लिमिटेड की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को देखते हुए तत्कालीन भारत की प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गाँधी ने 6 मई 1984 को अपने कर कमलों से ईस्ट यार्ड का उद्घाटन किया जो बाद में सबमैरीन यार्ड के नाम से प्रसिद्ध हो गया। आज इसे सबमैरीन डिविजन भी कहते हैं ।

नामपट्ट का उद्घाटन

सबमैरीन उत्पादन के क्रम में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने अपनी प्रथम पनडुब्बी शल्की (S46) यार्ड 11801 की लांचिंग प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गाँधी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सोनिया गाँधी की उपस्थित में सितंबर 1989 को किया। इसी पनडुब्बी को तत्कालीन रक्षामंत्री श्री शरद पवार जी द्वारा 7 फरवरी 1992 में नौसेना को सौंप दिया गया।

शिशुमार- शिशुमार श्रेणी की प्रथम सबमैरीन

शंकुश- शिशुमार श्रेणी की द्वितीय सबमैरीन

मार्च 1992 को द्वितीय पनडुब्बी शंकुल (S45) यार्ड 11802 का जलावतरण तत्कालीन उपराष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा एवं उनकी पत्नी श्रीमती विमला शर्मा के द्वारा किया गया और 8 मई 1994 को भारत के प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री नरसिंह राव ने भारतीय नौसेना को सौंप दिया।

भारत सरकार द्वारा वास्तव में कुल छः पनडुब्बी का ऑर्डर दिया गया था जिसमें दो पनडुब्बी माझगांव डॉक लिमिटेड को बनानी थी और दो पनडुब्बी जर्मनी द्वारा बनाया जाना था, किन्तु सन 1998 में पोखरण-2 परमाणु परीक्षण होने के कारण दो और सबमैरीन का मिलने वाला ऑर्डर निरस्त हो गया।

शल्की- शिशुमार श्रेणी की तीसरी सबमैरीन

इन दो सबमैरिन को माझगांव डॉक लिमिटेड में बनायें जाने की योजना थी।

शिशुमार श्रेणी के सबमैरिनों का एक संक्षिप्त विवरण (1986-1994)

पनडुब्बी का नाम	कोड	कंपनी का नाम	कमीशण्ड की तारीख	वर्तमान स्थिति
आई.एन.एस. शिशुमार	S44	HDW (जर्मनी)	22 दिसम्बर, 1986	सक्रिय
आई.एन.एस. शंकुश	S45	HDW (जर्मनी)	20 नवम्बर, 1986	सक्रिय
आई.एन.एस. शल्की	S46	MDL (भारत)	7 फरवरी, 1992	सक्रिय
आई.एन.एस. शंकुल	S47	MDL (भारत)	28 मई, 1994	सक्रिय

शिशुमार श्रेणी के सबमैरीन की मध्यावधि मरम्मत का कार्य

भारतीय नौसेना में प्रत्येक सबमैरीन का एक निश्चित समयान्तराल के पश्चात मरम्मत का कार्य तय रहता है। इसके अंतर्गत मध्यावधि रिपेयर लगभग 10 वर्ष में, एन.आर. लगभग 6 वर्ष में एवं एस.आर. लगभग 2-3 वर्ष के अन्तराल में किया जाता है।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई को सर्वप्रथम सन 1998 में शिशुमार श्रेणी की एस.एस.के. क्लास की प्रथम पनडुब्बी

शंकुल- शिशुमार श्रेणी की चौथी सबमैरीन

शिशुमार की मध्यावधि रिपेयर का कार्य करने के लिए 135.22 करोड़ रुपये का ऑर्डर मिला था। माझगांव डॉक लिमिटेड ने इसको एक चुनौती के रूप में लिया और जून 2000 तक रिपेयर का कार्य सफलतापूर्वक खत्म कर भारतीय नौसेना को हैंडओवर कर दिया।

इसी कड़ी में शिशुमार श्रेणी की द्वितीय पनडुब्बी आई.एन.एस शंकुश के रिपेयर का ऑर्डर सन 2000 में लगभग 100 करोड़ रुपये में मिला था। प्रथम पनडुब्बी की तरह द्वितीय पनडुब्बी का कार्य भी अत्यंत कठिन होने के बावजूद माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई ने सन् 2005 तक पूर्ण कर नौसेना को सौंप दिया। तीसरी पनडुब्बी आई.एन.एस शल्की, माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई में मरम्मत कार्य करने के लिए सन् 2007 में लायी गयी। इसके रिपेयर का ऑर्डर लगभग 450.61 करोड़ रुपये का था। कुशल कामगारों एवं उन्नत तकनीकी के द्वारा इसके मरम्मत और अपग्रेडेशन का काम पूर्ण कर लिया गया और 2009-2010 के बीच नौसेना को सौंप दिया गया।

शिशुमार श्रेणी की अंतिम सबमैरीन आई.एन.एस शंकुल के रिपेयर का ऑर्डर सन 2008 में 460.47 करोड़ रुपये का मिला। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई ने अपनी बेहतरीन तकनीक का परिचय देते हुए इसके रिपेयर एवं अपग्रेडेशन का काम सन 2011-2012 के बीच समाप्त कर भारतीय नौसेना को दे दिया।

वर्तमान समय में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, मुंबई में स्कोर्पिन क्लास की छः सबमैरीन के निर्माण का कार्य अनवरत रूप से चल रहा। इस क्लास की पहली सबमैरीन 'कलवरी' है। इसका जलावतरण नवम्बर 2015 में हुआ और कमीशनिंग 14 दिसंबर 2017 को सम्पन्न हुई। इस श्रेणी की दूसरी सबमैरीन 'खंडेरी' 12 जनवरी 2017 को सम्पन्न हुई है।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने दो सबमैरीन का निर्माण कार्य एवं चार सबमैरिनों का रिपेयर कार्य पूर्ण करके भारत में अन्य शिपयार्ड की परंपरा से हटकर सफलता हासिल की है। यह सबमैरीन भारतीय नौसेना के महत्वपूर्ण मिशन में कामयाब भी हुए हैं और आज भी सक्रिय हैं।

उपरोक्त विवरण ने यह सत्यापित कर दिया है कि भारत सबमैरीन उत्पादन क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन गया है। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड भारत का सबसे पुराना शिपयार्ड है। यह आधुनिक प्रौद्योगिकी उन्नयन के कारण पूरे विश्व में अपना परचम लहरा रहा है।

आधुनिक पनडुब्बी परियोजना पी75

माझगांव डॉक को अतिआधुनिक स्कोर्पिन श्रेणी पनडुब्बी निर्माण का आदेश भारतीय नौसेना की ओर से प्राप्त हुआ है। ये पनडुब्बियाँ फ्रांस की कंपनी डीसीएनएस और स्पेन की कंपनी नेवतिया के सहयोग से निर्मित हो रही हैं। इनमें बेहतरीन स्टील्थ, दुश्मन के जहाजों एवं पण्डुब्बियों का पता लगाने की क्षमता और आक्रमण करने की शक्ति है। इस प्रभावशाली अंडर वाटर प्लेटफॉर्म से दुश्मन की जहाजों/ पण्डुब्बियों पर प्रिसीजन गाइडेड टारपीडो और मिसाइल से हमला करके अशक्त बनाने की काबिलियत है।

स्कोर्पिन पनडुब्बी में विविध कार्यों को पूरा करने की क्षमता है। जो एक आधुनिक पनडुब्बी में होनी चाहिए। जैसे एंटी सरफेस वारफेयर, इंटेलिजेंस गेदरिंग, माइन लेइंग और अपने क्षेत्र की निगरानी करना आदि।

स्कोर्पिन का निर्माण माडुलर कंस्ट्रकशन सिद्धांत के अनुसार किया जाता है जिसमें पनडुब्बी को अनेक खंडों में बांटा जाता है और खंडों को जोड़कर पूर्ण किया जाता है। उपकरण को लचीले ढंग से उठाकर क्रैडेल पर रखा जाता है और तब खंडों में जोड़ा जाता है।

इसमें सबसे चुनौती पूर्ण कार्य होता है पनडुब्बी के अंदर 60 किमी लंबा केबल और 11 किमी लंबी पाइपों को पनडुब्बी के चारों ओर लेइंग करना। पनडुब्बी में बहुत सँकरे कम्पार्टमेंट

आईएनएस कलवरी के कमीशनिंग का चित्र

खंडेरी के जलावतरण का चित्र

करंज के जलावतरण पर उपस्थित निदेशक मंडल एवं अतिथिगण

होते हैं जिसमें कठोर सहनशीलता की आवश्यकता होती है। एमडीएल ने केबल लेइंग तथा पाईप फिटिंग का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है।

स्कोर्पिन परियोजना के अंतर्गत एमडीएल ने अपनी बेमिसाल प्रतिष्ठा की स्थिति 'राष्ट्र के पोत एवं पनडुब्बी निर्माता' के रूप में स्थापित कर लिया है। इसे कंपनी ने अपनी योग्यता से अर्जित किया है। स्कोर्पिन श्रेणी की पहली पनडुब्बी 'कलवरी' यार्ड 11875 की कमीशनिंग गहन जांच और समुद्री परीक्षण के बाद भारतीय नौसेना को सितंबर 2016 को सुपुर्द की गई। 'कलवरी' ड्रेडेड टाइगर शार्क और ड्रेडेड डीप सी प्रिडेटर का मूर्तरूप 30 वर्षों से अधिक काल के बाद किया जाएगा। पहले 'कलवरी' की डीकमीशनिंग 31 मई 1996 में की गई थी। नौसेना की परंपरा के अनुसार नई पोत और पनडुब्बी का नामकरण उस पोत और पनडुब्बी की डीकमीशनिंग के बाद किया जाता है।

माझगांव डॉक ने 'मेक इन इंडिया' आख्यान का प्रस्तुतिकरण अपने देश में स्वदेशी युद्धपोत एवं पनडुब्बी का निर्माण करके किया है। इसकी शुरुआत 1960 में लिएंडर श्रेणी युद्धपोत से आगे बढ़कर गोदावरी श्रेणी युद्धपोत, खुकरी क्लास कारवेटस, तटरक्षक, ऑफशोर पेट्रोल वेजल, 1241 री मिसाइल बोट, दिल्ली, कोलकाता और विशाखापटनम श्रेणी के विध्वंसक, शिवालिक श्रेणी स्टील्थ फ्रीगेट और शल्की और कलवरी श्रेणी की पनडुब्बी के साथ जारी है।

स्कोर्पिन परियोजना के प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और अनुभव के साथ उन्नत बुनियादी सुविधाओं की वृद्धि से एमडीएल भविष्य में पनडुब्बी परियोजना की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार है। यह राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सदैव मार्गदर्शन करेगा और दूसरों के लिए अनुसरण का पथ होगा।

स्कोर्पिन की विशेषताएँ

अद्यतन नौसेना प्रौद्योगिकी में स्कोर्पिन पनडुब्बी शामिल है। पनडुब्बी के मध्य भाग में सबटिक्स स्थित होता है इसके साथ एकीकृत कम्बेट सिस्टम, हाईली कम्पूटराइज्ड सेंट्रल मैनेजमेंट सिस्टम सुसज्जित होता है जिसके द्वारा पनडुब्बी के सभी सेंसर और आयुधों की निगरानी की जाती है। प्रत्येक स्कोर्पिन पनडुब्बी में कुल 31 कम्पार्टमेंट होते हैं।

पनडुब्बी वास्तव में निर्णायक स्टील्थ वेपन है। पिछले दशकों में सोनार प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण, पण्डुब्बियों का पता लगाना और पण्डुब्बियों को लक्ष्य बनाना बहुत ही कठिन है। विशेष रूप से हिन्द महासागर में जहां समुद्र का खारापन और थर्मल जोन की उपस्थिति से परिवर्तनीय जल तापमान के कारण पनडुब्बी का पता लगाना अत्यंत कठिन है। स्कोर्पिन पनडुब्बी जासूसी और काउंटर जासूसी के खेल को और कठिन बनाती है। इसका रूपांकन अत्यंत नीरव रूप में किया गया है जिसके कारण यह कई दिनों तक समुद्र के अंदर रह सकती है और लांगरेंज पैसिव सोनार सिगनल्स के माध्यम से समुद्र में स्कोरिंग कर सकती है जिसके द्वारा अपने आसपास के क्षेत्र में दूसरे पनडुब्बी और युद्धपोत का पता लगा सकती है।

करुणा का कर्ज

श्रीमती दिव्या डी वैती

ईश्वरचंद्र विद्यासागर के बारे में सभी जानते हैं कि वह एक करुणामय, सहिष्णु और परोपकारी व्यक्ति थे। किसी के सुख-दुख में शरीक होना या किसी की मदद के लिए दौड़ पड़ना जैसे उनका रोज का नियम ही हो गया था। एक बार उन्हें पता चला कि कस्बे के ही जयराज नामक दयालु, दानवीर और परोपकारी सज्जन की मृत्यु हो गई है, और उनकी पत्नी के पास अंतिम क्रिया तक के पैसे नहीं हैं। विद्यासागर जयराज को नहीं जानते थे पर जब उन्होने अंतिम क्रिया के लिए पैसे न होने की बात सुनी तो किसी तरह पूछताछ करते-करते जयराज के घर पहुँच गए। उन्होंने जयराज की विधवा को ढाँढ़स बँधाया और श्रद्धा सुमन अर्पित करके एक किनारे बैठ गए। जब आने जाने वालों की भीड़ कम हुई तो विद्यासागर जयराज की विधवा के पास दोबारा गए और उससे बोले- 'मैं और जयराज दोनों अच्छे मित्र थे और दोनों ही एक दूसरे के सुख-दुख में कम भी आते थे। मैंने अपने बुरे वक्त में उनसे कुछ रुपये कर्ज स्वरूप लिए थे। आज मैं वही रुपये लेकर उनके पास आ रहा था, तभी यह दुखद समाचार मिला। अब वह तो रहे नहीं, सो आप ही यह कुछ रुपये रख लीजिए। बाकी राशि भी मैं धीरे-धीरे चुका दूंगा।' जयराज की पत्नी ने रोते हुए वह रुपये पकड़ लिए। भविष्य में भी विद्यासागर उस औरत के लिए एक निश्चित धनराशि प्रतिमाह भेजते रहे। कई वर्षों के पश्चात् उस विधवा औरत को वास्तविकता का पता चला तो वह उनके इस अनूठे झूठ पर अचरज से भर उठी। वह अपने लड़कों के साथ विद्यासागर से मिलने गई और उनके चरणों में गिरकर रोने लगी- आपने हमारे बुरे वक्त में सहारा दिया, हम आपका यह कर्ज कैसे चुका पाएंगे? विद्यासागर बोले- बहन, तुम्हारे इन आंसुओं ने यह सारा कर्ज चुका दिया है। दिल पर कोई बोझ लिए बिना अपने घर जाओ।

एमडीएल में बुनियादी सुविधाओं का विकास

रामाश्रय यादव
प्र (भंडार - पू खं)

माझगांव डॉक में बुनियादी सुविधाओं का आधुनिकीकरण, संवर्धन और उन्नयन करने की आवश्यकता सन् 1981 में अनुभव की गई। उस समय यू.के की फर्म मेसर्स एप्लोडर ने सिफारिश किया कि संवर्धन हेतु यहाँ पर माड्युलर हल कंस्ट्रक्शन शॉप के साथ हैवी ड्यूटी गैन्ट्री क्रेन की स्थापना करना आवश्यक है। यह बुनियादी संवर्धन आगे नहीं बढ़ पाया क्योंकि एमडीएल के निकट कोई भूमि उपलब्ध नहीं थी। फिर भी मई 1998 में एमडीएल ने इस समस्या का समाधान खोज लिया और एमडीएल के दक्षिण यार्ड से सटी हुई सिंधिया वर्कशॉप लिमिटेड की भूमि का अधिग्रहण कर लिया। सन् 1997 की समानांतर कार्रवाई में, रक्षा मंत्रालय ने एक उच्चस्तरीय दल का गठन विकसित देशों के कुछ शिपयार्ड का दौरा करने के लिए किया जिन्हे यार्ड में सुधार हेतु प्रतिवेदन देना था। गठित निरीक्षण दल ने अपना निम्न अवलोकन सुधार हेतु प्रस्तुत किया।

1) उस आधार पर शिपयार्ड ने माड्युलर निर्माण की परिकल्पना को स्वीकार किया है जिससे 65% से 85% तक बाह्यसज्जा कार्य पोत के जलावतरण से पहले पूर्ण कर लिया जाएगा।
2) कम्पूटराइज़ड योजना, लाजिस्टिक सूचना प्रणाली आरंभ करके प्रवर्तित किया गया है।
3) पहले क्रेन की क्षमता 150 टन थी। तदनुसार निम्नलिखित सिफारिशों को शिपयार्ड में लागू किया गया है-
   - i) जल के नीचे प्लाजमा सीएनसी प्लेटकटिंग मशीन की स्थापना की गई है।
   - ii) सीएनसी पाइप बेडिंग मशीन का प्रतिस्थापन पाईपशॉप में किया गया।
   - iii) माडुलर शॉप के साथ माडुलर निर्माण क्रेन सुविधा उपलब्ध की गई है।
   - iv) कम से कम 150 टन की क्रेन का उपयोग माडुलर शॉप से स्लिप-वे पर ब्लाक ले जाने के लिए किया जाता है।
   - v) आज रूपांकन करने, योजना बनाने, सामग्री प्रबंधन इत्यादि के लिए कम्पूटराइज़ड प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

स्कोर्पिन पनडुब्बी निर्माण कार्यक्रम अंग के रूप में मेसर्स - थेल्स और मेसर्स डीसीएन के एक दल ने एमडीएल का दौरा किया और यहाँ उपलब्ध सुविधाओं की जांच किया और सुधार हेतु उन्होंने सिफारिश किया कि एमडीएल में क्रेडल एसेम्बली शॉप के साथ एक अतिरिक्त भंडार का निर्माण होना चाहिए। इन सिफारिशों पर कार्य वित्तीय कारणों से रुका रहा। इसी बीच माझगांव डॉक ने समर्पित इन हाउस परियोजना प्रबंधन दल का गठन किया और एक वृहद बुनियादी सुविधा संवर्धन कार्यक्रम आरंभ किया जिसे माझडॉक आधुनिकीकरण परियोजना (एसएमपी) के नाम से जाना जाता है। नीदरलैंड की कंपनी मेसर्स हासकोनिंग, बीवी (एचएनबीवी) को इस परियोजना के लिए सलाहकार नियुक्त किया गया था। मेसर्स एचएनबीवी विश्व प्रसिद्ध सलाहकार हैं और इन्हें समुद्री निर्माण के क्षेत्र में व्यापक अनुभव है। इन्होंने विश्व में अनेक शिपयार्ड एवं बन्दरगाहों का विकास किया है।

मेसर्स एचएनबीवी की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट पर विभिन्न उपयोगकर्ता विभागों के साथ गहन परस्पर चर्चा की गई जैसे जहाज निर्माण, एसडी एंड डी, अनुरक्षण और अंत में अनुमोदन होने पर अंतिम रूप दिया गया। इसके लिए निधि मंजूर होने पर कार्य आरंभ किया गया। एमएमपी के अंतर्गत बुनियादी सुविधाओं का निर्माण ग्राहक वित्त पोषण संपत्ति के रूप में नौसेना परियोजना के निधि से किया गया है। इस परियोजना पर लगभग रुपए 826 करोड़ लागत आई है। माझडॉक आधुनिकीकरण परियोजना में, मूलभूत सुविधाएं यथा एक नया वेट बेसिन, एक हेवी ड्यूटी

गोलियथ क्रेन, एक माडुल वर्कशाप और पनडुब्बी के लिए एक क्रेडल एसेम्बली का निर्माण शामिल किया है। 300 टन की भारी गोलियथ क्रेन के साथ माडुल वर्कशॉप, जहाज निर्माण की माडुलर संकल्पना को अपनाकर क्रांतिकारी परिवर्तन कर रहा है।

स्टेट ऑफ आर्ट माडुल शॉप संकुचनशील छत के साथ, गोलियथ क्रेन के सहयोग से एमडीएल को एकीकृत माडुलर निर्माण संकल्पना को स्वीकार करने में सहायता करता है।

वर्तमान परम्परागत इकाई आधारित आगम में बाह्यसज्जा केवल 35% की सीमा तक ही प्राप्त होती है। माडुलर तकनीकी के द्वारा हल निर्माण, बाह्यसज्जा और जहाजों की पैकिंग 300 टन तक माडुल शॉप में की जा सकती है।

यहां बाह्यसज्जा का वास्तविक प्रतिशत 65% तक बढ़ाया जा सकता है। इससे निर्माण अवधि में विशेष कमी होगी।

स्टेट ऑफ आर्ट माडुल शॉप के अलावा एक क्रेडल एसेम्बली का निर्माण भी स्कोर्पिन पनडुब्बी के निर्माण कार्यक्रम के अंग के रूप में किया गया है।

क्रेडल एसेम्बली का मुख्य उपयोग संरचना एवं पूर्व बाह्यसज्जा क्रेडल स्ट्रक्चर के लिए यूनिट ब्लॉक एसेम्बली में किया जा रहा है। पनडुब्बी के विविध खंड क्रेडल (प्रत्येक 100 टन) की एक साथ जोड़ने की क्षमता, बहुत दिनों से अनुभव की जा रही थी। स्थान की कमी को सीएएस ने आंशिक रूप से हल कर दिया है। सीएएस को एक नए भंडार भवन के साथ मिला दिया गया है जहां स्वचालित पुन:प्राप्ति प्रणाली की व्यवस्था है साथ ही संवेदनशील और परिष्कृत उपकरणों को नियंत्रित वातावरण में रखने की सुविधा है।

गोलियथ क्रेन की सफल संरचना एवं प्रतिस्थापन से यह दूर से माइलस्टोन के रूप में दिखाई देता है। यह एमडीएल के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। इसके निर्माण के पीछे अनेक बाधाएं और चुनौतियाँ थी। जिसमें एक हेवी ड्यूटी गैनट्री क्रेन शामिल है जो रेल पर 138 मीटर चौड़ाई में आर-पार स्लिप-वे एवं मोडुल शॉप के बाहर चलती है। इसकी भार ढोने की क्षमता 300 टन है।

कन्होजी आंग्रे वेट बेसीन: पूर्व खंड में स्थित नया वेट बेसिन सिविल अभियांत्रिकी का सुंदर नमूना है जिसे समुद्री पर्यावरण के अनुसार बनाया गया है। यह नया वेट बेसिन 2700 वर्गमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है इसमें दो युद्धपोत और दो पण्डुब्बियों को लंगर करने की क्षमता है इसके साथ 100 टन, 50 टन, और 15 टन क्षमता की दो स्तरीय लफ़्फ़िंग क्रेनें भी लगाई गई हैं। एमडीएल में एकमात्र 1400 वर्गमीटर का 'कसारा वेट बेसिन' था। इसका निर्माण सन् 1968 में जहाजों की सर्विसिंग के लिए किया गया था। यहाँ पर लंबे समय से कार्य हो रहा है। लंगरगाह की कमी के कारण एमडीएल अबतक निर्माणाधीन युद्धपोतों के लिए नौसेना तथा मुंबई पोर्ट ट्रस्ट (एमबीपीटी) के ड्राई डॉक में अपने जहाजों का लंगर करता रहा है जो यहाँ से कई किलोमीटर दूर स्थित हैं। इसके कारण अनावश्यक रूप से श्रमिकों को ले जाने तथा लाने के लिए तथा आवश्यक सामग्री, मशीनरी आदि को नियमित रूप से नौसेना की सुविधाओं के लिए ढोया जाता था। जिसके कारण समय तथा परिवहन पर भारी खर्च होता था। इस समस्या से निजात पाने के लिए योजना तैयार की गई और इस प्रकार नए वेट बेसिन का विचार किया गया। नया वेट बेसिन संतुलित, टिकाऊ, ढाँचा के साथ बनाया गया है जो 75 वर्षों तक क्रियाशील रहेगा और इससे एमडीएल की लंगरगाह आवश्यकता की पूर्ति नियमित रूप से होती रहेगी। पनडुब्बी निर्माण के लिए आधुनिक बुनियादी सुविधाए निर्माण करने की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। अलकाक यार्ड में ओएनजीसी के जैकअप रिग, प्रतितट मंच का कार्य समाप्त होने के पश्चात कोई नया आदेश नहीं मिला और यार्ड के उपकरणों और मशीनरी का उपयोग

पीले रंग में तीन पाए पर स्थापित गोलियथ क्रेन

समुद्र की ओर से क्रेडल शॉप का दृश्य

नहीं हो रहा था। उस बड़े भू-भाग का समुचित उपयोग करना जरूरी था। पूर्व खंड में पनडुब्बी निर्माण के लिए स्थान की कमी को देखते हुए प्रबंधन ने योजना बनाई कि अलकाक यार्ड की खाली जमीन का उपयोग पनडुब्बी निर्माण हेतु बुनियादी सुविधा का विकास करने के लिए किया जाय। कंपनी को नौसेना से 06 स्कोर्पिन पनडुब्बी निर्माण का आदेश मिला हुआ है उन्हे समय से पूरा करना आवश्यक है। बुनियादी संसाधनो की बढ़ोतरी से निर्माण अवधि तथा लागत में भारी कमी होगी जिससे भविष्य में और आदेश प्राप्त होंगे।

पीले रंग में तीन पाए पर स्थापित गोलियथ क्रेन समुद्र की ओर से क्रेडल शॉप का दृश्य

एसएसए वर्कशॉप

पनडुब्बी कार्य प्रचुरता को देखते हुए तथा भावी योजनाओं का विचार करते हुए अलकाक यार्ड में पनडुब्बी निर्माण हेतु आधारभूत संरचना के रूप में एसएसए वर्कशॉप का निर्माण किया गया है।

एसएसए वर्कशॉप

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड को भारतीय नौसेना की ओर से 6 स्कोर्पिन श्रेणी पण्डुब्बियों निर्माण करने का आदेश परियोजना पी75 के अंतर्गत प्राप्त है। एमडीएल के पास पहले से ही पूर्व खंड में सबमैरीन एसेम्बली के लिए ड्राई डॉक से सुसज्जित कार्यशाला है फिर भी यह सुविधा भारतीय नौसेना के लिए पनडुब्बी निर्माण समय सीमा में तैयार करके सुपुर्द करने के लिए पर्याप्त नहीं थी। पण्डुब्बियों की सुपुर्दगी समय सारणी से पूरा करने के लिए वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की मांगों को पूरा करने के लिए भी एमडीएल ने पनडुब्बी निर्माण हेतु अपनी बुनियादी सुविधाओं का संबर्धनकिया है। सबमैरीन सेक्शन एसेम्बली वर्कशॉप अलकाक यार्ड में बुनियादी सुविधा संवर्धन कार्यक्रम का एक अंग है। इसके निर्माण से एमडीएल को भारतीय नौसेना के लिए पण्डुब्बियों की सुपर्दगी तथा रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होगी।

प्रमुख विशेषताएँ

इस कार्यशाला की लंबाई 220 मीटर, चौड़ाई 45 मीटर और ऊंचाई 39 मीटर है। इसकी संरचना स्टील के साथ सहायक संरचना में आरसीसी से निर्मित कार्यशाला भवन और रेस्टरूम शामिल है। पूर्व निर्मित भवन में एमएस स्लाइडिंग डोर लगे हैं जिसका आकार 40 मीटर लंबाई और 18 मीटर ऊंचाई है। इसके साथ ही पूर्वी केबल के छोर पर 4 पैनेल लगे हुए हैं जिससे 30 मीटर लंबी और 18 ऊंचे क्रेन से पूरे पनडुब्बी का मूवमेंट किया जा सकता है। कार्यशाला की छत वैकुम डीवाटर्ड है जिसमें इम्बेडेड लैंड 2 मीटर × 2 मीटर सीवी की टाईल्स लगी हुई है। इस वॉकशॉप में यूटिलिटी सेवाओं का प्रावधान किया गया है जिसमें ऑक्सीजन, फ्यूम एस्ट्रैकशन सिस्टम, फोर्सड कोम्प्रेस्ड एयर सिस्टम, वाटर सप्लाई और फायर फाइटिंग सिस्टम लगाए गए हैं। वर्कशॉप में 4 ईओटी क्रेन लगी हुई है जिनकी क्षमता 30 टन हैं। ये दो स्तरीय हैं। 02 नग सेमी एलीगाथ क्रेन भी लगाई गई है जिनकी क्षमता 150 टन है और 01 नग 60 टन क्षमता की सेमी गोलीएथ क्रेन बाटम टियर में लगाई गई

एसएसए वर्कशॉप का आन्तरिक दृश्य

है। जिसमें सबमैरिन सेक्शयन के संचालन में सुविधा हो। वहाँ पर एक ब्लास्टिंग एवं पेंटिंग चेम्बर है।

कार्यशाला क्षेत्र में ही अंदर वॉशिंग एरिया है जहाँ पनडुब्बीं अनुभाग की सफाई और ब्लाबस्टिंग एवं पेंटिंग की सुविधा है।

विश्राम कक्ष भवन

इसमें भूतल के साथ 03 मंजिला आरसीसी से निर्मित सुपर स्ट्रक्चर और हाउसिंग सब स्टेवशन भूतल पर बना हुआ है। पेंट्री एरिया प्रथम तल पर और लाकर एसएम माड्युलर टायलेट / कामगारों के लिए बाथरूम दूसरे और तीसरे मंजिल पर पैसेंजर लिफ्ट के साथ उपलब्ध है।

जल प्रबंधन प्रणाली

रिसायकिल वाटर का उपयोग कार्यालय भवन और विश्राम कक्ष भवन में किया जाता है। रेन वाटर हार्वेस्टिंग, एसटीपी, ग्रेवाटर ट्रीटमेंट प्लांट और ऑइल वाटर सेपरेटर की सुविधा ट्रीटेड वाटर का उपयोग करने के लिए किया जाता है।

पर्यावरण का प्रभाव

- यह कार्यशाला एमडीएल परिसर के अंदर खुली भूमि पर निर्मित की जा रही है, इसलिए इससे समुद्री पर्यावरण को कोई खतरा उत्पेन्न नहीं होगा।
- इस कार्यशाला में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांरट जीरो डिस्चोर्ज के साथ प्रदान किया गया है इससे कोई जल प्रदूषण नहीं होगा।
- फ्यूम एकट्रेक्शन सिस्टम कार्यशाला में लगाया गया है। जिससे वायु प्रदूषण नहीं होगा।

एसएस परियोजना की महत्व पूर्ण जानकारी

नए निर्माणाधीन क्षेत्र में उपरोक्त परियोजना की मुख्या विशेषताएँ निम्नरलिखित हैं।

1. सम्पूर्ण कार्यस्थल क्षेत्र - लगभग 63950 वर्गमीटर
2. एसएसए कार्यशाला क्षेत्र - लगभग 96000 वर्गमीटर
3. कार्यालय भवन - लगभग 2740 वर्गमीटर
4. विश्राम कक्ष भवन - लगभग 730 वर्गमीटर
5. रोडवेज - लगभग 8500 वर्गमीटर

1. कार्यशाला भवन

- कार्यशाला क्षेत्रफल - 220. 40 मीटर; लम्बाई 44.00 मीटर; चौड़ाई 39.00 मीटर ऊंचाई

2. कार्यालय भवन

- इस भवन में लगभग 250 कार्मिकों के आवास की व्यवस्था है।

3. विश्राम कक्ष भवन

- इस भवन में लगभग 525 कार्मिकों के कपड़ा बदलने की जगह और प्रसाधन की सुविधा है।
- भूतल के साथ तीन मंजिला आरसीसी संरचना में एलीवेटर लगा है।
- भूतल पर इलेक्ट्रानिक पैनेल लगाया गया हैं।
- प्रथम तल पर डाइनिंग एरिया में एक समय 170 कर्मचारी खाना खा सकते हैं।
- प्रसाधन विश्राम कक्ष सहित लाकर्स दूसरी और तीसरी मंजिल पर उपलब्ध हैं।
- टेरिस फ्लोर का रूपांकन इस प्रावधान से किया गया है जिसमें बगीचा जैसी हरियाली की विशेषताएँ हैं।

4. सहायक भवन

- कामगारों के लिए शौचालय
- फायर वाटर टैंक एवं एफएफ पम्प रूम
- क्षमता - 3, 50, 000 लीटर
- क्षमता - 3, 50, 000 लीटर

तेनालीराम की चतुराई

नीलेश बैकर
सप्र (वेलफेयर अधिकारी)

सोलहवीं सदी में विजयनगर की सत्ता महाराज कृष्णदेव राय के हाथों में थी। उनके दरबार में एक से बढ़कर एक दरबारी हुआ करते थे, और उन्हीं में से एक महाचतुर तेनालीराम थे। अक्सर महाराज किसी अनसुलझी गुत्थी को सुलझाने के लिए तेनालीराम की मदद लिया करते थे। कालांतर में तेनालीराम एक प्रसिद्द किरदार बन गए और अकबर-बीरबल की तरह उनके जीवन में भी कई चतुराई भरे किस्से जोड़ दिए गए। इस तरह तेनालीराम की चतुराई भरी कहानियां प्रसिद्द होती गयीं और बच्चों के साथ-साथ बड़ों की भी शिक्षा और मनोरंजन का जरिया बन गयीं।

तेनालीराम राजा कृष्ण देव राय के निकट होने के कारण बहुत से लोग उनसे जलते थे। उनमे से एक रघु नाम का ईर्ष्यालु फल व्यापारी था। उसने एक बार तेनालीराम को षड्यंत्र में फसाने की युक्ति बनाई और उसने तेनालीराम को फल खरीदने के लिए बुलाया। जब तेनालीराम ने फल का दाम पूछा तो रघु मुस्कुराते हुए बोला,

"आप के लिए तो इनका दाम 'कुछ नहीं' है।"

यह बात सुन कर तेनालीराम ने कुछ फल खाए और बाकी थैले में भर आगे बढ़ने लगे। तभी रघु ने उन्हें रोका और कहा कि मेरे फल के दाम तो देते जाओ।

तेनालीराम रघु के इस सवाल से हैरान हुए, वह बोले कि अभी तो तुमने कहा की फल के दाम 'कुछ नहीं' है। अब क्यों अपनी बात से पलट रहे हो। तब रघु बोला कि मेरे फल मुफ्त नहीं हैं। मैंने साफ-साफ बताया था कि मेरे फलों का दाम कुछ नहीं है। अब सीधी तरह मुझे 'कुछ नहीं' दे दो, वरना मैं राजा कृष्ण देव राय के पास फरियाद ले कर जाऊंगा और तुम्हें कठोर दंड दिलाऊँगा।

तेनालीराम सिर खुजाने लगे और यह सोचते-सोचते वहाँ से अपने घर चले गए।

उनके मन में एक ही सवाल चल रहा था कि इस पागल फल वाले के अजीब षड्यंत्र का तोड़ कैसे खोजूँ। इसे कुछ नहीं कहाँ से लाकर दूँ।

अगले ही दिन फल वाला राजा कृष्ण देव राय के दरबार में आ गया और फरियाद करने लगा। वह बोला की तेनाली ने मेरे फलों का दाम 'कुछ नहीं' मुझे नहीं दिया है।

राजा कृष्ण देव राय ने तुरंत तेनालीराम को हाज़िर किया और उससे सफाई मांगी। तेनालीराम पहले से तैयार थे उन्होंने एक रत्न-जड़ित संदूक लाकर रघु फल वाले के सामने रख दिया और कहा यह लो तुम्हारे फलों का दाम।

उसे देखते ही रघु की आँखें चौंधिया गईं, उसने अनुमान लगाया कि इस संदूक में बहुमूल्य हीरे-जवाहरात होंगे..वह रातों-रात अमीर बनने के ख्वाब देखने लगा। और इन्ही ख़यालों में खोये-खोये उसने संदूक खोला।

संदूक खोलते ही मानो उसका सपना टूट गया, वह जोर से चीखा, "ये क्या? इसमें तो 'कुछ नहीं' है!"

तब तेनालीराम बोले, "बिलकुल सही, अब तुम इसमें से अपना 'कुछ नहीं' निकाल लो और यहाँ से चलते बनो।"

वहां मौजूद महाराज और सभी दरबारी ठहाका लगा कर हंसने लगे और रघु को अपना सा मुंह लेकर वापस जाना पड़ा। एक बार फिर तेनालीराम ने अपने बुद्धि चातुर्य से महाराज का मन जीत लिया था।

समाज सेवा में भी आगे

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड

रोहित पंड्या
उप्र (सीएसआर)

भारतीय नौसेना के लिए अत्याधुनिक पनडुब्बियां एवं युद्धपोत बनाने वाला माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लि. (एमडीएल) सही अर्थों में राष्ट्र का पोत निर्माता एवं भारत का अग्रणी शिपयार्ड है। युद्धपोतों, पनडुब्बियों, वाणिज्यिक जहाजों के निर्माण के जरिए राष्ट्र की सेवा में रत यह निगमित सामाजिक दायित्व (सीएसआर) में भी किसी से पीछे नहीं है। एमडीएल न केवल सीएसआर एवं सस्टेनेबल विकास के प्रति वचनबद्ध है बल्कि अपने हितग्राहियों के लिए एक आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से सस्टेनेबल व्यवसाय संचालन के लिए भी प्रतिबद्ध है। एमडीएल का सामाजिक व व्यावसायिक उद्देश्यों के समेकन के लिए विभिन्न कार्यक्रम संचालित करता है, ताकि समाज पर सकारात्मक प्रभाव और एक समावेशी वृद्धि का वातावरण तैयार हो सके। वैसे तो एमडीएल काफी लंबे समय से सीएसआर गतिविधियों में शामिल है, लेकिन इसने फरवरी 2015 में कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 135 के अंतर्गत निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सस्टेनेबिलिटी पॉलिसी के अनुसार नई गतिविधियां शुरू की है। एमडीएल के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक कमोडोर राकेश आनंद ने कहा कि एमडीएल में सीएसआर यात्रा की शुरुआत वित्त वर्ष 2010-11 में 43.50 लाख रुपए के वार्षिक खर्च से हुई। कंपनी की अधिकांश सामाजिक गतिविधियां मुंबई एवं उसके आस-पास के क्षेत्रों तक सीमित थीं। टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस के आधारभूत सर्वेक्षण में यह बात उभरकर आई कि शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सेनिटेशन् के क्षेत्र में काफी बड़ा अंतर है। इसलिए हमने शुरू के वर्षों में इन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया है।

जैसे ही सीएसआर आवंटन में वृद्धि हुई, एमडीएल के सीएसआर कार्यों में स्वच्छ भारत अभियान, व्यावसायिक कौशल विकास, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण आदि क्षेत्र भी शामिल किए गए। हमने देश के अन्य अति पिछड़े क्षेत्रों को भी अपने निगमित सामाजिक दायित्व कार्यक्रम में शामिल किया और वहां ग्रामीण विकास परियोजनाएं शुरू कीं। अब उत्तर-पूर्वी राज्यों, राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश तक भी हमारी सामाजिक गतिविधियों का विस्तार हो चुका है। हाल में हमने महाराष्ट्र के ठाणे जिले की शहापुर तालुका में खराडे ग्राम पंचायत को गोद लेकर इन आदिवासी क्षेत्रों में ग्रामीण परियोजनाएं शुरू की है। हमने सूखा पीड़ित व पिछड़े मराठवाड़ा क्षेत्र में बीड़ जिले के पारनर गांव में पर्यावरणीय व जीविकोपार्जन से जुड़ी परियोजनाएं शुरू की हैं। वित्त वर्ष 2015-16 के दौरान एमडीएल ने सीएसआर एवं सस्टेनबिल्टी परियोजनाओं पर 11.69 करोड़ रुपए की राशि खर्च की। वर्ष 2016-17 में कंपनी द्वारा 13 करोड़ रुपए से अधिक की राशि खर्च की जा चुकी है।

कमोडोर राकेश आनंद ने कहा कि हमने 300 फुट की ऊंचाई पर स्थित चफ्याचीवाड़ी (खराडे ग्राम पंचायत) में पीने का पानी पहुँचाने के लिए पंपिंग सिस्टम के साथ 4 कि.मी. लंबी पाइप लाइन बिछाकर पानी के संकट से जूझ रहे इस गांव के निवासियों की मदद की है। हमने दूर मराठवाड़ा क्षेत्र में सूखा प्रभावित किसानों की मदद करने का काम भी शुरू किया है। पटौदा तहसील के पारनेर गांव में पशुओं को खनिज मिश्रित पशु आहार पहुँचाना, कुँआ, तालाब, बाँध एवं कृषि तालाबों का निर्माण व खुदाई, जमीन की जल संरक्षण क्षमता बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण करना, स्थानीय किसानों के लिए रोजगारजनक कार्यों की पहचान आदि कार्य शुरू किए गए हैं। इसका लाभ 1000 किसानों व 1500 पशुओं को हुआ है।

खराडे गाँव का 'आदर्श ग्राम' विकास

कंपनी ने तीन वर्षों के लिए सीएसआर नीति के तहत ठाणे जिले के शहापुर के नजदीक सुदूर खराडे ग्राम पंचायत गाँव को बहुमुखी विकास के लिए गोद लिया है। माननीय प्रधानमंत्री के आह्वान पर **'आदर्श ग्राम योजना'** के अन्तर्गत गाँवों को गोद लेने पर ध्यान दिया गया। इस प्रक्रिया में स्वास्थ्य जाकरूकता, स्वच्छ भारत मिशन, कचरा प्रबंधन, किसान क्लब का गठन, स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता एवं शिक्षा की गुणवत्ता, कौशल विकास, नारी सशक्तिकरण को सफल बनाना इत्यादि शामिल है। एमडीएल की सीएसआर टीम इस गाँव में एक वर्ष से कार्य कर रही है एवं इसे आदर्श गाँव बनाने की दिशा में कई कदम उठाए गए हैं। एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा 29 दिसंबर 2015 को श्री वी. गिरीराज, मुख्य सचिव, ग्रामीण विकास, महाराष्ट्र राज्य एवं अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में परियोजना का उद्घाटन किया गया। पुणे स्थित प्रतिष्ठित एनजीओ कर्वे इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विस इस परियोजना में कंपनी की मदद कर रही है। खराडे ग्राम पंचायत में दो गाँव (चंदगांव एवं खराडे) शामिल हैं, जहाँ कुल 590 घर हैं और कुल आबादी 3008 है। इन गाँवों के निवासी मुख्यतः अनुसूचित जनजाति समुदाय अन्य पिछड़े वर्ग से हैं तथा मूलभूत सुविधाओं एवं जीविकोपार्जन के अभाव में हैं।

खराडे गाँव में निम्नलिखित परियोजनाएँ चलाई जा रही हैं-

- एमडीएल - कर्वे इंस्टीट्यूट समुदाय विकास एवं संसाधन केंद्र
- जिला परिषद स्कूल एवं आँगनबाड़ी का विकास
- महाराष्ट्र सरकार के सहयोग से स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रम
- महाराष्ट्र सरकार के सहयोग से पशु-चिकित्सा कैंप
- स्वच्छ भारत अभियान एवं कचरा प्रबंधन कार्यक्रम
- जीविकोपार्जन करने के लिए किसान संघ निर्माण
- शौचालय निर्माण एवं गाँववालों की प्रतिभागिता के लिए जागरुकता
- स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता

एनजीओ सहयोगी के साथ ली गई परियोजनाएँ-

- गुणवत्ता शिक्षा कार्यक्रम
- स्वास्थ्य, जल एवं सफाई कार्यक्रम
- कौशल विकास एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र
- पुलिस एवं रक्षा सेवाओं में युवाओं की भर्ती के लिए खेल प्रशिक्षण परिषद
- शेनावे गाँव में अनुसूचित जनजाति की लड़कियों के लिए वर्तमान आईटीआई को गोद लेना
- नारी सशक्तिकरण कार्यक्रम
- एनजीओ साझेदार के साथ कृषि विकास एवं वाटरशेड प्रबंधन परियोजना

बीड़-मराठवाड़ा के सूखा पीड़ित क्षेत्रों में राहत कार्य

देश में वर्ष 2015 में सूखे के कारण कई राज्य प्रभावित हुए। महाराष्ट्र के 8 जिले भी सूखे की चपेट में आ गए थे। इसके मद्देनजर केंद्र व राज्य सरकारों ने लोगों को सूखे की मार से बचाने के लिए अनेक कदम उठाए। माझगांव डॉक ने भी आगे आते हुए सूखे से बुरी तरह प्रभावित मराठवाड़ा के बीड़ जिले में राहत प्रोजेक्ट चलाए। बीड़ जिले की पटोदा तहसील पर ध्यान केंद्रित करते हुए एमडीएल ने अपने सीएसआर प्रोजेक्ट के तहत कई कार्य किए।

- पशुओं के लिए चारा और पोषक आहार प्रदान किया गया।
- सूखाग्रस्त क्षेत्रों में कुओं तालाबों और बाँधों की सफाई कर जल संग्रह संसाधनों को बढ़ावा दिया गया और अतिरिक्त जल संसाधन सृजित किए गए।
- जमीन में जल ठहराव क्षमता सुधारने के लिए नए पौधे लगाए गए ताकि वर्षा के लिए अनुकूल पर्यावरण तैयार हो सके।
- स्थानीय किसानों के लिए स्वरोजगार के अवसरों की पहचान की गई, ताकि किसान आजीविका के लिए अतिरिक्त आय अर्जित कर सकें।
- एमडीएल ने सूखा पीड़ित क्षेत्रों में करीब 33, 000 फलों के पौधों का वृक्षारोपण कराया। करीब 1, 000 किसानों का चयन किया गया और इनमें प्रत्येक को 33 पौधों की देखभाल का दायित्व दिया गया। पपीता, बाँस, आम, टीक, कागजी नींबू, नीम, जामुन, बेर इत्यादि फलों के यह पेड़ किसानों के लिए अतिरिक्त आमदनी का जरिया बनेंगे।

शिक्षा का प्रसार

आदिवासी बालिका स्कूल को लिया गोद

कल्याण की एवीएम समाज प्रबोधन संस्था ने वर्ष 1999 में खराडे गाँव की काथकारी समुदाय की बालिकाओं के लिए आवासीय स्कूल वर्ष 2003 में आरंभ किया, लेकिन अप्रैल 2014 में यह स्कूल धन की कमी के साथ कुछ प्रशासनिक मुद्दों के कारण बंद हो गया। उस समय स्कूल में लगभग 80 बालिकाएं थीं। यह स्कूल काथकारी समुदाय की लड़कियों के लिए है। यह समुदाय प्राचीन अनुसूचित जनजाति के वर्ग में है और यह बहुतायत संख्या में रायगढ़, पालघर, ठाणे, पुणे, नासिक तथा रत्नागिरी जिले में पाई जाती हैं। कातकारी समुदाय भूमिहीनता और रोजगार की कमी के कारण एक बंजारा समुदाय है। सरकारी स्कूलों में काथकारी बच्चों का पंजीयन मात्र 2 से 5 प्रतिशत ही होता है। इसलिए इस समुदाय के बच्चों को प्राइमरी शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एमडीएल ने इस बंद पड़े आदिवासी कन्या आवासीय स्कूल को फिर से शुरू करने का बीड़ा

उठाया। कंपनी इस स्कूल को गोद लेकर सफलतापूर्वक संचालन कर रही है। वर्तमान में इस आवासीय स्कूल में इस समुदाय की 100 छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इन बालिकाओं के अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल छात्रावास में रहकर शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन देने कंपनी हर माह 100 रुपए की प्रोत्साहन राशि भी देती है। इस स्कूल में आदिवासी कन्याओं को आवास सुविधा और शिक्षा प्रदान करने के लिए कंपनी निरंतर प्रयासरत है।

एमडीएल की इस पहल से इस स्कूल में पढ़ने वाली कन्याओं और स्कूल को नया जीवन प्राप्त हो सका है।

कौशल विकास

सरकार के 'स्किल इंडिया' अभियान में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए एमडीएल ने त्रिस्तरीय नीति अपनाई है।

- कंपनी संचालित प्रशिक्षु प्रशिक्षण स्कूल के द्वारा
- आईटीआई और पॉलिटेक्निक्स संस्थानों को गोद लेकर
- राष्ट्रीय अपंग वित्त व विकास निगम और केंद्रीय प्लास्टिक प्रौद्योगिकी संस्थान के द्वारा कौशल विकास

1. कंपनी संचालित प्रशिक्षु प्रशिक्षण स्कूल के माध्यम से कौशल शिक्षा
   – पहले एमडीएल हर साल 424 प्रशिक्षु को ट्रेनिंग देती थी, जिसकी संख्या अब बढ़कर 624 प्रति वर्ष हो गई है।
2. आईटीआई और वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटरों के द्वारा कौशल शिक्षा
   – इसके तहत कंपनी ने महाराष्ट्र के अमरावती जिले में आईटीआई चिखलधारा को गोद लिया जिससे संस्थान के अनुसूचित जाति के 300 से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हुए।
3. संस्थानों के द्वारा कौशल विकास
   – एमडीएल ने राष्ट्रीय अपंग वित्त व विकास निगम के द्वारा 1000 अपंग प्रत्याशियों को कौशल विकास प्रदान किया।
   – केंद्रीय प्लास्टिक प्रौद्योगिकी संस्थान के 80 प्रत्याशियों का भी एमडीएल ने कौशल विकास किया है।

स्वच्छता का प्रचार प्रसार

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) रायगढ़ जिले के कर्जत तहसील में 11 गांवों में स्वच्छता संबंधी जागरुकता फैलाने के लिए 1000 व्यक्तिगत शौचालयों का निर्माण करवा रही है। इस परियोजना को लागू करने में मेसर्स एसईईडी साझेदारी निभा रही है।

इस परियोजना के 100 शौचालय हस्तांतरित करने के लिए 14 मार्च 2018 को एक समारोह का आयोजन शेलारवाड़ी गाँव (कर्जत) में किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि माझगांव डॉक के निदेशक कमोडोर टी वी थॉमस (सयो. एवं क) थे। प्रतिनिधि के रूप में श्री सालुंके, उप सीईओ, रायगढ़ जिला परिषद के उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी शासन और श्रीमती शबाना मोकाशी, बीडीओ - कर्जत उपस्थित थे। श्री अनिर्बान रॉय, एमडी – एसईईडी तथा शेलारवाडी ग्राम पंचायत सदस्य भी समारोह में उपस्थित थे।

इस समारोह को संबोधित करते हुए कमोडोर थॉमस ने बताया कि माझगांव डॉक सामाजिक दायित्व निभाने वाला संस्थान है और यह जरूरतमन्द और समाज के कमजोर वर्गों को हर संभव सहायता देने के लिए प्रतिबद्ध है। सीएसआर योजना के अंतर्गत कर्जत तहसील में 1000 व्यक्तिगत शौचालयों का निर्माण इसकी एक पहल है। कमोडोर थॉमस ने दोहराया कि केवल शौचालय प्रदान करना ही हमारा लक्ष्य नहीं है बल्कि लाभार्थियों को उन्हें उपयोग में लाने की आदत बनाना भी सुनिश्चित करना है। श्री पी एन सालुंके ने स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत एमडीएल की भूमिका की सराहना किया और 2019 तक देश को ओपेन डिफेकेशन फ्री बनाने में (ओडीएफ़) एमडीएल की भूमिका के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। ग्रामवासियों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता निर्माण करने के लिए एक नुक्कड़ नाटक का भी प्रदर्शन किया गया।

कौशल विकास योजना

विवेक एस मोरे
प्र (सतर्कता)

कौशल विकास अभियान 'स्किल इंडिया मिशन' : कौशल भारत - कुशल भारत

भारत में दस साल की कांग्रेस पार्टी के सत्ता-शासन् के बाद 2014 में भारतीय जनता पार्टी ने बहुमत के साथ विजय प्राप्त की और इस जीत का श्रेय उस समय के गुजरात मुख्यमंत्री, वर्तमान में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को जाता है। मोदी सरकार ने 2014 से ही, सत्ता में आने के बाद से, भारत के विकास के लिये अनेक कार्यक्रम शुरु किये जैसे "डिजीटल इंडिया", "मेक इन इंडिया" आदि। इन कार्यक्रमों के बाद मोदी सरकार ने "कौशल विकास अभियान 'स्किल इंडिया'" कार्यक्रम को शुरु किया है। यह एक बहु-आयामी विकास योजना है। इसके अन्तर्गत भारतीयों को इस तरह से ट्रेनिंग दी जायेगी जिससे कि वो अधिक से अधिक रोजगार का सृजन कर सकें।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (स्किल इंडिया मिशन) - कौशल भारत कुशल भारत की शुरुआत प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी, ने अपने स्वप्न "स्किल इंडिया" को, नई दिल्ली में "राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन" के रुप में शुरु किया। जिसमें स्पष्ट किया कि यह सरकार की गरीबी के खिलाफ एक जंग हैं और भारत का प्रत्येक गरीब और वंचित युवा इस जंग का सिपाही है। इस योजना की घोषणा भारत के प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने 15 जुलाई 2015 को 'अन्तर्राष्ट्रीय युवा कौशल दिवस' पर की थी। साथ ही इस योजना का लोगो (प्रतीक चिन्ह) और टैग लाइन का अनावरण भी किया था।

मोदी सरकार ने सत्ता में आने के बाद से ही भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिये अनेक कार्यक्रमों को शुरु किया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये सबसे महत्वपूर्ण कदम भारत में कौशल विकास योजना कार्यक्रमों की शुरुआत है। "कौशलभारत - कुशल भारत" की योजना भी इसी का एक भाग है। "स्किल इंडिया मिशन" योजना के अन्तर्गत चार अन्य योजनाओं (राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन, कौशल विकास और उद्यमिता के लिये राष्ट्रीय नीति, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना और कौशल ऋण योजना) को सम्मिलित करके शुरु की गयी है। स्किल इंड़िया मिशन के उद्देश्य और मुख्य तथ्य देश को विकसित करने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 जुलाई 2015 को पूरे भारत में लगभग 40 करोड़ भारतीयों, को विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत, 2022 तक प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से "कुशल भारत- कौशल भारत" योजना को शुरु किया। इस योजना का मुख्य उद्देश्य भारत के लोगों को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित करके उनकी कार्यक्षमता को बढ़ावा देना है। कौशल विकास योजना का उद्देश्य मुख्य रुप से भारत के युवाओं के कौशल के विकास के लिये उन क्षेत्रों में अवसर प्रदान करना है जो कई वर्षों से अविकसित है। इसके साथ ही साथ विकास करने के नये क्षेत्रों की पहचान करके उन्हें

कौशल विकास योजना

विकसित करने के प्रयास करना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में, "कौशल विकास योजना, केवल जेब में रुपये भरना ऐसा नहीं है, बल्कि गरीबों के जीवन को आत्मविश्वास से भरना है।" इस प्रकार इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- गरीबी के कारण जो बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं उनके अन्दर छिपे कौशल को विकसित करना।
- योजनाबद्ध तरीके से गरीबों और गरीब नौजवानों को संगठित करके उनके कौशल को सही दिशा में शिक्षित करके गरीबी का उन्मूलन करना।
- गरीबी को दूर करने के साथ-साथ गरीब लोगों, परिवारों तथा युवाओं में नया सामर्थ भरके आगे बढ़ने का आत्मविश्वास लाना तथा देश में नयी ऊर्जा लाने का प्रयास करना।
- सभी राज्यों और संघ राज्यों को संगठित करके आई.आई.टी. की इकाईयों के माध्यम से दुनिया में स्वंय को स्थापित करना।
- भारत की लगभग 65% जनसंख्या (जिनकी आयु 35 वर्ष से कम है) को वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिये कौशल एंव अवसर प्रदान करना।
- देश के युवा और नौजवानों के लिये रोजगार उपलब्ध कराने हेतु उन्हें रोजगार के योग्य बनाने के लिये पूरी एक व्यवस्था के निर्माण को देश की प्राथमिकताओं में शामिल करना।
- आने वाले दशकों में पूरी दुनिया में कार्यकुशल जनसंख्या की आवश्यकता को पूरी करने के लिये विश्व के रोजगार बाजार का अध्ययन करके उसके अनुसार देश के युवाओं को प्रत्येक क्षेत्र में आज से ही कुशल बनाना।
- देश के युवा जिस कौशल (जैसेः गाड़ी चलाना, कपड़े सिलना, खाना बनाना, साफ-सफाई करना, मकैनिक का काम करना, बाल काटना, आदि) को परंपरागत रुप से जानते हैं, उसके उस कौशल को और निखारकर व प्रशिक्षित करके उस व्यक्ति के कौशल को सरकार द्वारा मान्यता प्रदान करना।
- सभी तकनीकी संस्थाओं को विश्व में बदलती तकनीकी के अनुसार गतिशील बनाना।

इस कौशल विकास योजना में नया क्या है?

एन.डी.ए. सरकार द्वारा शुरु की गयी कौशल भारत - कुशल भारत योजना नयी योजना नही है इससे पहले यू.पी.ए. सरकार ने भी स्किल डेवल्पड योजना को शुरु किया था। यू.पी.ए. सरकार ने, वर्ष 2022 तक लगभग 500 मिलियन भारतीयों में कौशल विकास करने के लक्ष्य को रखा था। लेकिन एन.डी.ए. सरकार द्वारा इस लक्ष्य को बढ़ाकर 40 करोड़ कर दिया गया है। इस योजना में न केवल उद्यमी संस्थाओं को जोड़ा हैं बल्कि पूरे भारत में कार्यरत सभी गैर-सरकारी संस्थानों से भी संबंध स्थापित किया है। इससे पहले यह योजना 20 मंत्रालयों द्वारा संचालित की जाती थी। अब इसे एक मंत्रालय द्वारा संचालित की जा रही है, जो बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। न केवल स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम नया हैं, बल्कि इसका मंत्रालय और उद्देश्य भी नये है। इससे पहले इसे 20 अलग-अलग मंत्रालयों द्वारा संचालित किया जाता था अब सभी को एक साथ कर दिया गया है। इस तरह यह योजना पूरी तरह से नयी है जो न केवल नये अवसरों, क्षेत्र और स्थानों में कौशल विकास करती है बल्कि जिन क्षेत्रों में कौशल विकास की संभावनाएं हैं उन्हें ढूँढती भी है। इस नये मंत्रालय (कौशल और उद्यमिता विकास मंत्रालय) की भूमिका इन 20 मंत्रालयों के समन्वय के साथ खत्म नहीं होती बल्कि यह कौशल विकास पर चलायी जा रही सभी योजनाओं के लिये जवाबदेय भी है। स्किल इंडिया मिशन के लक्ष्य और दिये जाने वाले प्रशिक्षण के प्रकार कौशल भारत - कुशल

भारत योजना का मुख्य लक्ष्य देश के युवाओं के हुनर को प्रशिक्षण द्वारा निखारकर बाजार योग्य बनाकर प्रमाण-पत्र देते हुये उनके लिए रोजगार का सृजन करना है। प्रधानमंत्री ने इस योजना की घोषणा के समय ही स्पष्ट किया था कि कौशल भारत - कुशल भारत योजना का लक्ष्य युवाओं में कौशल के विकास के साथ-साथ उनका मूल्य संवर्धन करना है।

इस योजना का लक्ष्य भारत में तकनीकी शिक्षण प्रक्रिया में सुधार लाकर उसे विश्व मांग के अनुरुप ढालना हैं। इसके लिये आवश्यक है कि हम अपने शैक्षिक पाठ्यक्रम में विश्व की मांग के अनुसार बदलाव लाये। आने वाले दशकों में किस तरह के कोशल की माँग सबसे अधिक की जायेगी उसका अध्ययन करके अपने देश में उस अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार यदि युवाओं को प्रशिक्षित करेंगे तो भारत के युवाओं को रोजगार के सबसे अधिक अवसर मिलेंगे। इस तरह कौशल भारत - कुशल भारत एक आन्दोलन है, न कि सिर्फ एक कार्यक्रम।

विशेष कार्यक्रम को पूरा करने वाले युवाओं को मंत्रालय द्वारा प्रमाण-पत्र दिया जायेगा। एक-बार प्रमाण-पत्र मिलने के बाद इस सभी सरकारी व निजी, यहाँ तक कि विदेशी संगठनों, संस्थाओं और उद्यमों द्वारा भी वैध माना जायेगा। प्रशिक्षण देने के लिये विभिन्न श्रेणियों को लिया गया है; जैसेः वो बच्चे जिन्होंने स्कूल या कॉलेज छोड़ दिया है, और कुछ बहुत अधिक प्रतिभाशाली लड़कें और लड़कियाँ आदि। इसके साथ ही गाँव के वो लोग जो हस्तशिल्प, कृषि, बागवानी आदि का परंपरागत कौशल रखते हैं, उनकी आय को अधिक करने और उनके जीवन-स्तर में सुधार करने के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। कौशल भारत - कुशल भारत सम्पूर्ण राष्ट्र का कार्यक्रम है।

कौशल भारत - कुशल भारत मिशन के लाभ

कौशल भारत मिशन को अन्तर्गत मोदी सरकार ने गरीब व वंचित युवाओं प्रशिक्षित करके बेरोजगारी की समस्या और गरीबी को खत्म करने का लक्ष्य रखा है। इस मिशन का उद्देश्य उचित प्रशिक्षण के माध्यम से युवाओं में आत्मविश्वास भरना है जिससे कि उनकी उत्पादकता में वृद्धि हो सके। इस योजना के माध्यम से सरकारी, निजी और गैर-सरकारी संस्थानों के साथ-साथ शैक्षिक संस्थाएं भी सम्मिलित होकर कार्य करेंगी। इस मिशन के कुछ मुख्य लाभ निम्नलिखित हैः

कौशल विकास योजना के माध्यम से युवाओं को प्रशिक्षित करके भारत में बेरोजगारी की समस्या के निवारण में सहायता।

- उत्पादकता में वृद्धि।
- भारत से गरीबी खत्म करने में सहायक।
- भारतीयों में छिपी हुई योग्यता को बढ़ावा देने में सहायक।
- राष्ट्रीय आय के साथ-साथ प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि।
- लोगों की जीवन निर्वाह आय में वृद्धि।
- भारतीयों के जीवन-स्तर में सुधार।

प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में, **"मैं भारत को विश्व की कौशल राजधानी बनाने के लिये पूरे राष्ट्र को प्रतिज्ञा करने के लिये आह्वान करता हूँ।"**

कलवरी की कमीशनिंग

आईएनएस कलवरी की कमीशनिग के अवसर पर नेवल डॉकयार्ड में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी नौसेना अधिकारियों से हाथ मिलाते हुए।

दिनांक 14 दिसंबर, 17 को आईएनएस कलवरी की कमीशनिंग के अवसर में रक्षामंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण संबोधन भाषण देते हुए।

आईएनएस कलवरी कमीशनिंग के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी सम्बोधित करते हुए।

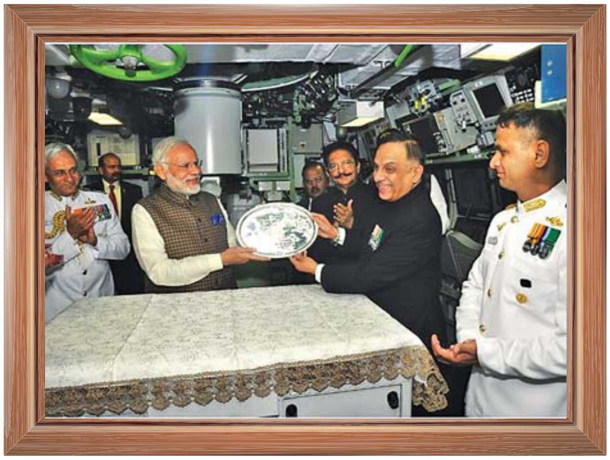

आईएनएस कलवरी की कमीशनिंग के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को पनडुब्बी के अंदर कमोडोर राकेश आनन्द, सीएमडी मोमेंटो भेट करते हुए

करंज की लांचिंग

31 जनवरी '18 को प्रोजेक्ट 75 के तीसरी पनडुब्बी 'करंज'' के जलावतरण के अवसर पर सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द के साथ नौसेना प्रमुख तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति

करंज के जलावतरण के अवसर पर कमोडोर राकेश आनन्द, सीएमडी स्वागत सम्बोधन भाषण देते हुए

नौसेना प्रमुख एडमिरल सुनील लान्बा करंज के जलावतरण के अवसर पर उपस्थित समूह को सम्बोधन करते हुए

जलावतरण के समय उपस्थित नौसेना प्रमुख, सीएमडी, निदेशक (प एवं भाअ) तथा अन्य अधिकारीगण

आपूर्तिकर्ता सम्मेलन और कार्यशाला

आपूर्तिकर्ता के प्रश्नों का जवाब देते हुए सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द

आपूर्तिकर्ता सम्मेलन में प्रश्नोत्तरी सत्र में प्रश्न करते हुए आपूर्तिकर्ता

एमडीएल सीएसआर कार्यक्रम

15 फरवरी'18 को कमोडोर टी वी थॉमस, निदेशक (संयो एवं का) द्वारा शाहपुर के खरडे गाँव में सीएसआर परियोजना का उद्घाटन

सीएसआर कार्यक्रम का ब्योरा लेते हुए निदेशक (संयो एवं का) के साथ डॉ जे एम जंगीर मप्र (स्वदेशीकरण/प्रशासन) एवं कर्वे सामाजिक संस्थान के प्रतिनिधि

समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए नि (संयो एवं का) तथा मप्र (प्र)

कार्यक्रम के दौरान शिशु को पौधा भेंट करते हुए नि(संयो एवं का)

खरडे गाँव में सीएसआर कार्यक्रम में स्थानीय लोगों द्वारा नाटक प्रस्तुतीकरण

सीएसआर कार्यक्रम में कमोडोर टी वी थॉमस नि (संयो एवं का) स्थानीय लोगों को संबोधन करते हुए

गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस पर सम्बोधन करते हुए
कैप्टन राजीव लठ निदेशक, (प एवं भाअ)

कैप्टन राजीव लठ, निदेशक (प एवं भाअ)
सीआरपीएफ़ जवान को पुरस्कार देते हुए

राजभाषा तिमाही बैठक और रोलिंग ट्रॉफी

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में हिंदी की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए श्रीनिवास सिन्हा, उमप्र(मासं एवं राभा)

कमोडोर राकेश आनन्द, सीएमडी से राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी प्राप्त करते हुए पीएससी विभाग के श्री आर डी जगताप, उमप्र

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में भाग लेते अधिकारीगण

माझगांव डॉक की राजभाषा गृहपत्रिका के 8वें अंक का विमोचन करते हुए बाएँ से रियर एडमिरल एके सक्सेना, नि (जनि), कैप्टन राजीव लठ, नि(पन एवं भा.अ), कमोडोर राकेश आनन्द, सीएमडी, कमोडोर टी वी थॉमस, नि (सयो एवं क) और श्री एच एम हरयानी, कानि (जनि-वा)

हमारे अतिथि

श्री रवि कान्त जेएस एवं एएम(एमएस) का एमडीएल दौरा

श्री रवि कान्त, संयुक्त सचिव एवं एएम(एमएस) के साथ सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द और अन्य अधिकारीगण

फ्रांस के नेवल ग्रुप के साथ बैठक में एमडीएल प्रबंधन दल के सदस्य

नेवल ग्रुप फ्रांस के अध्यक्ष एवं सीईओ श्री हार्वे गुल्हो का एमडीएल दौरा के समय स्वागत करते हुए कैप्टन राजीव लठ, नि(प एवं भाअ)

नेवल ग्रुप फ्रांस के अध्यक्ष एवं सीईओ श्री हार्वे गुल्हो के साथ निदेशक (पन एवं भा.अभि)तथा अन्य अधिकारीगण का समूह चित्र

एमडीएल दौरा

श्री सौरभ कुमार, ईरान में भारतीय राजदूत का एमडीएल में स्वागत करते हुए सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द

सीएमडी द्वारा श्री सौरभ कुमार को मोमेंटो भेंट करते हुए

आईएमआईएनटी कोर्स ऑफिसरों को एमडीएल गैलरी का परिचय देते हुए श्री योगीराज पोतनीस, सप्र (मा.सं - अ)

आईएमआईएनटी कोर्स ऑफिसरों को जानकारी देते हुए श्री पी पी घरत, उमप्र

28 मार्च, 2018 को श्रीलंका नौसेना ट्रेनी अधिकारियों को एमडीएल की हेरिटेज गैलरी दिखाते हुए श्री यो पोतनीस, उप्र (मासं - अ)

श्रीलंका नौसेना ट्रेनी अधिकारी को एमडीएल मोमेंटों देते हुए डॉ जे एम जांगीर, मप्र (प्रशासन) के साथ अन्य अधिकारीगण

सत्यनारायण महापूजा और शिव जयंती

एमडीएल परिसर में सत्यनारायण महापूजा समारोह में उपस्थित कर्मचारी

सत्यनारायण महापूजा में उपस्थित बाएँ से श्री संजीव शर्मा, सीएमडी, मप्र (मा सं एवं का सं) एवं कर्मचारीगण

एमडीएल में शिव जयंती के अवसर पर शिवाजी महाराज की मूर्ति पर माला अर्पित करते हुए सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द तथा नगर सेवक श्री यशवंत जाधव

एमडीएल परिसर में शिव जयंती के अवसर उपस्थित बाएँ से श्री डी आर कुलकर्णी, श्री एसएस कांबले, श्री एचएम हरयानी, सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द, सीवीओ श्री सतीश पेंढाकर, श्री एस के मल्लिक मप्र (मा.सं)

शिव जयंती के अवसर पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

कमोडोर राकेश आनन्द, सीएमडी शिव जयंती के अवसर पर संबोधित करते हुए

महिला दिवस कार्यक्रम

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दीप प्रज्वलित करती हुई श्रीमती सीमा आनन्द के साथ श्रीमती शर्मा, श्रीमती पेंढारकर एवं एमडीएल की महिला

महिला दिवस के अवसर पर प्रतिस्पर्धा में प्रतिभागी महिलाएं

प्रतिस्पर्धा का निरीक्षण करते हुए निर्णायक गण

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम में उपस्थित महिलाएं

सेवानिवृत्ति समारोह

सेवा निवृत्त समारोह के अवसर पर निदेशक (वित्त) श्री संजीव शर्मा एवं श्री एस के मल्लिक, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) कर्मचारियों के साथ

श्रीमती बानी डॉक्टर और श्री परवेज़ पंथकी के साथ सीएमडी, कमोडोर राकेश आनन्द

कंपनी में संरक्षा के उपाय

ए के बडालिया
प्रबंधक (संरक्षा)

सामग्री : ऐसीटिलीन डिससाल्वाड

इमरजेंसी ओवरव्यू

⚠ **चेतावनी !!!**

उच्च दबाब गैस के कारण तेजी से घुटन हो सकती है।
इसके कारण चक्कर और निद्रा आ सकती है।

स्वास्थ्य पर संभावित प्रभाव

सिंगल ओवर एक्सपोस का प्रभाव

अन्तः श्वसनः - श्वासावरोध। इसका प्रभाव वायु की कमी के कारण होता है। सामान्य कंसंट्रेशन् के कारण सिरदर्द, निद्रा, चक्कर आना, उत्तेजना, अत्यधिक लार बहना, उबकाई आना, उल्टी और बेहोशी हो सकती है। तरल पदार्थ से उत्पन्न वाष्प निकलने से पेट में असहज दर्द हो सकता है।

त्वचा से संपर्क होने परः वाष्प से किसी क्षति की संभावना नहीं है। तरल से हिमघाव हो सकता है।

नेत्र स्पर्श : वाष्प में ऐसीटोन के होने से आँखों में जलन हो सकती है। तरल पदार्थ से जलन और हिमघाव हो सकता है।

प्रथम उपचार उपाय

अन्तः श्वसनः शुद्ध वायु वाले स्थान पर ले जाए। श्वास लेने में परेशानी हो तो, कृत्रिम श्वसन देने की व्यवस्था करें। यदि श्वसन में तकलीफ हो तो किसी जानकार व्यक्ति से ऑक्सीज़न दिलाए। किसी डॉक्टर को बुलाए।

त्वचा से संपर्क होने परः तरल पदार्थ के अनावरण के लिए, तत्काल हिमघाव के क्षेत्र पर गरम, गरम पानी डालें। भारी अनावरण होने पर, दूषित कपड़ों को गरम पानी में नहाते हुए उतार दें और डॉक्टर को बुलाए।

निगलने पर : यदि तरल पदार्थ निगल लिया गया हो, तो तुरंत दो ग्लास पानी पिलाए और यदि घायल व्यक्ति होश में हो तो उल्टी के लिए प्रवृत करें।

नेत्र से संपर्क होने परः दूषित तरल पदार्थ छिड़कने के मामले में तत्काल, आँखों को 15 मिनिट तक पानी से अच्छी तरह से धोए।

उत्पादः अरगॉन, कम्प्रेस्ड

इमरजेंसी ओवरव्यू

⚠ **चेतावनी !!!**

उच्च दबाब गैस से तेज घुटन हो सकती है।

- चक्कर आना और ऊंघना हो सकता है।

स्वास्थ्य पर संभावित प्रभावः

सिंगल ओवर एक्सपोस का प्रभाव

अन्तः श्वसनः सांस लेने में आक्सीजन की कमी से कठिनाई हो सकती है। सामान्य कंसंट्रेशन् से सिरदर्द, ऊंघना, चक्कर आना, उत्तेजना, अत्यधिक लार बहना, उबकाई आना, उल्टी और बेहोशी हो सकती है। वायु की कमी से मृत्यु भी हो सकती है।

त्वचा के संपर्क होने पर : कोई क्षति नहीं होगी।

आँखों से संपर्क पर: कोई क्षति नहीं होगी।

प्रथम उपचार उपाय

अन्तः श्वसनः तुरंत शुद्ध वायु वाले स्थान पर ले जाए। यदि सांस नहीं लें रहा हो तो उसे, कृत्रिम श्वसन देने की व्यवस्था करें। यदि सांस लेने में तकलीफ हो तो कोई जानकार व्यक्ति पीड़ित को ऑक्सीज़न दे सकता है। डॉक्टर को बुलाए।

त्वचा से संपर्क होने पर : नेत्रों को पानी से धोएँ। यदि तकलीफ हो तो डॉक्टर को दिखाए।

नेत्र से संपर्क होने पर : आँखों को पानी से अच्छी तरह से धोएँ। पलकों को खुला रखें और सुनिश्चित करें कि पूरे आँख को अच्छे तरह से धोया गया हो। यदि तकलीफ जारी हो तो डॉक्टर को दिखाए।

उत्पादः कम्प्रेस्ड गैसेज, एन ओ एस (आरगॉन, कार्बन डाइऑक्साइड)

इमरजेंसी ओवरव्यू

⚠ **चेतावनी !!!**

उच्च दबाब गैस से तेज घुटन हो सकती है। इससे श्वसन और हृदय गति बढ़ सकता है। इसके कारण नौसिया सिस्टम बिगड़ सकता है। सिस्टम को हानि पहुंचा सकती है और इसके कारण चक्कर आना और ऊंघना हो सकता है।

स्वास्थ्य पर संभावित प्रभावः

सिंगल ओवर एक्सपोस का प्रभाव

अन्तः श्वसनः श्वासावरोध। वायु की कमी के कारण असर हो सकता है। कार्बन डाइऑक्साइड के घटक मनोवैज्ञानिक रूप से सक्रिय रहता है, सामान्य कंसंट्रेशन् से सिरदर्द, ऊंघना, नाक और गले में दर्द, उत्तेजना, तेज श्वसन और हृदय गति बढ़ना, अत्यधिक लार टपकना, उल्टी और अचेतना हो सकती है। वायु की कमी से मृत्यु भी हो सकती है।

त्वचा से संपर्क होने पर : कोई क्षति नहीं है।

नेत्र से संपर्क होने परः कोई क्षति नहीं है।

प्रथम उपचार उपाय

अन्तः श्वसनः पीड़ित व्यक्ति को शुद्ध वायु में ले जाए। सांस न लेने की हालत में, कृत्रिम श्वसन देने की व्यवस्था करें। यदि सांस लेने में तकलीफ हो तो किसी जानकार व्यक्ति से ऑक्सीज़न दिलाए। डॉक्टर को शीघ्र बुलाए।

त्वचा से संपर्क होने पर : साबुन युक्त पानी से धोएँ। यदि जलन जारी रहती है तो डॉक्टर को दिखाए।

नेत्र से संपर्क होने परः आँखों को पानी से अच्छे से धोएँ। पलकों को खुला रखेँ और सुनिश्चित करें कि पूरे आँख को अच्छे से धोया गया हो। तकलीफ होने पर, मुख्य रूप से आँखों के डॉक्टर को दिखाएँ।

उत्पादः ऑक्सिजन, कम्प्रेस्ड

एमेर्जेंसी ओवरव्यू

⚠ **चेतावनी !!!**

उच्च दबाब से, गैस का ऑक्सीडिसिंग होता है। प्रबल तीव्र दहन। बचाव कर्मचारियों के लिए स्वतः नियंत्रित श्वास उपकरण लगाना आवश्यक है।

ऐसे परिवेशी स्थिति के अंतर्गत गैस, रंगहीन, सुगंधहीन और स्वादहीन हो सकती हैं।

संभावित स्वास्थ्य पर प्रभावः

सिंगल ओवर एक्सपोस का प्रभाव

अन्तः श्वसनः वातावरण में 80% या उससे अधिक वायुमंडलीय दबाब के कारण ऑक्सिजन कुछ घंटों में अधिक सांस लेने पर

नाक में दम घुटाना, खासी आना, गले में दर्द, छाती में दर्द और सांस लेने में तकलीफ हो सकती है। उच्च दबाव में ऑक्सिजन श्वसन् से कम अवधि में विपरीत परिमाण होने की संभावना अधिक रहती है। उच्च दाब बढ़ने से शुद्ध ऑक्सिजन में श्वसन् क्रिया से फेफड़ों और केंद्रीय स्नायुतंत्र (सेंट्रल नर्वोस सिस्टम) को हानि हो सकती है जिससे चक्कर आना, कमजोर समन्वयन, झुनझुनी आना, दृश्य और श्रवण में बाधा, मांसपेशी में खिंचाव, अचेतनता और मरोड़ हो सकता है। उच्च दबाब में ऑक्सिजन श्वसन् से अंधेरे के अनुकूलन में दीर्घ समय लगाना और बाह्य दृष्टि में कमी हो सकती है।

त्वचा से संपर्क होने पर : कोई क्षति नहीं होती है।

आँखों के संपर्क पर: कोई क्षति नहींहोती है।

प्रथम उपचार उपाय (ऑक्सिजन, कम्प्रेस्ड)

अन्तः श्वसनः तत्काल पीड़ित वक्ती को शुद्ध वायु में ले जाए। यदि सांस लेने में तकलीफ हो तो उसे, कृत्रिम श्वसन् देना चाहिए। पीड़ित वक्ती को गरम और विश्राम करने दें। डॉक्टर को बुलाए। डॉक्टर को बताएं कि पीड़ित व्यक्ति हाई कंसंट्रेशन् ऑफ ऑक्सिजन से प्रभावित है।

त्वचा से संपर्क होने पर: साबुन और स्वच्छ पानी से धोएँ। यदि तकलीफ लगातार रहें तो डॉक्टर को दिखाए।

नेत्र से संपर्क होने पर: आँखों को पानी से अच्छी तरह धोएँ। पलकों को खुला रखेँ और सुनिश्चित करें कि पूरे आँख को अच्छे से धोया गया हो। तकलीफ कायम रहने पर डॉक्टर को दिखाए।

उत्पादः एलपीजी

इमरजेंसी ओवरव्यू

संभावित स्वास्थ्य पर प्रभावः

सिंगल ओवर एक्सपोस का प्रभाव

नेत्र से संपर्क होने पर : इससे अल्प समय के लिए आँखों में हल्की असुविधा हो सकती है। तेजी से गैस बाहर निकालने के कारण दबाब के कारण गैस तरल रहती है वाष्पीय शीतलन की वजह से खुले टिशू (त्वचा, आँख) में हिमदाह हो सकता है।

त्वचा से संपर्क होने पर : परिवेशी तापमान से त्वचा में सामान्य असुविधा हो सकती है। तेजी से गैस बाहर निकालने से दबाब के कारण गैस तरल रहती है वाष्पीय शीतलन की वजह से खुले टिशू (त्वचा, आँख) में हिमदाह हो सकता है।

प्रथम उपचार उपाय

अन्तः श्वसनः पीड़ित व्यक्ति को शुद्ध वायु में ले जाए। यदि सांस अनियमित हो अथवा रुकी हुई हो तो उसे कृत्रिम श्वसन् दिया जाए। ऑक्सीज़न दिया जाए। तुरंत डॉक्टर को बुलाए।

त्वचा से संपर्क होने पर : तरल पदार्थ के एक्सपोजर से तत्काल हिमदहन से प्रभावित स्थान को गुनगुने पानी से धोए जो 41 डिग्री सेल्सियस से अधिक न हो। अत्यधिक एक्सपोजर होने पर, दूषित कपड़ों को पानी से नहाते समय खोल दें। तकलीफ होने पर डॉक्टर को दिखाए।

नेत्र से संपर्क होने पर: आँखों को तुरंत कम से कम 15 मिनिट तक गुनगुने पानी से अच्छी तरह से धोएँ। कोंटैक्ट लेंस को हटाए। पानी से पोंछे। पीड़ित व्यक्ति को तुरंत अस्पताल ले जाएँ। पलकों को आई बॉल से खुला रखे और सुनिश्चित करें कि पूरे आँख को अच्छी तरह से धोया गया हो। यदि आँख में जलन जारी रहे तो डॉक्टर को दिखाए।

विभिन्न सुरक्षा उपकरण

मेक इन इंडिया

जगदीश पाणिग्रही
उमप्र (स्वदेशीकरण)

एमडीएल देश का अग्रणी रक्षा शिपयार्ड है और यह लगभग दो सदियों से अधिक समय से भारत के समुद्री मामलों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत सरकार द्वारा सन् 1960 में अधिग्रहण करने के पश्चात् एक स्वदेशीकृत रणनीतिक जहाज निर्माण का राष्ट्रीय लक्ष्य रखा गया था। एमडीएल ने बड़े पैमाने पर युद्धपोतों, पनडुब्बियों और विभिन्न सहायक तथा वाणिज्यिक जलयानों का निर्माण और सुपुर्दगी किया है। पहला स्वदेशी युद्धपोत आईएनएस नीलगिरी का निर्माण एमडीएल द्वारा किया गया और वर्ष 1972 में भारतीय नौसेना को सुपुर्द किया गया। तत्पश्चात, एमडीएल का निरंतर प्रयास रहा है कि वह जहाजों और पनडुब्बियों के निर्माण में स्वदेशी सामग्री का प्रतिशत उत्तरोत्तर वृद्धि करता रहे। मई 2015 से एमडीएल में मेक इन इंडिया एकक कार्य कर रहा है और इसके आगे स्वदेशीकरण के प्रयासों को अधिक मजबूत करने के लिए एक समर्पित स्वदेशीकरण विभाग की स्थापना की गई है।

युद्धपोत/पनडुब्बियों के रूपांकन और निर्माण का कार्य बहुत ही जटिल और तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि युद्धपोत/पनडुब्बी में बड़ी मात्रा में अभियांत्रिकी, विधुतीय, इलेक्ट्रानिक और पोतकाय एवं आयुध प्रणाली में विविध प्रकार की तकनीकी कौशल प्रौद्योगिकी शामिल होती है। अनेक मुख्य अभियांत्रिकी, इलेक्ट्रानिक और आयुध प्रणालियाँ आज भी आयात की जाती हैं क्योंकि इनका निर्माण भारत में नहीं किया जाता है। आयातित प्रणालियाँ न केवल बहुत महंगी हैं अपितु असंतोषजनक लाईफटाइम सपोर्ट की प्रतिकूल परिस्थितियों से जुड़ी हुई हैं जो पोतों/पनडुब्बियों की मारक क्षमता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती हैं। इसके अलावा, विशेष रूप से युद्ध के दौरान इनका समय से उपलब्ध होना, संतोषजनक रूप से सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है। ऐसी अति निर्भरता विभिन्न प्रणालियों की उच्च लागत वाली प्राप्तियाँ विदेशी कंपनियों से जुड़ी हुई हैं। इसका निराकरण केवल स्वदेशी रूपांकन, विकास और निर्माण उद्योग में प्रोत्साहन देकर किया जा सकता है। **'मेक इन इंडिया'** भारत सरकार का एक लक्ष्य है जो भारत को **'निर्माण केंद्र'** के रूप में तब्दील कर सकता है और काफी हद तक इससे सैन्य मामलों में हम आत्म निर्भर हो सकते हैं।

एमडीएल युद्धपोत/पनडुब्बियों का निर्माण ग्राहक द्वारा प्रदान किए गए विशेष विवरण/मांग के अनुसार करता है और विभिन्न उपकरणों/प्रणालियों को संग्रहीत करके युद्ध के लायक बनाता है। कुछ उपकरण प्रत्यक्ष रूप से युद्धपोतों पर लगाने के लिए ग्राहक द्वारा प्रदान किए जाते हैं और शिपयार्ड में सुसज्जित और एकीकरण के लिए भेजे जाते हैं। इसके अलावा, बड़ी संख्या में अभियांत्रिकी, विधुतीय, इलेक्ट्रानिक और आयुध प्रणालियाँ शिपयार्ड में ग्राहकों द्वारा निर्दिष्ट विक्रेताओं(वेंडरों) से एकल निविदा/ सीमित निविदा जांच के आधार पर प्राप्त की जाती हैं जिससे कि ग्राहक द्वारा निर्दिष्ट तकनीकी और गुणवत्ता शर्तों को पूरा किया जाता है। शिपयार्ड में यह सहूलियत नहीं है कि शेष सामग्री/उपकरण की प्राप्ति विभिन्न विक्रेताओं से प्रतियोगिता के आधार पर करे जिससे कि ग्राहक द्वारा निर्दिष्ट तकनीकी और गुणवत्ता शर्तों को पूरा किया जा सके। फिर भी यह उल्लेख करना आवश्यक है कि अधिकतर उपकरण ग्राहक द्वारा नामांकित किए जाते हैं जो युद्धपोतों/पनडुब्बी में निर्धारित लक्ष्य के अपेक्षित कार्य पर आधारित होते हैं।

स्वदेशीकरण - वर्तमान स्थिति:

युद्धपोतों/पनडुब्बियों के स्वदेशीकृत विषय सूचियों की पहचान अथवा उसकी गणना निम्न विवरण के अनुसार की जा सकती है।

स्वदेशीकरण विषय सूची:- उत्पादन लागत - सामग्री का मूल्य जिसमें उपकरण/प्रणाली/विदेश से प्राप्त मदें – विदेशी सेवा प्रदाता द्वारा दी गई सेवाओं की लागत - पिछले 18 वर्षों में एमडीएल द्वारा प्राप्त स्वदेशीकृत विषय सूची का विवरण युद्धपोतों के निर्माण और सुपुर्दगी के दौरान किया गया है। यह सत्य है कि अभियांत्रिकी (मुव फंक्शन) और आयुध/ इलेक्ट्रानिक प्रणालियां (फाइट फंक्शन) के लिए उपकरण/प्रणाली आवश्यक हैं।

युद्धपोत के तीन चरण फ्लोट, मुव और फाइट फंक्शन् के लिए स्वदेशीकरण विवरण का % निम्नलिखित है।

क्रं सं	परियोजना	पोत	अवधि	स्वदेशीकरण का % सभी प्लेटफॉर्मों के लिए परियोजना		
				फ्लोट	मुव	फाइट
1	पी17	शिवालिक सतपुड़ा सहयाद्रि	2010 2011 2012	97.37	81.17	21.04
2	पी15ए	कोलकाता कोची चेन्नई	2014 2015 2016	89.55	80.97	61.60

इस प्रकार, यह आवश्यक है कि अपेक्षित अभियांत्रिकी, इलेक्ट्रानिक और आयुध प्रणालियों का विकास स्वदेशी रूप से करने के लिए विदेशी विक्रेताओं के साथ रणनीतिक साझेदारी विकसित करते हुए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण करें और शोध एवं विकास संस्थान में पब्लिक एवं प्राइवेट सेक्टर की भागेदारी के रूप में संस्थान का विकास करें और स्टेट ऑफ आर्ट अभियांत्रिकी, इलेक्ट्रोनिक और आयुध प्रणालियों का विकास करें जिससे कि बिना विदेशी निर्भरता के आत्म निर्भर होकर स्टेट ऑफ आर्ट फ्रंटलाइन युद्धपोत/पनडुब्बी का निर्माण कर सके।

बाह्य स्त्रोत (आउटसोर्सिंग)

प्रत्येक ग्राहक उत्पाद की सुपुर्दगी अपेक्षित गुणवत्ता मानकों के साथ समय से या पहले चाहता है। एमडीएल ने हमेशा प्रयास किया है कि विभिन्न परियोजनाओं को संभावित समय सीमा के भीतर अपने निर्माणाधीन विभिन्न उपायों द्वारा पहल कर प्राप्त करें।

बाह्य स्त्रोत (आउटसोर्सिंग) एक ऐसा साधन है जिसका बड़े पैमाने पर उपयोग एमडीएल ने अपना उत्पादन बढ़ाने के लिए किया गया है। इसकी प्राप्ति विभिन्न कोर/नान कोर कार्यों द्वारा अनुभवी और सक्षम विक्रेताओं के सहयोग से किया जा रहा है जो अग्रणी युद्धपोतों और पनडुब्बियों के गुणवत्ता मानक निर्माण को पूरा करने में सक्षम है। बाह्य स्त्रोत का उपयोग आज भी उच्चस्तर पर परियोजना 15बी एवं पी17ए युद्धपोतों के निर्माण के लिए किया जा रहा है यह योजना बनाई गई है कि ब्लॉक कंस्ट्रकशन् का कार्य बाह्य स्त्रोत से प्रसिद्ध एवं सक्षम विक्रेताओं से कराया जाए जिसमें बाह्यसज्जा भी शामिल हो। बाह्य स्त्रोत द्वारा ब्लॉक का निर्माण और बाह्यसज्जा वेंडर परिसर में ही की जाएगी और आखिरी सुसज्जिकरण के लिए एमडीएल में लाया जाएगा।

यह विचार किया गया है कि आउटसोर्सिंग विधि तंत्र विशेष रूप से निर्माण अवधि घटाने, लाभप्रदता सुधारने तथा उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होगी। विभिन्न कार्यों/ सेवाओं की आउटसोर्सिंग करते समय फिर भी यह सुनिश्चित किया जाता है शिपयार्ड की अपनी क्षमता जैसे मानव संसाधन, मशीनरी और परिसंपत्तियाँ बेकार न पड़ी रहें। विभिन्न कार्यों और सेवाओं का विस्तृत विवरण जिनकी आउटसोर्सिंग नियमित रूप से/ अथवा आवश्यकता के आधार पर की जा रही है और नियमित रूप से एमडीएल वेबसाइट पर अद्यतन किया जा रहा है।

सभी वेंडर, जो निर्दिष्ट कार्यों और सेवाओं को पूरा करने में सक्षम हैं उनको सलाह दी जाती है वे अपना पंजीकरण ऑन लाइन एमडीएल से करा लें, जिनसे उनको लाभ होगा और इससे एक लाभप्रद पारदर्शी और प्रतियोगी वातावरण तैयार होगा।

इसके अलावा सयंत्रों/ मशीनरी अनुरक्षण, हाऊसकीपिंग और अन्य विविध सेवाओं के लिए पिछले 6 वर्षों का आउटसोर्सिंग कार्य लागत का विवरण निम्नलिखित है:

वित्तीय वर्ष	आउटसोर्स कार्य/ सेवाओं की लागत परियोजनाओं के लिए उपवर्जित
2009-10	रुपए 199.97 करोड़
2010-11	रुपए 43.15 करोड़
2011-12	रुपए 49.54 करोड़
2012-13	रुपए 41.66 करोड़
2013-14	रुपए 31.53 करोड़
2014-15	रुपए 52.04 करोड़

उपरोक्त से यह देखा जा सकता है कि एमडीएल सक्रिय रूप से परियोजना कार्यों/सेवाओं के अपकीप एवं यार्ड अनुरक्षण दोनों के लिए निजी क्षेत्र के साथ कार्य कर रहा है और कुल मिलाकर कंपनी रोजगार सृजन में विस्तृत रूप से तथा भारतीय जनसाधारण के धन उपार्जन में योगदान कर रही है।

उपकरण/ सामग्री जिसे स्वदेशी करने की योजना है

एमडीएल में स्वदेशीकरण किए जाने वाले उपकरण / सामग्री का विस्तृत विवरण निम्नलिखित है। सूची में उन सामग्रियों का भी समावेश है जिनके लिए वर्तमान विक्रेताओं द्वारा आपूर्ति किए गए सामग्री की गुणवत्ता यातो खराब है अथवा दिए गए उत्पादों की आपूर्ति करने वाले विक्रेताओं की संख्या अपर्याप्त है। सूची में निरंतर संशोधन /सुधार समय-समय पर जारी रहेंगे जो उचित विक्रेताओं की उपलब्धता और शर्त पर आधारित होंगे।

क्रं सं	सामग्री का विवरण	अनुमानित मात्रा अगले 10 वर्षों में आवश्यक होगी	वर्तमान आपूर्ति का स्रोत	फोटोग्राफ
1	एमसीटी ग्लैण्ड्स/ फ्रेंम्स विथ इन्सर्ट ब्लॉक एंड एक्सेसरीस	1) एमसीटी फ्रेंम्स - 600 नग 2) इन्सर्ट मोडुल्स - 200000 नग 3) वेज स्टील, स्टे प्लेट सिलैट, टूल्स इत्यादि, - 70000 नग	1) मेसर्स बीएसटी, मुंबई 2) मेसर्स रोक्सटेक, स्वीडन	

2	यूपीएस	–	वर्तमान समय मंस प्रणाली एवं उपकरण आपूर्ति का अभिन्न अंग, अलग से स्रोत नहीं है	 Ruggadised UPS
3	बैटरी यूनिट	–	वर्तमान समय मंक प्रणाली एवं उपकरण आपूर्ति का अभिन्न अंग है। कोई अलग से आपूर्तिकर्ता नहीं है।	 Battery Box
4	इंडक्शन् मोटर्स	350 नग	1) मेसर्स पोलीफेज मोटर्स, बड़ौदा 2) मेसर्स नरहरी, इंजीनियरिंगस वर्क्स, पालघर 3) मेसर्स केतकी इंजीनियरिंग, प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई 4) मेसर्स एल्मोट आल्टर्नेटर्स प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद	
5	साउंड पावर टेलीफोन	1) सिंगल बे एसपीटी – 350 नग 2) मल्टीबे एसपीटी – 770नग	1) मेसर्स भारत बिजली लिमिटेड, मुंबई/दिल्ली 2) मेसर्स लक्ष्मी हाइड्रोलिक्स प्राइवेट लिमिटेड, सोलापुर	 सिंगल बे मल्टीपल बे
6	कोन्वेंशनल एंड एलईडी बेस्ड एईएलएस	9000 नग	1) मेसर्स रे एनटरप्राइजेस, अम्बाला कैंट 2) मेसर्स मैकगोथ, मैरीन, मुंबई	 AEL-LED

7	लाइटफिटिंग फ्लेम/विस्फोटक प्रमाण सहित	1) डबल्यूटी पेंडेंट लाइट (ओपेल शेड) 12 डबल्यू एलईडी (कुल 15 वाट)- 12000 नग 2) डबल्यूटी पेंडेंट लाइट (रेड शेड) 1 डबल्यू एलईडी (कुल 3 डबल्यू) -3500 नग 3) 24 डबल्यू एलईडी (कुल 30 डबल्यू) ट्यूब लाइट शेप, ओपलशेड - नॉन पैनेलिंग एंड पैनेलिंग के लिए उचित यथाक्रम -2500 और 4500 नग	1) मेसर्स रे एनटरप्राइजेस, अम्बाला कैंट 2) मेसर्स मैकगोथ, मैरीन, मुंबई	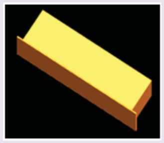
8	शिप इन्स्टालड केमिकल सिस्टम	55 नग	1) मेसर्स स्मिथ डिटेकशन, यूके 2) मेसर्स ब्रुकर, डल्टोनिक्स, जर्मनी ३) मेसर्स एनवाइरोनिक्स, f. फनलैंड	
9	प्रेशर रिडुसिंग स्टेशन	770 नग	1) मेसर्स डाइनामिक कंट्रोल, यूके 2) मेसर्स हेल हैमिल्टन, यूके 3) मेसर्स एसएबी ब्रेमैन, जर्मनी	
10	रिमोट कंट्रोल्ड वाल्व्स	560 नग	सभी सामग्री एक बार निर्मित होती हैं	
11	फायर मेन सिस्टम ले लिए 90/20 सीआईएनआई पाईप्स10 एनबी से 150 एनबी तक	7000 मीटर्स	1) मल्टीमैक्स लिमिटेड, कोटा 2) मेसर्स जयदीप ट्यूबस, मुंबई 3) मेसर्स मेहता ट्यूब, मुंबई	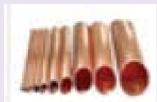

12	70/30 सीयूएनआई पाईप्स 8 एनबी से 100 एनबी तक एचपी एयर/ हाइड्रालिक सिस्टम ले लिए	4000 मीटर्स	1) मल्टीमैक्स लिमिटेड, कोटा 2) मेसर्स जयदीप ट्यूबस, मुंबई	
13	कंटेम्पोरारी फायर फाइटिंग सिस्टम	-	-	-
14	एंकर एंड एंकर चेंस	14 सेट	**एंकर:** 1) मेसर्स - के बाय, फ्रांस गोवर्धन दास पी.ई., कोलकाता 2) मेसर्स चक्रवर्ती ट्रेडर्स, कोलकाता **एंकर चेन:** 1) इंडियन चेन, कोलकाता	
15	हेवी ड्यूटिलिफ्ट्स / क्रेन्स	7 नग	1) मेसर्स हेमंत इंजीनियर्स, मुंबई 2) मेसर्स धन्वन्तरी, इंजीनियर्स, मुंबई	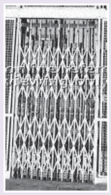
16	बो सोनर डोम	प्रति जहाज 01 सेट	1) मेसर्स एटलस , जर्मनी 2) मेसर्स डबल्यूजे टोड यूके	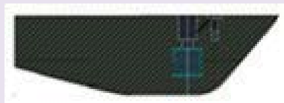
17	वेंटीलेशन फैन	प्रति जहाज 76 नं	1) मेसर्स एक्सिमा, फ्रांस 2) मेसर्स जॉनसन कंट्रोल्स, यूके. 3) मेसर्स आईएमटीईसीएच, जर्मनी	
18	स्मोक एक्स्ट्राक्ट फैन	प्रति जहाज 8 नं	1) मेसर्स एक्सिमा, फ्रांस 2) मेसर्स जॉनसन कंट्रोल्स, यूके. 3) मेसर्स आईएमटीईसीएच, जर्मनी	

स्वच्छता

नितीन घाट्गे
(चिकित्सा विभाग)

शहर-शहर और गाँव-गाँव में,
गली-गली और अपना घर में,
स्वच्छता करें हम सब के संग,
यही नारा दे रहे हर दम।

शुरुआत करें अपने आपसे,
फिर करें अपने परिवार से,
उसके बाद आस-पड़ोस से, फिर
गली, मोहल्ला और अपने विभाग से,
इसी तरह हम सब करें मिलकर शुरुआत
तो होगा अपना
स्वच्छ भारत का सपना साकार।

एसक्यूसी विभाग की एनडीटी प्रक्रिया

विरेश पांचाल
प्र - एसक्यूसी

जहाज निर्माणका गुणवत्ता नियंत्रण विभाग निरंतर अपने ग्राहकों (जैसे भारतीय नौसेना के विविध परीक्षण आवश्यकताओं और उनकी अपेक्षा को पूरा करने हेतु पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। जहाज निर्माण का गुणवत्ता नियंत्रण विभाग संबन्धित परियोजनाओं के वेल्ड्स और सामग्री के नॉन- डिस्ट्राक्टिव टेस्टिंग (एनडीटी के अनुसार योजना के गुणवत्ता निरीक्षण से जुड़ा हुआ है। एनडीटी प्रणाली में जहाज निर्माण की रेडियोग्राफी टेस्टिंग, अल्ट्रासोनिक टेस्टिंग, लिक्विड पेनीट्रेड टेस्टिंग आदि शामिल है।

रेडियोग्राफी टेस्टिंग

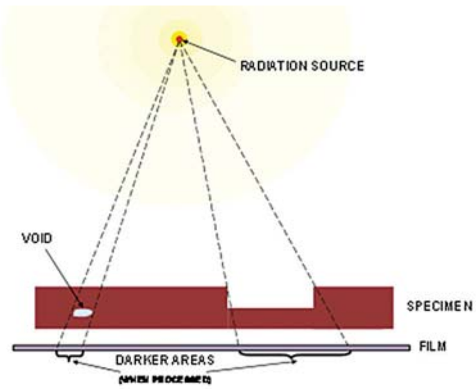

एनडीटी प्रक्रिया में एक्स- रे और गामा विकिरण का प्रयोग सामग्री में असंगति का पता लगाने के लिए किया जाता है और रिकार्डिंग के माध्यम से उनका प्रतिरूप प्रस्तुत किया जाता है।

- एक्स- रे और गामा- रे विद्युत चुम्बकीय विकिरण दृश्य प्रकाश की अपेक्षा लघु प्रकाश तरंग है।
- लघु प्रकाश तरंगसामग्री के भीतर से भेदन परमिट करता है।
- उच्च ऊर्जा स्तर केमिकल बॉन्ड को तोड़ देते हैं।

उत्पादन टीम से रेडियोग्राफी टेस्टिंग हेतु आवेदन प्राप्त करने के पश्चात (शॉप/बर्थ पर वेल्ड जाइंट की रेडियोग्राफी दिए गए प्रणाली के अनुसार बीएआरसी प्रमाणित आरटी तकनीशियनों द्वारा किया जाता है।

वेल्ड जाइंट को ऑन साइट वास्तविक रेडियोग्राफी टेस्टिंग का दर्शाता दृश्य जैसे बल्कहेड का बट्टजाइंट, डेक या यूनिट का रनिंग बट्ट / संयुक्त रूप से ब्लॉक कैरीड जो एसक्यूसी एवं उत्पादन दल के साथ डबल्यूओटी, एनडीटी गुणवत्ता योजना के अनुसार दिखाया गया है।

चित्र 1 - आरटी लोकेशन मर्किंग और सेटअप

विकास प्रक्रिया

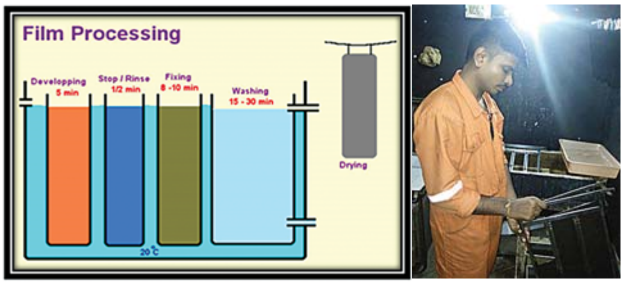

चित्र 2

व्याख्या/ मूल्यांकन से पहले डार्क रूम में फिल्में डिवेलप की जाती हैं, जैसा कि चित्र 2 में दिखाया गया है

अंत में फिल्म की व्याख्या एवं मूल्यांकन किया जाता है जैसा कि चित्र 3 में दिखाया गया है। किसी प्रकार की कमी के लिए एएसएनटी एनडीटी लेवल II/III के कार्मिक द्वारा प्रमाणित होते हैं। वेल्ड और हिट से प्रभावित क्षेत्र के भाग जैसे स्लैग, इंकलुजन, पोरोसिटी, लैक ऑफ पेनेट्रेशन अथवा फ्यूजन, क्रैक, अंडरकट इत्यादि के लिए किया जाता है जैसाकि चित्र 3 में दिखया गया है। यदि कोई कमी पाई जाती है तो, उसे उत्पादन टीम को आगे की कार्यवाही के लिए भेजा जाता है (मरम्मत/पुनर्संशोधन के लिए। कमी का संशोधन करने के बाद, उत्पादन पुनः प्रस्ताव ज्वाइंट के लिए देते हैं और आरटी हेतु फिर से वही सम्पूर्ण प्रणाली दोहराई जाती है।

चित्र 3 - आरटी फिल्म व्याख्या और मूल्यांकन

आरटी की विशेषताएँ

1. अधिकतर सामग्रियों के लिए उपयोग किया जा सकता है।
2. यह एक स्थायी विजुअल इमेज प्रदान करता है।
3. सामग्री के आंतरिक प्रकृति को उजागर करता है।
4. फैब्रिकेशन एरर को प्रकट करता है।
5. स्ट्रक्चरल डिसकॉटिन्युटिज को प्रकट करता है।

आरटी की सीमा

एक्स और गामा- रे द्वारा संरक्षा सोच-विचार पर लागू किया जा सकता है।

1. यह नॉन डिसट्रक्टिव टेस्टिंग माध्यम सापेक्षिक रूप में अधिक खर्चीला है।
2. नमूना में स्वतः टू साइड एक्सेसीबिलिटी होनी चाहिए।

अल्ट्रासोनिक टेस्टिंग

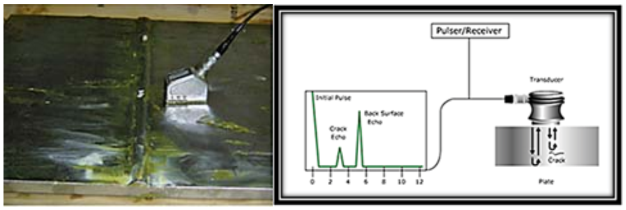

चित्र 4

अल्ट्रासोनिक निरीक्षण एक नॉन डिसट्रक्टिव प्रणाली है जिसमें उच्च क्विेसी की ध्वनि तरंग बीम को सामग्री के ऊपरी सतह और अंत-सतह के दोष को पहचानने के लिए प्रस्तुत जाता है। आरटी की सीमा को अधिक्रमण करने के लिए, जहां वेल्ड जाइंट में टू-साइड एक्सिसिबिलिटी संभव न हो तो यानि फिलेट या टी जाइंट वेल्ड हम निरीक्षण के लिए पूरी प्रणाली का प्रयोग करते हैं।

यह प्रक्रिया है जिसमें 5000 एमएम तक की कमी का पता लगाने के लिए अल्ट्रा साउंड का प्रयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया में केवल नॉन पोरस सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। इस प्रक्रिया का उपयोग किसी सामग्री पर प्रयोग किया जा सकता है, यदि उस सामग्री की वेलोसिटी ज्ञात हो।

सिद्धांत

- ध्वनि ऊर्जा को तरंग के रूप में सामग्री में इंटरोडुयुज और प्रोपगेट किया जाता है।
- जब कभी ध्वनि तरंग अन्य माध्यम के भिन्न ध्वनिक प्रतिबाधा से मिलती है तो ऊर्जा का एक भाग प्रतिक्षिप्त होता है।
- दरार, लेमिनेशन अथवा किसी अन्य डिस्कॉटीनिउटीज़ होने पर भी उपरोक्त क्रिया घटित हो सकता है।
- 20,000 हट्स से अधिक ध्वनि उत्पन्न होने पर है उसे अल्ट्रासाउंड कहते है।
- प्रतिबिम्बित ध्वनि सिग्नल ट्रांसडूसर से विद्युत सिग्नल में रूपांतरित होकर एवं स्क्रीन पर प्रदर्शित होता है।

उत्पादन दल द्वारा अल्ट्रासोनिक टेस्टिंग के लिए अनुरोधप्राप्त होने पर, शॉप या बर्थ में एएसएनटी के प्रमाणित अल्ट्रासोनिक मशीन ऑपरेटर द्वारा दिए गए प्रणाली से वेल्ड जाइंट का यूटी पूरा किया जाता है। जो निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार है।

चित्र 4 में अल्ट्रासोनिक टेस्टिंग मशीन द्वारा वेल्ड जाइंट का निरीक्षण दिखाया गया है। यदि कोई कमी पाई जाती है तो (जैसे कि मरम्मत/ पुनः सुधार उसे उत्पादक टीम को आगे की कार्यवाही करने हेतु सूचित किया जाता है। कमियों के सुधार करने के बाद, उत्पादन जाइंट के यूटी टीम के लिए पुनः आवेदन करता है और इस प्रक्रिया को फिर से दोहराया जाता है।

विशेषताएँ

1. यह सतह और अंतः सतह असंगति दोनों के लिए संवेदनशील है।
2. इसके लिए न्यूनतम भाग की तैयारी आवश्यक है।
3. यह ऑपरेटर्स अथवा निकटवर्ती कर्मचारियों के लिए खतरनाक नहीं है।
4. यह पोर्टेबल एवं किफ़ायती है।
5. यह तत्काल परिणाम प्रस्तुत करता है।
6. इससे सामग्री की अधिकतम मोटाई का निरीक्षण किया जा सकता है।

लिक्विड/ ड्राई पेनिट्रेशन टेस्ट

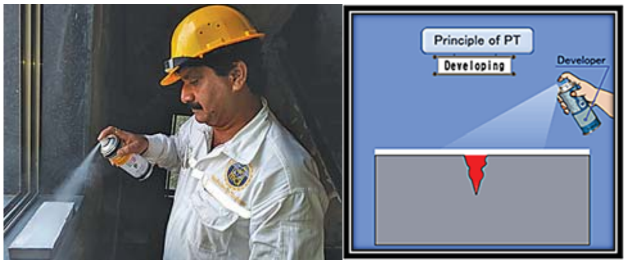

चित्र 5

एलपीटी का प्रयोग सतह की असंगति का पता लगाने के लिए किया जा सकता है जो सतह पर खुला हो और अधिक खुरदरा अथवा छिद्रल न हो। इस पद्धति का उपयोग धातु, काँच, सेरामिक, रबर और प्लास्टिक के लिए किया जाता है। एलपीटी का उपयोग केवल सतह से सतह तक असंगति का पता लगाने के लिए किया जाता है। जैसे वेल्ड में क्रक्स, पोरोसिटी, लैप्स और पिनहोल्स आदि।

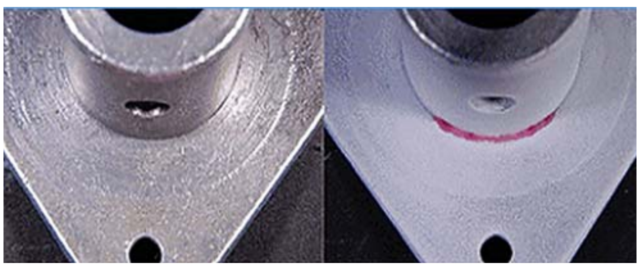

कैपिल्लरी एक्शन

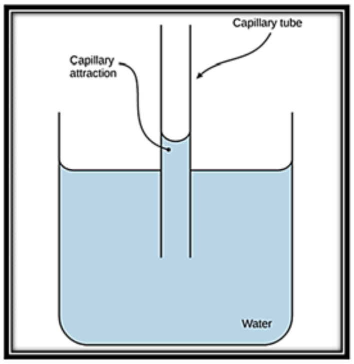

चित्र 5 - लिक्विड और ग्लास सरफेस टेंशन के कारण कैपिल्लरी एक्शन।

डीपीटी प्रक्रिया

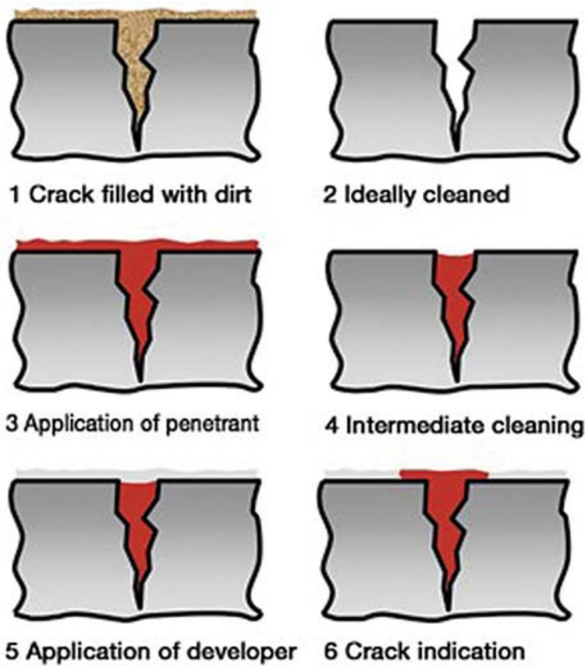

1. सरफेस प्रिपरेशन/ प्रीक्लिलिंग
2. अप्लीकेशन ऑफ पेनेट्रेंट
3. डवेल टाइम
4. एक्सेस पेनेट्रेंट को हटाना
5. डेवलपर का उपयोग करना
6. डेवलपिंग टाइम
7. निरीक्षण करना
8. पोस्ट क्लीनिंग

कार्यशाला या बर्थ उत्पादक दल से ड्राई पेनिट्रेशन टेस्टिंग के लिए अनुरोध प्राप्त होने पर, एएसएनटी के प्रमाणित लेवल -I/II डीपीटी कार्मिक द्वारा निर्धारित प्रणाली से वेल्ड जाइंट का डीपीटीपूरा किया जाता है। चित्र 6 में ड्राई पेनिट्रेटिंग तकनीक द्वारा वेल्ड जाइंट का निरीक्षण दिखाया गया है। यदि कोई कमी पाई जाती है (जैसेकि मरम्मत/ पुर्नसुधार तो उसे उत्पादन टीम द्वारा आगे की कार्यवाही करने हेतु सूचित किया जाता है। कमियों की सुधार के बाद, उत्पादक विभाग जाइंट डीपीटी के लिए पुन: आवेदन करता है और इस प्रक्रिया को फिर से दोहराया जाता है।

विशेषताएँ

1. इसमें सापेक्षिक रूप से कम खर्च होता है।
2. यह हाइली पोर्टटेबल एनडीटी मेथड है।
3. अत्यंत संवेदनशील टु फाइन, टाइट डिस्कंटीन्यूटीज।
4. यह उचित रूप से सरल प्रणाली है।
5. विविध सामग्रियों पर प्रयोग किया जा सकता है।
6. बिना ओरिएंटेशन के, सभी सतह की असंगतियों का एक ही परिचालन में पता लगाया जा सकता है।

पब्लिक इंटरेस्ट डिस्क्लोजर एंड प्रोटेक्शन ऑफ इनफोरमर्स रिजोलुशन एवं व्हिसिल ब्लोअर

यदि कोई अभियोगकर्ता भ्रष्टाचार के केस को उद्घाटित करते समय अपनी पहचान को गुप्त रखना चाहता है तो, वह पब्लिक इंटरेस्ट डिस्क्लोजर एंड प्रोटेक्शन ऑफ इनफोरमर्स रिजोलुशन एवं व्हिसिल ब्लोअर (पीआईडीपीआईआर) -जिसे व्हिसिल ब्लोअर प्रावधान के रूप में सामन्यात: जाना जाता है, के अधीन अपनी शिकायत कर सकता/सकती है। केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) न केवल आभियोगकर्ता के पहचान को गुप्त रखने के लिए अधिदेशाधीन है अपितु वह अभियोगकर्ता के विरुद्ध किसी भी तरह के धमकी, परेशान करने अथवा अत्याचार केविरुद्ध रक्षा भी सुनिश्चित करता है।

पीआईडीपीआईआर 2004 का संक्षिप्त विवरण

श्री सत्येन्द्र दुबे के मृत्यु के पश्चात और उच्चतम न्यायालय में पीएलआई के फाइल होने के उत्तर में, माननीय उच्चतम न्यायालय ने केंद्रीय सरकार को यह निर्देश दिया कि 'व्हिसिल ब्लोअर' से शिकायतों को दुरुस्त करने के लिए एक उचित तंत्र की रचना की जाए जब तक इसके लिए कोई उचित कानून न बन जाए। माननीय उच्चतम न्यायालय के इस निर्देश को पालन करने हेतु केंद्रीय सरकार ने केंद्रीय सतर्कता आयोग को 'मनोनीत अधिकारी' नियुक्त किया, पब्लिक इंटरेस्ट डिस्क्लोजर एंड प्रोटेक्शन ऑफ इनफोरमर्स रिजोलुशन दिनांक 1 अप्रैल, 2004, 'व्हिसिल ब्लोअर' से शिकायतों पर कार्य करना। इस रिजोलुशन के अंतर्गत, जिसे सामान्यत: व्हिसिल ब्लोयर रेजोलुशन के नाम से जाना जाता है, आयोग को यह ज़िम्मेदारी दी गई कि वह पीआईडीपीआई रिजोलुशन के अधीन अभियोगकर्ता द्वारा दायर शिकायत की पहचान को गुप्त रखें, व्हिसिल ब्लोअर को अत्याचार से सुरक्षित रखें और अभियोगकर्ता द्वारा प्रेरक और दुखदायी शिकायत के विरुद्ध कोई भी कार्रवाई कर सकता है। सीवीसी अधिनियम, 2003 आयोग के सतर्कता प्रशासन के अधिकार क्षेत्र को परिभाषित किया है, जहां मुख्य रूप से ग्रुप 'ए' अधिकारियों या उसके समान अधिकारियों को सूचित किया जाएगा, ऐसी कोई प्रतिबंध आयोग पर भारत सरकार के पब्लिक इंटरेस्ट डिस्क्लोजर एंड प्रोटेक्शन ऑफ इनफोरमर्स रिजोलुशन, 2004 में नहीं है।

"व्हिसिल ब्लोअर" के महत्वपूर्ण विशेषताएँ

- आयोग अभियोगकर्ता की पहचान का पता लगाएगा; यदि यह शिकायत बेनामी हुआ, तो इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी।
- अभियोगकर्ता की पहचान तब तक व्यक्त नहीं किया जाएगा जब तक अभियोगकर्ता स्वयं शिकायत का विवरण जनता को अथवा अपनी पहचान को किसी अन्य कार्यालय या प्राधिकारी को न बता दे;
- आगे होने वाले रिपोर्ट/जांच के लिए बुलाने पर, आयोग अभियोगकर्ता की पहचान का खुलासा नहीं करेंगे ,यदि किसी कारणवश पहचान व्यक्त हो जाती है तो संगठन के प्रमुख को भी उसकी पहचान को गुप्त रखने का निवेदन करेंगे;
- आयोग को, जहां आवश्यक हो, सीबीआई या अन्य पुलिस अधिकारियों को बुलाने का अधिकार है; प्राप्त शिकायत के अनुसार जांच पूरी करने के लिए सभी तरह की सहायता प्रदान करने के लिए;
- यदि किसी व्यक्ति को इस आधार पर पीड़ित किया जाता है इस सत्य पर कि उसने केस फाइल दायर किया है या प्रकटीकरण किया था, वह आयोग के समक्ष एक आवेदन देकर इस विषय पर शिकायत निवारण की मांग कर सकता है, जहां आयोग व्यक्ति अथवा संबन्धित प्राधिकारी को उचित निर्देश दे सकता है;
- यदि आयोग को लगे कि अभियोगकर्ता अथवा गवाह को सुरक्षा की आवश्यकता है, तो वह संबन्धित सरकारी प्राधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश जारी करेगा;
- आयोग को यदि पता चलता है कि शिकायत प्रेरित अथवा दुखदायी है, उसे यह छूट है कि वह आवश्यक कार्रवाई करे;
- आयोग किसी तरह के जांच के किसी भी प्रकटीकरण के विषय में जिसे एक प्रारूप अथवा लोक जांच का निर्देश दिया गया हो पब्लिक सरवेंट्स इनक्वारी अधिनियम, 1850 के अधीन अथवा कोई अन्य विषय जिसे कमीशन ऑफ इनक्वारी अधिनियम, 1952 जांच के लिए निर्देश दिया गया है।
- आयोग के निर्देशों के बावजूद अभियोगकर्ता की पहचान हो जाती है, तो आयोग को यह आधिकार है कि वह मौजूदा नियमों के अनुसार उस व्यक्ति के विरुद्ध अथवा संस्थान जिसने ऐसा डिस्क्लोजर किया है पर समुचित कार्रवाई कर सकता है।

(सतर्कता संबंधी राजभाषा अनुभाग की विशेष प्रस्तुति)

हश्र गाँधी की अहिंसा का

मन्ताज अंसारी
सहायक प्रबंधक(जनि-गुण.आश्वा)

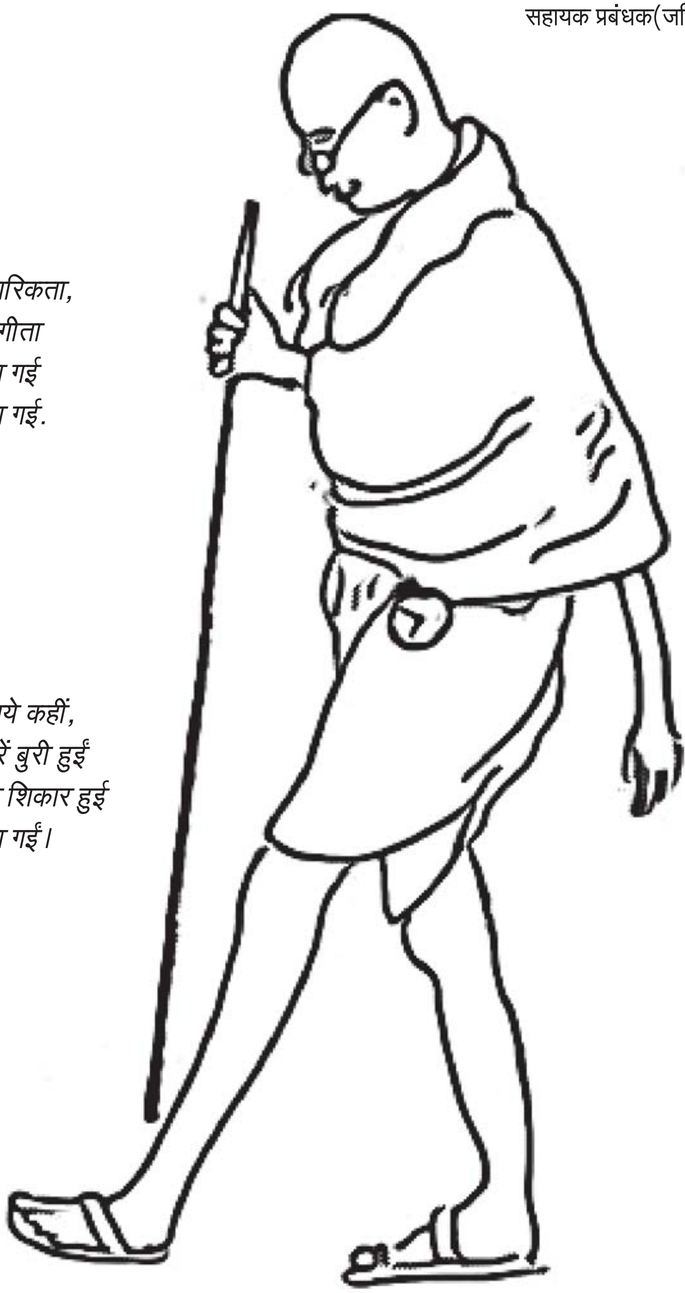

अमानत तेरी अहिंसा की, यूँ लहूलुहान हो गई,
कि यादें तुम्हारी बापू, बरबस हमें रुला गई

साबरमती का फलसफा, तेरी विश्वनागरिकता,
तेरा कुरान, बाइबिल, जीवन के गीत गीता
गर्दो गुबार बारूदों के नीचे, यूँ सब आ गई
कि यादें तुम्हारी बापू, बरबस हमें रुला गई.

चरखा तेरा, लाठी तेरी, घुटने तक की धोती तेरी
सब जियें तब ही जियें, मानवता की यह नीति तेरी
दहशतगर्दी अट्टहास में, सब के सब यूँ घबरा गई
कि यादें तुम्हारी बापू, बरबस हमें रुला गई

औरों की बात और रही, घर भी न जाये कहीं,
बेटी तेरी अहिंसा पर, अपनों की नजरें बुरी हुईं
नस्लो-नक्सल के हवस की, ऐसी यह शिकार हुई
कि यादें तुम्हारी बापू, बरबस हमें रुला गईं।

स्वच्छ गंगा

सिमनलाल आर्य
हिन्दी लिपिक

भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी गंगा जो भारत और बांग्लादेश में मिलाकर 2510 किमी की दूरी तय करती हुई उत्तराखण्ड में हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी के सुंदरवन तक विशाल भू-भाग को सींचती है, देश की प्राकृतिक संपदा ही नहीं, जन-जन की भावनात्मक आस्था का आधार भी है। 2071 किमी तक भारत तथा उसके बाद बांग्लादेश में अपनी लंबी यात्रा करते हुए यह सहायक नदियों के साथ दस लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के अति विशाल उपजाऊ मैदान की रचना करती है। सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण गंगा का यह मैदान अपनी घनी जनसंख्या के कारण भी जाना जाता है। 100 फीट (31 मीटर) की अधिकतम गहराई वाली यह नदी भारत में पवित्र मानी जाती है तथा इसकी उपासना माँ और देरी के रूप में की जाती है। भारतीय पुराण और साहित्य में अपने सौंदर्य और महत्त्व के कारण बार-बार आदर के साथ वंदित गंगा नदी के प्रति विदेशी साहित्य में भी प्रशंसा और भावुकता पूर्ण वर्णन किये गए हैं।

वैज्ञानिक मानते हैं कि इस नदी के जल में बैक्टीरियोफेज नामक विषाणु होते हैं, जो जीवाणुओं व अन्य हानिकारक सूक्ष्मजीवों को जीवित नहीं रहने देते हैं। गंगा की इस असीमित शुद्धिकरण क्षमता और सामाजिक श्रद्धा के बावजूद इसका प्रदूषण रोका नहीं जा सका है। फिर भी इसके प्रयत्न जारी हैं और सफाई की अनेक परियोजनाओं के क्रम में नवंबर 2008 में भारत सरकार द्वारा इसे भारत की राष्ट्रीय नदी तथा इलाहाबाद और हल्दिया के बीच (1600 किलोमीटर) गंगा नदी जलमार्ग को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया गया।

गंगा का उद्गम

गंगा नदी की प्रधान शाखा भागीरथी है जो हिमालय के गोमुख नामक स्थान पर गंगोत्री नामक हिमनद से निकलती है। गंगा के इस उद्गम स्थल की ऊँचाई 3170 मीटर है। यहाँ गंगाजी को समर्पित एक मंदिर भी है। गंगोत्री तीर्थ शहर से 17 कि.मी. उत्तर की ओर 3892 मी (12, 770 फी.) की ऊँचाई पर इस हिमनद का मुख है। यह हिमनद 25 कि.मी. लंबा व 4 कि.मी. चौड़ा और लगभग 40 मी. ऊँचा है। इसी ग्लेशियर से भागीरथी एक छोटे से गुफानुमा मुख पर अवतरित होती है। इसका जल स्रोत 5000 मी. ऊँचाई पर स्थित एक बेसिन है। इस बेसिन् का मूल पश्चिमी ढलान की सतोपथ की चोटियों में है। गोमुख के रास्ते में 3600 मी. ऊँचे चिरबासा ग्राम से विशाल गोमुख हिमनद के दर्शन होते हैं। इस हिमनद में नंदा देवी, कामत पर्वत एवं त्रिशूल पर्वत का हिम पिघल कर आता है। यद्यपि गंगा के आकार लेने में अनेक छोटी धाराओं का योगदान है लेकिन छह बड़ी और उनकी सहायक पांच छोटी धाराओं का भौगोलिक और सांस्कृतिक महत्त्व अधिक है।

गंगा को सबसे बड़ा खतरा प्रदूषण से

गंगा को साफ करना भारत सरकार के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। इसमें सबसे बड़ी चुनौती गंगा में हर तरफ से आ रहा मल-मूत्र का कचरा, औद्योगिक कचरा, बूचड़खानों का कचरा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने 1984 में गंगा बेसिन् में सर्वे के बाद अपनी रिपोर्ट में गंगा के प्रदूषण पर गंभीर चिंता जताई थी। इसके आधार पर पहला गंगा एक्शन प्लान 1985 में अस्तित्व में आया। इसके अन्तर्गत काम शुरू भी किया गया, लेकिन सफलता बेहद कम मिली। यह प्लान 15 वर्ष तक चला। इस पर 901 करोड़ रुपये खर्च हुए। मार्च 2000 में इसे बंद कर दिया गया। इसी बीच अप्रैल 1993 में तीन और नदियों यमुना, गोमती और दामोदर के साथ गंगा एक्शन् प्लान-दो शुरू किया गया जो 1995 से प्रभारी है। दिसंबर 1996 में गंगा एक्शन प्लान-दो को राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना में विलय कर दिया गया। फरवरी 2009 में राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन अथॉरिटी (एनआरजीबीए) का गठन किया गया। इसमें गंगा के साथ यमुना,

गोमती, दामोदर व महानंदा को भी शामिल किया गया। मोदी सरकार ने 2014 में 'नमामि गंगे' कार्यक्रम शुरू किया। 1995 से 2014 तक की गंगा सफाई की इन योजनाओं पर 4, 168 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। इसमें छोटी-बड़ी 927 योजनाओं पर काम करते हुए 2, 618 मिलियन लीटर प्रतिदिन (एमएलडी) क्षमता हासिल की गई। इनके अन्तर्गत कुछ परियोजनाएं अभी भी चल रही हैं।

गंगा नदी विश्व भर में अपनी शुद्धीकरण क्षमता के कारण जानी जाती है। लंबे समय से प्रचलित इसकी शुद्धीकरण की मान्यता को वैज्ञानिक आधार भी है। नदी के जल में प्राणवायु (ऑक्सीजन) की मात्रा को बनाए रखने की असाधारण क्षमता है। लेकिन गंगा के तट पर घने बसे औद्योगिक नगरों के नालों की गंदगी सीधे गंगा नदी में मिलने से गंगा का प्रदूषण पिछले कई सालों से भारत सरकार और जनता की चिंता का विषय बना हुआ है। औद्योगिक कचरे के साथ-साथ प्लास्टिक कचरे की बहुतायत ने गंगा जल को भी बेहद प्रदूषित किया है। वैज्ञानिक जाँच के अनुसार गंगा का बायोलाजिकल ऑक्सीजन स्तर 3 डिग्री (सामान्य) से बढ़कर 6 डिग्री हो चुका है। गंगा में 2 करोड़ 90 लाख लीटर प्रदूषित कचरा प्रतिदिन गिर रहा है। विश्व बैंक रिपोर्ट के अनुसार उत्तर-प्रदेश की 12 प्रतिशत बीमारियों की वजह प्रदूषित गंगा जल है। यह घोर चिंता का विषय है कि गंगा-जल न स्नान के योग्य रहा, न पीने के योग्य रहा और न ही सिंचाई के योग्य। गंगा के पराभव का अर्थ होगा, हमारी समूची सभ्यता का अन्त। शहर की गंदगी को साफ करने के लिए संयंत्रों को लगाया जा रहा है और उद्योगों के कचरों को इसमें गिरने से रोकने के लिए कानून बनाए गए हैं। इसी क्रम में गंगा को राष्ट्रीय धरोहर भी घोषित कर दिया गया है और गंगा एक्शन प्लान व राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना लागू की गई है। हालांकि इसकी सफलता पर प्रश्नचिन्ह भी लगाए जाते रहे हैं। जनता भी इस विषय में जागृत है। इसके साथ ही धार्मिक भावनाएं आहत न हों इसके भी प्रयत्न किए जा रहे हैं। इतना सब कुछ होने के बावजूद गंगा के अस्तित्व पर संकट के बादल छाए हुए हैं। 2007 की एक संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट के अनुसार हिमालय पर स्थित गंगा की जलापूर्ति करने वाले हिमनद की 2030 तक समाप्त हो जाने की आशंका है। इसके बाद नदी का बहाव मानसून पर आश्रित होकर मौसमी ही रह जाएगा।

गंगा को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए सरकार की नमामि गंगे योजना

गंगा को निर्मल और अविरल बनाने के काम पर लगभग 40 से 50 हजार करोड़ रुपये तक का खर्च का अनुमान है। जबकि सरकार ने फिलहाल इस काम के लिए 20 हजार करोड़ रुपए आवंटित किए हैं। गंगा को स्वच्छ करने में पाँच वर्ष का समय लगने की उम्मीद है, जबकि उसके घाटों के सौंदर्यीकरण व परिवहन की समूची योजना के क्रियान्वयन में लगभग डेढ़ दशक लग सकते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि गंगा की स्थिति दुनिया की अन्य नदियों से भिन्न है। इसमें हर रोज लाखों लोग डुबकी लगाते हैं। करोड़ों लोगों की आस्था के महाकुंभ जैसे आयोजन होते हैं। सैकड़ों टन पूजन सामग्री भी इसमें प्रवाहित होती है। इस नदी की सफाई के लिए कई बार पहल की गयी लेकिन कोई भी संतोषजनक स्थिति तक नहीं पहुँच पाया। प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी ने गंगा नदी में प्रदूषण पर नियंत्रण करने और इसकी सफाई का अभियान चलाया। इसके बाद उन्होंने जुलाई 2014 में आम बजट में 'नमामि गंगे' नामक एक परियोजना आरम्भ की। इसी परियोजना के हिस्से के रूप में भारत सरकार ने गंगा के किनारे क्रित 48 औद्योगिक इकाइयों को बन्द करने का आदेश दिया है। विभिन्न उपकरणों की मदद से विशेष सफाई अभियान चलाया जा रहा है। जून 2015 से इसे आठ शहरों के कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, मथुरा-वृंदावन, पटना, साहिबगंज, हरिद्वार व नवद्वीप में पायलट परियोजना के रूप में शुरू किया गया। यह काम घाटों पर किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत इसमें ट्रेश स्कीमर, एरेटर्स, बूम आदि उपकरणों का उपयोग किया जाएगा। यह मशीनें 50 हजार से लेकर 16 करोड़ रुपये तक की हैं। श्रद्धालुओं को उनके परिजनों के नाम से दान देने के लिए कहा जाएगा और शिलापट्ट पर उनके नाम भी लिखे जाएंगे। सफाई के लिए 10 से 20 लोगों के समूहों को 10 से 20 दिन के लिए बुलाया जाएगा। इन वालंटियरों को ठहरने व खाने की व्यवस्था के साथ अच्छी खासी प्रोत्साहन राशि भी दी जाएगी। साथ ही आधुनिक शवदाह गृह, मॉडल धोबी घाट और अन्य घाटों पर सोलर पैनल आदि बनाए जाएंगे।

इस सबके बावजूद समूची गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त करना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसकी सफलता के लिए जरूरी है कि सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं, वाणिज्यिक उपक्रम और धार्मिक संस्थान भी पूरी ईमानदारी के साथ इस राष्ट्रीय कार्यक्रम से जुड़ें। गंगा के आस-पास रहने वाले प्रत्येक भारतीय का भी यह नैतिक कर्तव्य बनता है कि वह इस राष्ट्रीय कार्यक्रम में जिस रूप में भी संभव हो अपना सकारात्मक योगदान करें।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

एस के दलाल
मुप्र (मासं - समवाय)

"जब स्वभाव को धर्म के सिद्धांतो के अनुसार बदला जाता है, तब हमें संस्कृति और सभ्यता प्राप्त होती है।"

अपने उच्च विचारों द्वारा भारत के लोगों के दिलों - दिमाग में खास जगह बनाने वाले और 'एकात्म मानववाद' जैसी प्रगतिशील विचारधारा देने वाले, राष्ट्रीय जनसंघ के अध्यक्ष पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी भारत के सबसे तेजस्वी एवं यशस्वी चिंतकों में से एक रहे हैं।

संघर्षपूर्ण बचपन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म 25 सितम्बर सन् 1916 को ग्राम चन्द्र्भान, फराह, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वह एक मध्यम वर्गीय परिवार से थे। उनके पिता का नाम श्री भगवती प्रसाद और माता का नाम रामप्यारी था।

रेलवे में सहायक स्टेशन मास्टर के पद पर होने के कारण पंडित जी के पिता ज़्यादातर घर से दूर रहते थे। धार्मिक सोच रखने वाली रामप्यारी भगवती प्रसाद की गैर मौजूदगी में घर की जिम्मेदारी निभाती थी। कुछ समय बाद इनके छोटे भाई शिवदयाल का जन्म हुआ।

दीनदयाल उपध्याय की आयु महज ढाई साल की थी, उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। पिता की मृत्यु के बाद इनकी माँ अक्सर बीमार रहने लगी और 8 अगस्त 1924 का दिन पंडित जी के लिए उनके जीवन का सबसे दुखदायी दिन था। इसी दिन इनकी माँ का निधन हुआ और 7 साल की उम्र में दीनदयाल उपाध्याय माता-पिता दोनों के प्यार से वंचित हो गए।

परिवार में गरीबी के कारण उनका पालन-पोषण उनके नाना के यहाँ होने लगा। उनके नाना धनिकया, राजस्थान में रेल्वे मास्टर थे। जब बालक दीनदयाल की आयु 10 वर्ष की थी तब उनके नानाजी का भी देहांत हो गया।

नानाजी के गुजर जाने के बाद उनके मामा ने इनका पालन-पोषण बिल्कुल अपने बच्चों की तरह करना शुरू कर दिया। छोटी-सी उम्र में ही दीनदयाल उपाध्याय के ऊपर खुद की देख-भाल के साथ-साथ अपने छोटे भाई को सम्भालने की ज़िम्मेदारी आ गयी।

कोई आम मनुष्य इन विपदाओं के आगे घुटने टेक देता, लेकिन दीनदयाल जी तो अलग ही मिट्टी के बने थे। दुखों का पहाड़ टूटने के बावजूद भी उन्होने कभी हार नहीं मानी और सकारात्मक के साथ आगे बढ़ते रहे।

शिक्षा-दीक्षा

शिक्षा प्राप्त करने के लिए पंडित जी को सीकर जिला के विद्यालय में दाखिल कराया गया और हाई स्कूल की बोर्ड परीक्षा में उन्होने टॉप किया।

इस उपलब्धि के लिए तत्कालीन महाराजा कल्याण सिंह ने उन्हें गोल्ड मेडल से सम्मानित किया, साथ-ही-साथ 10 रुपये प्रति मास की छात्रवृति और 250 रूपये किताबों के लिए भी भेंट किये।

दीनदयाल जी बचपन से ही बुद्धिमान और मेहनती थे। उन्होने अपनी इंटर की शिक्षा बिरला कॉलेज, पिलानी से पास की और सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर से 1939 में ग्रेजुएशन की डिग्री फर्स्ट डिवीजन से प्राप्त की।

अपनी पढ़ाई को उन्होने आगे जारी रखने के लिए सेंट जोन्स कॉलेज, आगरा में दाखिला लिया और वह अँग्रेजी साहित्य में एम.ए की पढ़ाई करने लगे। उन्होने एम.ए प्रथम वर्ष की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की किन्तु ममेरी बहन के अचानक बीमार पड़ जाने के कारण उनकी सेवा में व्यस्त हो गये और एम.ए की पढ़ाई अधूरी छोड़ दी।

अपने मामाजी के कहने पर पंडित जी इंडियन सिविल सर्विस की परीक्षा में बैठे और उत्तीर्ण हुए। साक्षात्कार में भी चुन लिए गए लेकिन नौकरी में रुचि न होने के कारण वह एल. टी. पढ़ाई करने प्रयाग (इलाहाबाद) चले गए। अपनी पढ़ाई पूर्ण करने के साथ ही द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक बन गए। वह संघ के प्रचारक ही रहे। 1942 से 1951 तक उन्होंने उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में जीवनव्रती प्रचारक के नाते दायित्व वहन किया।

दीनदयाल उपाध्याय के इस निर्णय से उनके परिजन बहुत परेशान हुए। उनके मामाजी उनसे इसलिए नाराज थे कि प्रशासनिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बावजूद प्रशासन की नौकरी करना स्वीकार नहीं किया। अध्यापकीय क्षेत्र में अपनी रुचि के कारण उन्होने कानपुर से बीटी किया था। सन् 1942 में उन्होने एल. टी. परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली, यह उनके विधार्थी जीवन का आखिरी सोपान था। परिजनों की अपेक्षा थी कि प्रशासक न सही दीनदयाल अध्यापक की नौकरी तो अब स्वीकार कर ही लेंगे लेकिन तब उन्हें बहुत दुख हुआ, जब दीनदयाल घर-द्वार छोड़कर सन्यासीवत् संघ के जीवनीव्रती प्रचारक बन गए। उनकी नियुक्ति उत्तर प्रदेश के लखीमपुर जिले में जिला प्रचारक के रूप में हुई।

इसके बाद उन्होने न विवाह किया और ही धनोपर्ज़न का कोई कार्य किया बल्कि अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र निर्माण और सार्वजनिक सेवा में लगा दिया।

समाज सेवा के प्रति समर्पण व आर.एस. एस. से जुड़ाव

1937 में कानपुर में अपनी बी.ए. की पढ़ाई के दौरान वह अपने सहपाठी श्री बालुजी महाशब्दे और श्री सुंदर सिंह भंडारी के साथ

कच्छ बचाव अभियान में दीनदयाल जी के साथ अटल बिहारी वाजपेयी एवं अन्य कार्यकर्ता

मिलकर समाज सेवा करने लगे। इन्ही दिनों वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के संस्थापक डॉ. हेडगेवार व संघ कार्यकर्ता भाऊराव देवरस के संपर्क में आये।

आर.एस.एस की विचारधारा से प्रभावित होकर वह भी संघ से जुड़ गए। संघ की शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए वह 1939 में आर.एस.एस के 40 दिवसीय नागपुर शिविर में शामिल हुए।

पत्रकारिता

श्री भाउराव देवरस से प्रेरणा पाकर सन् 1947 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने लखनऊ में 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन' स्थापित किया जिसके अंतर्गत मासिक पत्रिका 'राष्ट्रधर्म' प्रकाशित एवं प्रसारित की जाने लगी। बाद में यहाँ से 'पाञ्चजन्य' साप्ताहिक और दैनिक समाचार पत्र 'स्वदेश' का भी प्रकाशन हुआ। प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य हिन्दू विचारधारा को बढ़ावा देना था।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि यह सभी प्रकाशन आज तक चल रहे हैं। 'पाञ्चजन्य' दिल्ली से तथा 'स्वदेश' और 'राष्ट्रधर्म' लखनऊ से प्रकाशित होते हैं। स्वदेश का नाम अब बदलकर 'तरुण भारत' कर दिया गया है।

यह उल्लेखनीय है कि पंडित जी कभी इन प्रकाशनों के प्रत्यक्ष संपादक नहीं रहे, लेकिन वास्तविक संचालक, संपादक व आवश्यकता होने पर उसके कम्पोजीटर, मशीनमैन व छोटे-बड़े सभी काम उन्होंने खुद किये। वह छोटे से छोटा काम भी अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध नहीं मानते थे। वह हमेशा कार्य को महत्व देते थे, पद और स्तर को नहीं।

लेखन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी एक अच्छे साहित्यकार व लेखक भी थे। 1946 में जब संघ से जुड़े विचारधारा को किशोरों तक सरल शब्दों में पहुँचने की बात आयी तो पंडित जी ने बिना किसी से कुछ कहे रात भर जाग कर चाणक्य और सम्राट चंद्रगुप्त को केंद्र में रखकर 'सम्राट चन्द्रगुप्त' नाम से एक उपन्यास लिख डाला। अगली सुबह जब उन्होंने यह पुस्तक भाउराव जी को प्रदान की, तो सभी आश्चर्य चकित थे।

इस उपन्यास की सफलता के बाद युवाओं के लिए भी कुछ ऐसे ही लेखन की मांग उठी और उन्होने 'जगतगुरु शंकराचार्य' नाम से अपना दूसरा उपन्यास लिखा।

इसके बाद उन्होने कोई उपन्यास नहीं लिखा लेकिन अपने विचारों को विभिन्न लेखों के माध्यम से लिखते रहे, जिनमें प्रमुख हैं-

अखंड भारत क्यों?, राष्ट्र-जीवन की समस्यायें, राष्ट्र चिंतन, राष्ट्र जीवन की दिशा, भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन। पंडित जी ने आर.एस.एस के संस्थापक श्री के. बी. हेडगेवार के ऊपर मराठी में लिखे गये जीवन-चरित्र का अनुवाद भी हिंदी में किया।

पंडित जी स्वाध्याय पर बहुत ज़ोर देते थे। उनका मानना था कि पठन-पाठन और चिंतन-मनन के सहारे ही मनुष्यज्ञान को आत्मसात करता है।

राजनीति में पदार्पण

अपने जीवन में सफलता की अनेक सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद पंडित जी ने स्वयं को पूर्ण रूप से देश के प्रति अर्पित कर दिया। 21 अक्टूबर सन् 1951 को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने आर. एस. एस को विश्वास में लेकर भारतीय जनसंघ की स्थापना किया।

सन् 1952 में कानपुर में हुए पार्टी के पहले अधिवेशन् में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी को इस नवीन दल का महामंत्री निर्वाचित किया गया। यहीं से अखिल भारतीय स्तर पर पंडित जी की राजनैतिक यात्रा प्रारंभ हुई। पंडित जी ने प्रथम अधिवेशन में ही अपने वैचारिक क्षमता का परिचय देते हुए 7 प्रस्ताव प्रस्तुत किये और सभी को पारित करा लिया।

उनकी कार्यक्षमता, परिश्रम और परिपूर्णता के गुणों से प्रभावित हो कर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था-

सभा में भाषण देते हुए दीनदयाल जी

"यदि मुझे ऐसे दो दीनदयाल मिल जाएं तो मैं देश का राजनीतिक नक्शा बदल दूंगा।"

डॉ. साहब की बाते पंडित जी का हौसला और भी बढ़ाती थी। परंतु 1953 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की आकस्मिक मौत हो गयी और संघ को ठीक से चलाने का उतरदायित्व दीनदयाल जी और अन्य सदस्यों पर आ गया।

जन सेवा में समर्पित जीवन

पंडित जी राष्ट्र निर्माण व जनसेवा में इतने लीन थे कि उनका कोई व्यक्तिगत जीवन ही नहीं था। बाकी का जीवन आर. एस. एस. और जनसंघ को मजबूत बनाने और इन संगठनो के माध्यम से राष्ट्र की सेवा करने में अर्पित कर दिया।

दीनदयाल उपाध्याय के विचार उन्हें औरों से बिल्कुल अलग साबित करते हैं। उनकी अवधारणा और चिंता का विषय था कि-

"लम्बे वर्षो की गुलामी के पश्चात् कहीं पश्चिमी विचारधारा भारतीय संस्कृति पर हावी न हो जाये।"

भारत एक लोकतांत्रिक देश बन चुका था, परन्तु पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के मन में भारत के विकास को लेकर चिंता थी। वे मानते थे कि लोकतंत्र भारतीयों का जन्मसिद्ध अधिकार है न कि अँग्रेजी का एक उपहार। उनका मकसद था कि कर्मचारियों और मजदूरों को सरकार की शिकायतों के समाधान पर ध्यान देना चाहिए और प्रशासन् का कर्तव्य होना चाहिए कि वह राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करें।

उनके अनुसार लोकतंत्र अपनी सीमाओं से परे नहीं जाना चाहिए, यही देश की उन्नति और प्रगति के लिए श्रेष्ठ होगा।

एकात्म मानववाद

पंडित दीनदयाल जी ने एकात्म मानववाद के आधार पर एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना किया जिसमें विभिन्न राज्यों की संस्कृतियाँ विकसित हों और एक ऐसा मानव धर्म उत्पन्न हो जिसमें सभी धर्मों का समावेश हो, जिसमें व्यक्ति को समान अवसर और स्वतंत्रता प्राप्त हो जो एक सुदृढ़, सम्पन्न एवं जागरूक राष्ट्र कहलाये।

पंडित जी के शब्दों में एकात्म मानववाद का सार इस तरह है-

"हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था का केंद्र 'मानव' होना चाहिए। जो 'यत पिंडे तत ब्रह्मांडे' के न्याय के अनुसार समिष्ट का जीवमान प्रतिनिधि एवं उसका उपकरण है। भौतिक चीजें मानव के सुख के साधन हैं, साध्य नहीं।"

पंडित जी का मानना था कि व्यक्ति का अर्थ सिर्फ उसका शरीर नहीं है, बल्कि उसका मन, बुद्धि, और आत्मा भी है। यदि इन चारों में से किसी एक की भी उपेक्षा की जाए तो व्यक्ति का सुख विकलांग हो जाएगा।

भारतीय जन संघ के अध्यक्ष और अकस्मात मृत्यु

सन् 1951 से सन् 1967 तक यानि 16 वर्षों तक वे भारतीय जनसंघ के महामंत्री रहे। 29 दिसम्बर 1967 को उन्हें पार्टी का अध्यक्ष चुन लिया गया। पर यह विडम्बना ही कही जायेगी कि पंडित जी सिर्फ 44 दिनों तक ही बतौर अध्यक्ष कार्य कर पाए और बाद में रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गयी। 11 फरवरी, 1968 को पंडित जी का मृत शरीर मुगल सराय रेल्वे स्टेशन पर पाया गया। वह ट्रेन से लखनऊ से पटना जा रहे थे।

पंडित जी हमेशा पैसेंजर ट्रेन की तृतीय श्रेणी में यात्रा करते थे ताकि वह रास्ते में अधिक से अधिक कार्यकर्ताओं से मिल सकें, परंतु अध्यक्ष बनने के बाद पार्टी सदस्यों ने उनके लिए प्रथम श्रेणी का टिकट बुक कर दिया था और यह सफर उनका आखिरी सफर बन कर रह गया।

उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर पूरा देश शोकमय हो गया। दीनदयाल उपाध्याय जी के चाहने वालों पर अचानक बिजली टूट पड़ी।

देश को एक नयी विचारधारा प्रदान करने वाले पंडित की मृत्यु किस कारण हुई, यह सवाल आज भी एक पहेली बना हुआ है।

इस महान नेता, पत्रकार, साहित्यकार, अर्थशास्त्री, इतिहासकर के पार्थिव शरीर को 12 फरवरी, 1968 को श्रद्धांजलि देने के लिए दिल्ली के राजेंद्र प्रसाद मार्ग ले आया गया। जहां लोगों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, राष्ट्रपति डॉ.जाकिर हुसैन और श्री मोरारजी देसाई द्वारा इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

श्यामाप्रसाद मुखर्जी फाउण्डेशन सभा में चर्चा करते हुए दीनदयाल जी एवं अन्य लोग

आज पंडित जी लोगों के दिलो-दिमाग में जिंदा हैं। उनके विचार आज भी देश को प्रगति के मार्ग पर ले जा रहे हैं और यह उनकी ही देन है कि देश में लोकतंत्र का मतलब सबके लिए एक समान है। विरासत के तौर पर उनकी याद में कई संस्थानों, विश्वविद्यालयों, अस्पतालों का निर्माण किया गया।

परमब्रम्ह में विलीन होने के बाद भी पंडित जी अपनी लेखनी, ज्ञान, शिक्षा और उच्च विचारों से आज भी हमारे बीच लोकप्रिय हैं। ऐसे महान व्यक्तित्व को हम शत-शत नमन करते हैं!

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ !

मंजीत सिंह
फिटर

वह घर की जान है,
घरवालों का मान है,
उसे प्यार से सर आँखों पर बैठाओ,
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

वह पूरे गाँव की शान है,
गाँव की खुशहाली का प्रमाण है
उसकी नादानियों पर उसे समझाओ,
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

वह पूरे शहर का सम्मान है,
शहरवालों की प्रगति का परिणाम है,
उसकी काबिलियत की शक्ति उसे दिखाओ,
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

वह पूरे राष्ट्र का है अभिमान,
देश कर रहा है जिसे प्रणाम,
उसकी कामयाबी पर उसे सराहो,
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

निंदक नियरे राखिए

जसबिंदर सिंह
उप्र (वाणिज्य - पू ख)

इटली सदा से कलाकारों का देश रहा है। वहां के कलाकारों ने दुनिया को देखने की नई दृष्टि भी दी है। एक समय की बात है। इटली में डोनाटेली नामक एक शिल्पकार रहता था। डोनाटेली मूल रूप से फ्लोरेन्स शहर का रहने वाला था। अपनी कला से उसने कलाप्रेमियों के बीच खूब नाम कमाया। उसकी बनाई मूर्तियाँ भी ऐसे होती थीं कि मानो अभी बोल पड़ेंगी। जो भी उसकी बनाई मूर्तियाँ देखता, बस देखता ही रह जाता। इसी बीच कुछ समय के लिए डोनाटेली इटली के ही पीसा शहर में रहने चला गया। वहां भी उसने एक से बढ़कर एक मूर्तियाँ बनाई और खूब प्रशंसा बटोरी। एक समय तो ऐसा आया कि सारा शहर उसका प्रशंसक हो गया था। पीसा के हर चौराहे और भवन के बाहर उसकी शिल्पकला के दर्शन होते थे। सबकुछ ठीक चल रह था कि एक दिन अचानक ही डोनटोली ने ऐलान कर दिया कि अब वह अपनी जन्मभूमि फ्लोरेंस वापस जाना चाहता है और जीवन का बाकी समय भी वहीं गुजारेगा। इससे उसके प्रशंसकों में शोक की लहर फैल गई। जाने से पहले एक दिन उसके प्रशंसक उनसे मिलने आए। उन्हीं में से एक प्रशंसक ने पूछा, 'महोदय, आप वहां क्यों जा रहे हैं? क्या हम लोग आपको पर्याप्त सम्मान नहीं दे पा रहे हैं?" तब शिल्पकार ने जवाब दिया- 'नहीं भाई, ऐसी कोई बात नहीं। आपके प्रेम से मैं अभिभूत हूँ। मगर यहाँ सब मेरी प्रशंसा में ही लगे रहते हैं, जिससे मुझे लगता है कि मैं कहीं घमंड में जल्द ही अपनी कला को ही न भूल जाऊँ। दूसरी ओर मेरे शहर के लोग निष्ठुरता के साथ मेरी आलोचना करते हैं और मेरे कम में हरदम खोट ही निकलते रहते हैं, जिसकी बजह से मुझे अपनी कला को निखारने और कठोर परिश्रम करने की प्रेरणा उत्पन्न होती है। इसलिए मेरा अपने शहर वापस जाना ही श्रेयस्कर है।"

विश्व की कुछ रोचक जानकारियाँ

सुधीर दिवेकर
टीआरए

1 लोकतन्त्र प्रणाली की शुरुआत 2500 साल पहले ग्रीक के एथेंस शहर में स्थापित हुई थी। दुनिया का सबसे पुराना लोकतान्त्रिक ढांचा आइसलैंड में है। यहाँ लोकतंत्र 930 ईसवी से चला आ रहा है।

2 मध्यकालीन इतिहास के अन्यत्र सम्पन्न विजयनगर शहर में अब कोई नहीं रहता, यह नगर हम्पी खंडहरों के नाम से प्रसिद्ध है।

3 रोम दुनिया का वह शहर है जिसकी आबादी ने सबसे पहले 10 लाख का आंकड़ा पार किया था।

4 दुनियाभर में पहनी जाने वाली टी-शर्ट पहली बार 1904 में बनी थी।

5 मानव इतिहास में 5000 साल पहले केवल एक रोग होता था - 'चेचक'। चेचक को शीतला, बड़ी माता और स्मोल पोक्स के नाम से भी जाना जाता है।

6 विश्व के सबसे पहले प्राप्त कंकाल का नाम 'लूसी' रखा गया था।

7 प्राचीन रोमन कैलेंडर में जनवरी और फरवरी के महीने नहीं होते थे। अतः उनका नव वर्ष 1 मार्च को मनाया जाता था।

8 रोम के तानाशाह जूलियस सीज़र ने 45 ईसापूर्व में जब जूलियन कैलेंडर की स्थापना की, उस समय विश्व में पहली बार 1 जनवरी को नए साल का उत्सव मनाया गया था।

9 1811 में एक जबरदस्त भूचाल के कारण उत्तरी अमेरिका की मिसीसिपी नाम की नदी उल्टी दिशा में बहने लगी थी।

10 मिस्त्र में कुल 138 पिरामिड हैं लेकिन इनमें से गिजा का सिर्फ एक विशालकाय पिरामिड ही विश्व के सात आश्चर्य की सूची में है।

11 अब तक का सबसे पहला ज्ञात खून का ट्रांसफर 1667 में हुआ था, जब जीन बप्तिस्टे ने दो पिंट्स (गैलन का आठवा भाग / 0.47 लीटर) खून एक भेड़ से एक नौजवान आदमी को ट्रांसफर किया।

12 1883 में क्राकाटा में हुए एक विस्फोट से इतनी ज्यादा ध्वनि पैदा हुई थी कि यह 3, 000 मील (4800 किलोमीटर)दूर तक सुनाई दी थी। यह इतिहास में दर्ज अब तक की सबसे 'ज्यादा ध्वनि' है।

पहेलियाँ

रिज़वान बसरी
ओएस

(1)

चार अक्षर का मेरा नाम,
टिमटिम तारे बनाना काम,
शादी, उत्सव या त्योहार,
सब जलाएँ बार-बार।

उत्तर - फुलझड़ी

(2)

आदि कटे तो गीत सुनाऊँ
मध्य कटे तो संत बन जाऊँ
अंत कटे साथी बन जाता
संपूर्ण सबके मन भाता

उत्तर - संगीत

(3)

मुझे उलट कर देखो,
लगता हूँ मैं नौ जवान,
कोई अलग न रहता मुझसे,
बच्चा, बूढ़ा और जवान ?

उत्तर - वायु

(4)

सरपट लगा हरा झंडा,
कितना मीठा और रसीला ?

उत्तर - गन्ना

(5)

सफेद तन हरी पूंछ,
न बुझे तो नानी से पूछ ?

उत्तर - मूली

(6)

तुम न बुलाओ मैं आ जाऊँगी,
न भाड़ा न किराया दूँगी,
घर के हर कमरे में रहूँगी,
पकड़ न मुझको तुम पाओगे,
मेरे बिन तुम न रह पाओगे,
बताओ मैं कौन हूँ ?

उत्तर - हवा

(7)

गर्मी में तुम मुझको खाते,
मुझको पीना हरदम चाहते,
मुझसे प्यार बहुत करते हो,
पर भाप बनूँ तो डरते भी हो।

उत्तर - पानी

(8)

मुझमें भार सदा ही रहता,
जगह घेरना मुझको आता,
हर वस्तु से गहरा रिश्ता,
हर जगह मैं पाया जाता

उत्तर - गैस

(9)

गर्मी में जिससे घबराते, जाड़े में हम उसको खाते।
उससे है हर चीज चमकती, दुनिया भी है खूब दमकती।।

उत्तर - धूप

शंकरदास केसरीलाल ‘शैलेन्द्र’

तपन मंडल
प्र (न्हावा यार्ड)

हिन्दी फिल्मों के प्रसिद्ध गीतकार श्री शंकरदास केसरीलाल ‘शैलेन्द्र’ का जन्म 30 अगस्त, 1923 को रावलपिंडी में हुआ था। शैलेन्द्र के पिताजी ब्रिटिश फौज में थे और बिहार के रहने वाले थे। पिता के रिटायर होने पर परिवार मथुरा में आकर बस गये और शैलेन्द्र ने वहाँ प्राथमिक शिक्षा प्राप्त किया। घर में ही उनको उर्दू और फ़ारसी की शिक्षा प्राप्त हुई लेकिन शैलेन्द्र की रुचि घर के लोगों से कुछ भिन्न थी। हाईस्कूल के बाद ही वह राष्ट्रीय विचारधारा से प्रभावित हुए। सन् 1942 में शैलेन्द्र बम्बई रेलवे में इंजीनियरिंग सीखने गये। नौकरी के दौरान पढ़ाई-लिखाई के इस क्रम में उनका कविता का शौक़ बना रहा।

शैलेन्द्र के सभी भाई रेलवे में ही कार्यरत थे। बड़े भाई बी. डी. राव, शैलेन्द्र को पढ़ा-लिखा रहे थे। सन् 1939 में मथुरा के ‘राजकीय इंटर कॉलेज’ से हाईस्कूल में शैलेन्द्र ने पूरे उत्तर प्रदेश में तीसरा स्थान प्राप्त किया। तब उनकी उम्र 16 साल थी। शैलेन्द्रको गाने और कविता का शौक बचपन से ही था और स्कूल और कालेज में इनको इसका प्रोत्साहन मिला। वहाँ के. आर. इंटर कॉलेज में आयोजित अंताक्षरी प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे और खूब ईनाम जीतते थे। शैलेन्द्र ने रेलवे वर्कशाप में नौकरी कर ली। कुछ दिन मथुरा में बिताने के बाद शैलेन्द्र का तबादला माटुंगा रेलवे कार्यशाला, मुंबई हो गया।

अगस्त सन् 1947 में श्री राजकपूर एक कवि सम्मेलन में शैलेन्द्र को पढ़ते देखकर प्रभावित हुए। और फिल्म ‘आग’ में लिखने के लिए आग्रह किया किन्तु शैलेन्द्र को फिल्मी लोगों से घृणा थी। सन् 1948 में शैलेन्द्र की शादी के बाद कम आमदनी से घर चलाना मुश्किल हो गया। इसलिए वह राजकपूर के पास गये। उन दिनों राजकपूर बरसात फिल्म की तैयारी में जुटे थे। तय वक्त पर शैलेन्द्र राजकपूर से मिलने घर से निकले तो घनघोर बारिश होने लगी। क़दम बढ़ाते और भीगते शैलेन्द्र के होंठों पर ‘बरसात में तुम से मिले हम सनम’ गीत ने अनायास ही जन्म ले लिया। अपनी ओर से दस गीत सौंपने से पहले शैलेन्द्र ने इस नए गीत को राजकपूर को सुनाया। खुश होकर राजकपूर ने शैलेन्द्र को सीने से लगा लिया। दसों गीतों के लिए पचास हज़ार रुपये पारिश्रमिक उन्होंने शैलेन्द्र को दिया। नया गीत बरसात का टाइटिल गीत बना। उनके लिखे गीत चले, फिर क्या था, उसके बाद शैलेन्द्र ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

‘होठों पर सच्चाई रहती है, दिल में सफाई रहती है’, ‘मेरा जूता है जापानी’, ‘आज फिर जीने की तमन्ना है’ जैसे दर्जनों यादगार फिल्मी गीतों

के जनक शैलेंद्र ने महान अभिनेता और फिल्म निर्माता राजकपूर के साथ अनेकों फिल्मों में काम किया।

सरल और सटीक शब्दों में भावनाओं और संवेदनाओं को अभिव्यक्त कर देना शैलेन्द्र की विशेषता थी। 'किसी के आँसुओं में मुस्कुराने' जैसा विचार केवल शैलेन्द्र जैसे गीतकार के संवेदनशील ह्रदय में ही आ सकता है। उनकी संवेदना का एक उदाहरण देखिये -

"कल तेरे सपने पराये भी होंगे, लेकिन झलक मेरी आँखों में होगी

फूलों की डोली में होगी तू रुख़सत, लेकिन महक मेरी साँसों में होगी..."

शायद कभी प्यार की राह में कभी ऐसे गिरे रहे होंगे वे कि फिर कभी संभल नहीं पाये। इसीलिये वे लिखते हैं-

"सहज है सीधी राह पे चलना, देख के उलझन, बच के निकलना

कोई यह चाहे माने न माने, बहुत है मुश्किल गिर के संभलना..."

फिल्मों में गीत लिखने के पहले देश के आजादी की लड़ाई में योगदान देने का उनका एक अलग ही तरीका रहा है। वे उस समय देशभक्ति से सराबोर वीररस की कविताएँ लिखा करते थे और उन्हें जोशोखरोश के साथ सुनाकर सुनने वालों को देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत कर दिया करते थे। परिणामस्वरूप देश के आजादी के वीरों का बहुत अधिक उत्साहवर्धन होता था। उनकी रचना 'जलता है पंजाब...' ने उन दिनों बहुत प्रसिद्धि पाई। फिल्मों में आने के बाद भी उनका यह जज़्बा बना ही रहा इसीलिए वे ग़रीब भारतीय की अभिव्यक्ति इन शब्दों में करते हैं -

निर्माता-निर्देशक राजकपूर के साथ अपने गाने के बोल पर विचार करते हुए शैलेन्द्र

"मेरा जूता है जापानी, यह पतलून इंग्लिस्तानी

सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी..."

एक हिंदुस्तानी स्त्री की भावनाओं का उन्होंने अत्यंत सुंदर चित्रण अपने इस गीत में किया है-

"तन सौंप दिया, मन सौंप दिया, कुछ और तो मेरे पास नहीं

जो तुम से है मेरे हमदम, भगवान से भी वो आस नहीं..."

शैलेन्द्र को तीन बार सर्वश्रेष्ठ गीतकार का फिल्मफ़ेयर पुरस्कार मिला था, जिसमें सन् 1958 में 'ये मेरा दीवानापन है...' (फिल्म - यहूदी), 1959 में 'सब कुछ सीखा हमने...' (फिल्म - अनाड़ी), 1968 में और 'मै गाऊं तुम सो जाओ...' (फिल्म - ब्रह्मचारी) का गीत शामिल है।

शैलेंद्र के प्रसिद्ध गीत

क्रम	गीत	फिल्म नाम
1	आवारा हूँ	आवारा
2	रमैया वस्तावैया	श्री 420
3	दिल के झरोखे में तुझको बिठा कर	ब्रह्मचारी
4	मुड़-मुड़ के ना देख मुड़-मुड़ के	श्री 420
5	मेरा जूता है जापानी	श्री 420

6	आज फिर जीने की	गाईड
7	गाता रहे मेरा दिल	गाईड
8	पिया तोसे नैना लागे रे	गाईड
9	खोया खोया चांद	काला बाज़ार
10	हर दिल जो प्यार करेगा	संगम
11	दोस्त दोस्त ना रहा	संगम
12	सब कुछ सीखा हमने	अनाड़ी
13	किसी की मुस्कराहटों पे	अनाड़ी
14	दिल की नज़र से	अनाड़ी
15	अजीब दास्तां है ये, कहाँ शुरू कहा खतम	दिल अपना और प्रीत परायी

फिल्मी माहौल में रहते हुए शैलेंद्र को फिल्म निर्माता बनने का शौक लग गया। उन्होने राजकपूर अभिनीत 'तीसरी कसम' फिल्म का निर्माण किया था। दरअसल, शैलेन्द्र को फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' बहुत पसंद आई। उन्होंने गीतकार के साथ निर्माता बनना ठान लिया। राजकपूर और वहीदा रहमान को लेकर 'तीसरी कसम' बना डाली। खुद की सारी दौलत और मित्रों से उधार की भारी रकम फिल्म पर झोंक दी लेकिन फिल्म डूब गई। कर्ज़ से लदकर शैलेन्द्र बीमार हो गए। यह 1966 की बात है। वह अस्पताल में भरती हुए। तब वह 'जाने कहां गए वो दिन, कहते थे तेरी याद में, नजरों को हम बिछायेंगे' गीत की रचना में लगे थे। शैलेन्द्र ने राजकपूर से मिलने की इच्छा ज़ाहिर की। वह बीमारी की हालत में आर. के. स्टूडियो की ओर चल दिए लेकिन रास्ते में उन्होंने दम तोड़ दिया। 14 दिसंबर 1966 का दिन था। ताज्जुब की बात है कि उसी दिन राजकपूर का जन्म हुआ था। शैलेन्द्र को नहीं मालूम था कि मौत के बाद उनकी फिल्म हिट होगी और उसे पुरस्कार मिलेगा।

शैलेन्द्र, रफी और शंकर के साथ गीत के बोल पर चर्चा करते हुए

काल के गाल में एक दिन जाना तो सभी को होता है पर शैलेन्द्र जैसे गीतकार के चले जाने से भारतीय सिनेमा में आया ख़ालीपन कभी भी न भर पायेगा। यह जानते हुये भी कि उनके लिखे इन शब्दों का सच होना असंभव है, चलिये एक बार दुहरा लेते हैं उनके उन असंभव शब्दों को -

"ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना"

भूटान की अनुपम यात्रा

जयंतिका मुखर्जी
वरिष्ठ राजभाषा अनुवादक

निसर्ग सुषमा से भरी हुई प्राकृतिक सौंदर्य का अभूतपूर्व भंडार भूटान हमारा पड़ोसी देश है। यह सुंदर पहाड़ी प्रदेश प्रकृति की गोद में अपना अनोखापन लिए हुए विद्यमान है। यह भारतीय संस्कृति तथा प्राचीन बौद्ध संस्कृति को अपनाकर भी पाश्चात्य सभ्यता से ओत-प्रोत है। भूटान की खूबसूरती उसके सेबों से लदें हुए पेड़, पारो नदी जो फूंशिलिंग से होते हुए थिम्फू, पारो शहर को छूती हुई शहर के बीचों-बीच बहती है, से सराबोर है। नदी की कलकल ध्वनि, सड़कें और पर्यटकों को लेकर घूमते हुए भूटानी पथ-प्रदर्शक (गाईड) व ड्राइवर पारो व थिम्फू की शोभा बढ़ाते हैं।

भूटान जाने के लिए हमने कोलकाता के हावड़ा से न्यूजलपाईगुड़ी तक रेल आरक्षण किया। आगे की योजना न्यूजलपाईगुड़ी उतरकर करने के बारे में सोचा गया। जैसा सोच वैसी ही व्यवस्था की गई। न्यूजलपाईगुड़ी उतरकर हमने वहाँ से एक टुरिस्ट टॅक्सी की जिसके अनुसार करीब 6 घंटे में हम जयनगर (भारत की अंतिम सीमा में बसा छोटा सा कस्बा) पहुँच गए। यहाँ हमने दोपहर का भोजन किया और भूटान में प्रवेश व्यवस्था से अवगत हुए। भूटान का प्रवेश द्वार फूंशिलिंग है। वहाँ के सरकारी नियम अनुसार भूटान में घूमने के लिए एक किस्म के पास (परिचय पत्र) की आवश्यकता होती है जिसे भूटान सरकार की मंजूरी से बनाया जाता है। इसके लिए 4 पासपोर्ट आकार के फोटो के साथ एक भारतीय पहचान पत्र की आवश्यकता होती है। चूंकि किसी के पास भी फोटो उपलब्ध नहीं था अतः एक दिन फूंशिलिंग में हम पास बनाने के लिए रुक गए। दूसरे दिन पास बनते और सरकारी स्टम्प लगते देर हो गई। यही से हमें आठ घंटे का पहाड़ी सफर थिम्फू के लिए शुरू करनी थी। योजना बनी दिसंबर की ठिठुरती ठंड में थिम्फू में दो दिन और पारो में तीन दिन ठहरा जाए।

फूंशिलिंग से थिम्फू जाने का रास्ता आकर्षक एवं मनमोहक प्रकृतिक सौन्दर्य से भरा हुआ है। आकाश की छूती ऊंची-ऊंची पहाड़ियाँ, सर्पीली गति से जाती हुई सड़कें, और नीचे कलकल बहती हुई 'पारीचू' पारो नदी मन को आवेशयुक्त कर देते हैं। हिमालय की चोटियों पर जमी बर्फ उस पर पड़ती सूर्य की किरणें सफर के आनंद को बढ़ा देती है। रास्ते के एक ओर गहराती खाई और दूसरी ओर आकाश को छूती पर्वतमालाएँ। बादल की आंखमिचौली अविसश्रांत हमारी गाड़ी के साथ खेला जा रहा था। सफ़ेद रुई चादर जैसे बादल अक्सर हमारे गाड़ी को एक कुहासे की तरह ढक लेते थे। कभी बादल हमारी गाड़ी के आगे हो जाते और तो कभी पीछे। यह खेल चलता रहा और भूटान की राजधानी में आकार ही दम लिया।करीब सात घंटे की लंबी यात्रा के पश्चात हम थिम्फू पहुंचे। भगवान बुद्ध को मानने वाले सीधे-सादे लोग जिन्हें देखकर विस्मृत बौद्ध संस्कृति का कुछ अंदाजा लगाया जा सकता है। बड़े-बड़े होटल, बड़ी-बड़ी दुकानें।

यहाँ के लोग हिन्दी फिल्मों और उससे जुड़े गानों के काफी शौकीन हैं। यहाँ हम होटल जुमांजी में ठहरे। शाम को पहुँचने के बाद हम सब थिम्फू के नौसर्गिक सौंदर्य को निहारने को निकले। ऊंची-

नीची पहाड़ियों के गोद में सिमटा एक साफ-सुथरा शहर। जिसमें सैलानियों की भीड़ दिसंबर महीने में ना के बराबर था। दिसंबर का महिना और ठिठुरती सर्दी की शाम। बाहर रास्ते में कभी-कभी एक-दो आदमी नजर आते थे जो पीठ पर सामान लादकर यहाँ से वहाँ जा रहे थे। रास्ते में कुछ बच्चे बैडमिंटन का आनंद उठा रहे थे। मैंने भी उन बच्चों के आग्रह पर उनसे खेल लिए। भूटानी पर्यटन प्रेमी है। अतिथियों का स्वागत करना उनको बखूबी आता है। यहाँ का मोमो खाने लायक है। छोटे- छोटे चाली के दुकान घर में भले ही आधुनिक रेस्तरां की सुंदरता न हो, लेकिन खाने का स्वाद और ज़ायका का भरपूर आनंद इसमें उठाया जा सकता है। जिस छोटे से दुकान में हम मोमो खाने के लिए गए उसमें बैठने लायक चंद प्लास्टिक की कुर्सी और 3 टेबिल थे। दुकान के मालिक ने हमें देखते ही मुस्कुराकर हाथ बढ़ाकर हमारा स्वागत किया। मेनू कार्ड को एक तरफ करके स्वयं ही बोले - "मेनू देखकर स्वाद का पता नहीं चलेगा। आप लोग सैलानी है, ऐसा मोमो बनाकर आपको खिलाऊँगा कि भूटान का स्वाद आप सब याद रखेंगे"। मोमो आया उसके साथ सूप और ड्राई ब्रेड। स्वाद और महक का ऐसा अद्‌भुत मेल मुझे किसी और मोमो की दुकान में नहीं मिला। खाना खत्म करके उन्होने कॉफी मंगाया और कहा - "सर्दी की शाम में इसका जबाव नहीं"। हमारे लाख बोलने पर भी दुकानदार ने मोमो का दाम तो लिया पर कॉफी का दाम नहीं लिया और कहा- "भूटानी अपने अतिथि का स्वागत करना जानते है, पैसा देकर हमारे अतिथ्य का अपमान न करें"। हल्के-फुल्के भ्रमण के बाद हम अपने होटल वापस पहुंचे। यहाँ रात का खाना खाकर हमने अगले दिन भूटान की राजधानी 'थिम्फू' के भ्रमण की योजना बनाई।

चूंकि भूटान मूलतः बौद्ध संस्कृति और धर्म की जगह है अतः यहाँ के बौद्ध मठ और स्तूप देखने को मिलता है। यहाँ का बौद्ध संग्रहालय अद्‌भुत सुंदर और प्राचीन ग्रन्थों का जमघर है। पाली लिपि में लिखी गई यह ग्रंथ बुद्ध से जुड़ी हुई है और बौद्ध संस्कृति और धर्म का सुंदर निदर्शन है।

दूसरे दिन प्रातःकाल के चाय के तुरंत बाद ही थिम्फू के कुछ दर्शनीय स्थल देखने को तैयार हो गए। इनमें बौद्ध मठ, चिड़ियाघर, हवाई अड्डा, भूटान के राजा का भव्य महल शामिल था। यहाँ का 'फोकहेरिटेज मियूजियम' (फेल्चे टोएनल्च्यिम) देखने योग्य स्थान है। भूटान के राजमहल में आम जनता और पर्यटकों का प्रवेश माना है। अतः हमने दूर पहाड़ी की चोटी से उस महल को देखा। तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री (स्व इन्दिरा गांधी) द्वारा उद्‌घाटित भारतीय दूतावास, बौद्ध स्थापत्य शैली का सुंदर संरक्षित म्यूजियम सभी देखने योग्य हैं। हमने दोचूला पास देखने का मन बनाया। दोचूला पास थिम्फू से पुनखा के रास्ते पर 25 किमी दूर स्थित है। यहाँ पर बौद्ध मंदिर और 108 स्तूपों का समूह है। समुद्रतल से इसकी ऊंचाई 3,020 मी है। बर्फीली हवा और ठंड में ठिठुरते हमने इस रोमांचक यात्रा को पूरा किया।

दो दिन थिम्फू में रहने के पश्चात हम पारो पहुंचे। थिम्फू से पारो की दूरी करीब 2 घंटे की थी। पारो शहर का नाम भूटान की नदी पारो पर रखा गया है। स्थानीय भाषा में इस नदी को 'पारीचू' कहते है। इस पूरे सफर के दौरान केवल सेब के बगीचों की भरमार मिली। लाल-लाल सेब से लदे हुए पेड़ रास्ते के दोनों ओर की सुंदरता को इस कदर निखार रहे थे मानों किसी लाल गलीचे के बने रास्ते से होकर गुजर रहे हों। पारो पहुँचकर हमारा ठिठुरना बढ़ गया। इसकी ऊंचाई समुद्र तल से करीब 2,595 मी. है। जबकि थिम्फू का इतना 2,324 मी. था। पारो में प्राकृतिक सुंदरता अपने चरम पर है। पहाड़ के दमन में फैला यह छोटा का शहर अपनी प्राकृतिक सुंदरता में निखरी-निखरी लगती है। यहाँ पारो नदी की सुंदरता देखते बनती है। नदी के दोनों तटों पर मुलायम पत्थर, और सफेद रेत में पड़ती सूर्य की चमकती किरणें नदी की कलकलता में स्निग्धता बढ़ा देती है। पानी का रंग इतना स्वच्छ है कि पानी के नीचे पड़े वस्तुएँ साफ दिखाई देती है। ऊंचे-ऊंचे शाल और फर्र के पेड़ जो अति शीत में सूख गए हैं, अपनी लंबी काया लेकर मानों आकाश को छूते हैं। शहर की निस्तब्धता एवं सहज प्राकृतिक सुंदरता ने मन सहज ही खो जाता है। रात में अनगिनत तारों भरा आकाश, ऊंची-ऊंची चोटियाँ, सड़क के दोनों ओर सेब का बागान पारो की सहजात सुंदरता है। पारो को छोड़ने का हमारा मन कतई नहीं था। फिर भी उस मुग्ध प्रकृति की गोद से निकलकर, एक बार फिर वापस जाने के लिए हम शहर के शोरगुल में खो गए।

पारो घाटी में 1646 में निर्मित द्‌जोंग (किला)

स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं पर्यावरण (एचएससी)

डॉ साधना कोळी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी

हम हमेशा विविध बिमारीयों के बारे में चर्चा या लेखन करते हैं जैसे कि रक्तचाप, मधुमेह, हार्ट की बिमारियाँ लेकिन इस बार उससे भी बढ़कर अहम विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी इस लेख के द्वारा दे देने की कोशिश करूंगी। आशा करती हूँ कि इस लेख द्वारा आपकी बहुतसी शंका का निस्तारण हो जायेगा। स्वास्थ्य, सुरक्षा पर्यावरण विषयपर कर्मचारियों को जागरूक करने की जरूरत है। निरीक्षण पर यह पाया गया है कि कर्मचारियों को इस विषय मे जानकारी बहुत कम है।

अपने माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में एचएसई की नीति है। यह नीति प्रत्येक विभाग, शॉप, वर्कशॉप में उपलब्ध है।

एचएसई नीति के अनुसार हम यह घोषित करते हैं कि

1) प्रदूषण रोकना और नियंत्रित करना तथा इकोफ्रेंडली वातावरण कायम करना।
2) कचरे की रिसायकलिंग करके पुनः उपयोग में लाना।
3) अपने कर्मचारियों, ग्राहकों और ठेकेदारों और आगंतुकों को एचएसई के बारे में जागरूक करना और संगठित करना।
4) कर्मचारी सप्लायर्स आदि को प्रदूषण रहित वातवरण तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करना।
5) अपने कर्मचारियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा का ख्याल करना, प्राणी के जीवन की मूलभूत जरूरत है रोटी, कपड़ा और मकान। वैसे ही स्वास्थ्य सुरक्षा, और पर्यावरण भी जीवन के मूलभूत अंग हैं।

स्वास्थ्यपूर्ण जीवन, सुरक्षा संबंधी सतर्कता और पर्यावरण के प्रति सावधानी यह हर नागरिक की ज़िम्मेदारी है। माझगांव डॉक कर्मचारियों की इस ज़िम्मेदारी है कि वे यह एचएसई नीति पढें और आचरण में लाये।

अ) स्वास्थ्य

स्वस्थ्यपूर्ण जीवन के लिए माडॉलि का व्यवस्थापन अपने कर्मचारियों का पूरा ख्याल रखता है।

1) वार्षिक चिकित्सा जांच

- फैक्टरी अधिनियम 18 - A MFR के अंतर्गत कर्मचारियों की सर्टिफाइंग सर्जन द्वारा वार्षिक चिकित्सा जांच की जाती है।
- यह सर्टिफ़ाईग सर्जन सरकार द्वारा अधिकृत होता है।
- यहा जांच में खून लीव्हर, किडनी, शुगर का पूर्ण रूप से टेस्ट किया जाता हैं।
- पेशाब में शुगर, अल्बूमिन की मात्रा, इंफेक्शन आदि पाया जाता है तो आगे उपचार के लिए निर्देश दिया जाता है।
- ईसीजी, एक्स रे, कान की (ओडियोमीटर) फेफड़ों की पीएफटी, आँखों के विजन की जाँच होती है। यहाँ सभी जाँच अपने कार्यक्षेत्र में की जाती हैं। जाँच पूर्ण होने पर सर्टिफ़ाइंग सर्जन द्वारा फिटनेस सर्टिफिकेट दिया जाता है।
- जिनके रिपोर्ट मे कुछ असमानताएं पायी जाती हैं उनको मेडिकल विभाग में परामर्श किया जाता है। उनको बीमारियों के बारे में सतर्क रहने की सलाह एवं दवाइयाँ दी जाती हैं।

2) नियोजन पूर्व जांच

माडॉलि के नए भर्ती प्रत्येक कर्मचारी की जाँच होती है। इसमें अप्रेंटीस, दो वर्षीय अनुबंधित नए अधिकारी गण आदि शामिल होते हैं।

3) चिकित्सा विभाग द्वारा नियमित रूप से अनेक जागरुकता कार्यक्रम, स्वास्थ्य परिचर्या चिकित्सा शिविर इत्यादि का आयोजन होता है जिसमें पैनल हॉस्पिटल द्वारा विशेषज्ञ सलाहकारों द्वारा महत्वपूर्ण जानकारियां दी जाती हैं।

4) चिकित्सा विभाग द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन

डाइबीटीज़ हार्ट कॅम्पस - आर्गन दान शिविर - सीपीआर आयोजित करते हैं। महिला कर्मचारियों के लिए कैंसर जागरुकता शिविर, बोन डेन्सीटी, विविध स्वास्थ्य परिचर्या का आयोजन होता है। अनेक कर्मचारी इसका लाभ उठाते हैं।

माझगांव डॉक व्यवस्थापन अपने कर्मचारियों के अलावा उनके आश्रित परिवार सदस्यों के स्वास्थ्य की भी देखभाल करते है। पैनल हॉस्पिटल द्वारा सामान्य तथा गंभीर रोगों के लिए भर्ती करने की सुविधा है। मुंबई के जाने माने अस्पताल माडॉलि के पैनल पर हैं।

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल आश्रितों की वार्षिक जाँच तथा अस्पताल में भर्ती करने की सुविधा उनके तथा आश्रितों के लिए व्यस्थापन करती है। सुरक्षा कार्मिकों को डिस्पेन्सरी से अनेक दवाइयाँ मिलती हैं।

गंभीर रूप से घायल कर्मचारियों को प्राथमिक उपचार देकर तत्काल अस्पताल में जाँच के लिए भेजा जाता है।

ब) सुरक्षा

मेडिकल सुविधा के अलावा माझगांव डॉक व्यवस्थापन अपने कर्मचारियों की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी भी लेती है। सुरक्षा उपकरण (निजी सुरक्षा उपकरण) प्रत्येक कर्मचारी को उपलब्ध कराया जाती है। सुरक्षा बूट, गॉगल, हेल्मेट ग्लोव्स सुट्स वेल्डिंग शील्ड, मास्क आदि प्रदान किये जाते हैं तथा सुरक्षा सप्ताह का आयोजन किया जाता है। इसमें स्लोगन, निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जाती हैं। विजेता कर्मचारी को योग्य पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है । विभागीय निदेशकगण अपने अधीन कार्यरत कर्मचारियों को माह का योग्य कर्मचारी पुरस्कार देते हैं। उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशंसा पत्र तक तथा नगद राशि दी जाती है। सुरक्षा के प्रत्येक यार्ड में सभी शॉप में सुरक्षा नियमावली के बोर्ड लगे हैं। सुरक्षा पोस्टर्स एवं स्लोगन हर कार्यशाला मे लगाये गये हैं। सुरक्षा अधिकारी प्रत्येक में सेफ़्टी वैल्यूज, इलेक्ट्रिकल वायर्स चेन्स, पल आइज़ एक्सजास्ट फैन, इलुमिनेशन वेंटीलेशन आदि की जाँच करते हैं।

नियमित सेफ़्टी मीटिंग द्वारा सतर्कता, जागरुकता और सुधार लाने की कोशिश जारी है। कार्य में सुधार लाने के लिए अधिकारी एवम कर्मचारियों को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भेजा जाता है। जिससे कार्य में सुधार लाया जाता है। अग्निशमन विभाग द्वारा नियमित रूप से फायर मोक ड्रिल का आयोजन किया जाता है।

स) पर्यावरण

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 की धारा 6, 8, 25 में पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा 20/07/1998 को अधिसूचना में पर्यावरण के लिए जारी की गई है।

पर्यावरण में स्वच्छ रखने की ज़िम्मेदारी हर कर्मचारी की है। स्वच्छता अपने दफ्तर, शॉप, डिपार्टमेंट में घर से शुरू होती है। समय - समय पर स्वच्छता अभियान के जरिए माडॉलि, तथा आस पड़ोस का परिसर साफ किया जाता है। स्वच्छता अभियान में माझगांव डॉक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक अधिकारी वर्ग, कर्मचारी वर्ग नियमित रूप से शामिल होते हैं। माडॉलि में हर जगह पर टायलेट्स और स्वच्छ पानी पीने की व्यवस्था है। स्वच्छता के अलावा पर्यावरण के अन्य चीजों की ज़िम्मेदारी की जाती है जैसे कि -

i) कागज का सही मात्रा में इस्तेमाल, रफ पेपर्स का पुनः इस्तेमाल (पेपर की बचत)
ii) ऑफिस के फैन्स, लाइट्स, एसीज जरूरत न होने पर बंद रखकर बिजली की बचत करना
iii) पानी का बचत करने के लिए समुचित उपयोग करना.
iv) बायोमेडिकल वेस्ट, सूखा और गीला कचरा अलग-अलग बैगों में जमा करना। इस लेख द्वारा यह सन्देश देना चाहती हूँ कि स्वास्थ्य, सुरक्षा, पर्यावरण की देखभाल किसी एक की नहीं बल्कि प्रत्येक की ज़िम्मेदारी है।

हम यह शपथ लेते हैं कि एचएसई नीति का नियमित रूप से पालन करेंगे और अपने यार्ड को खुशहाली, दुघर्टना रहित, और उन्नति की ओर ले जायेंगे।

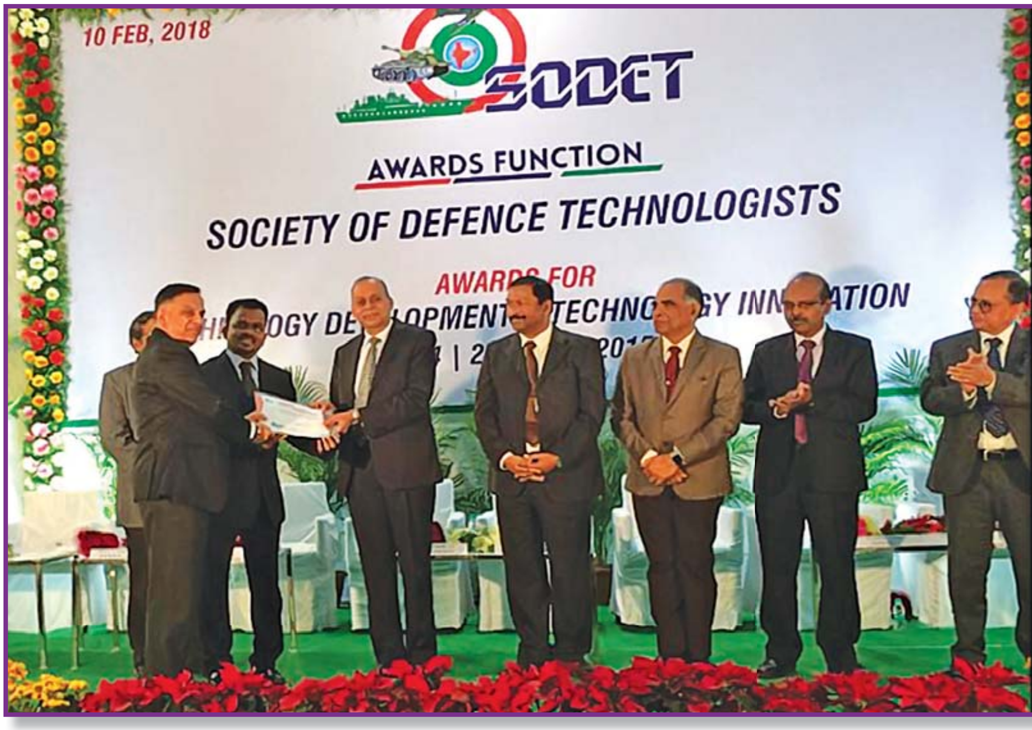

10 फरवरी '18 को अजय कुमार, आईएएस सचिव (रक्षा उत्पादन) से एसओडीईटी पुरस्कार ग्रहण करते हुए सीएमडी कमोडोर राकेश आनन्द

मेक इन इंडिया में महत्वपूर्व भूमिका निभाने के लिए एमडीएल को 5वां पीएसयू पुरस्कार ग्रहण करते हुए कमोडोर डॉ जे एम जांगीर

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड
राष्ट्र के पोत निर्माता

Skill India
कौशल भारत - कुशल भारत

Digital India
Power To Empower

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर